
चा सिंह जी मंहाराज
वन चरित्र
'वियोगी'



जीवन चरित्र

श्री १०८ श्री महन्त पण्डित स्वामी सुच्चा सिंह जी महाराज

'वियोगी'

विद्यावारिधि परमादरणीय पूज्य गुरु जी

को सादर समर्पित

सन्त ज्ञान सिंह

२२/४/८६

जीवन चरित्र

श्री १०८ श्री महन्त पण्डित स्वामी सुच्चा सिंह जी महाराज

लेखक

महन्त बलवीर सिंह "वियोगी"

संपादक

सन्त ज्ञान सिंह शास्त्री

प्रकाशक

सन्त ज्ञान सिंह शास्त्री

मुकामी महन्त

श्री निर्मल पंचायती अखाड़ा

सती चौतरा, हड़हा वाराणसी

महाकुंभ पर्व हरिद्वार

अप्रैल : १९८६

प्रथम संस्करण

भेंट--पचास रुपये मात्र

मुद्रक

जोवन शिक्षा मुद्रणालय (प्रा०) लि०

गोलघर, वाराणसी-२२१००१

श्रद्धाञ्जली

श्री अकाल तख्त साहिब की ओर से जत्थेदार ज्ञानी कृपाल सिंह जी

श्रीमान् पं० संत सुच्चा सिंह जी महन्त श्री निर्मल पंचायती अखाड़ा कनखल आज शारीरिक रूप से हमलोगों से दूर हो गये हैं। आप इस समय पंथ की महान् शखसियत थे। जहाँ आप उच्च विद्वान थे वहीं स्वभाव के सरल, गंभीर तथा नम्रता से पुञ्ज थे।

जीवन भर श्री निर्मल पंचायती अखाड़ा द्वारा भारतवर्ष के तीर्थों, धामों, गुरु-स्थानों एवं डेरों में पहुँच कर गुरुमत का प्रचार करते रहे। जहाँ हर भेष के साधु आपका पूर्ण सम्मान करते थे, वहीं आप भी हर साधु का सम्पूर्ण सत्कार करते थे।

सन्त ज्ञानी गुरुबचन सिंह जी खालसा के प्यार के कारण ही पूरे ५० वर्षों उपरान्त उनके दशहरे पर आप अपने जन्म नगर भिंडर कलाँ आये थे। आपका जीवन दूसरों के लिए आदर्श एवं प्रेरणा का स्रोत था। आपकी याद हम लोगों को कभी नहीं भूलेगी।

मेरी गुरु चरणों में यही प्रार्थना है कि सतिगुरु आपको अपने चरणों में निवास दें तथा पीछे निर्मल सम्प्रदाय, खालसा पंथ तथा प्रेमियों को भाणा मानने की शक्ति प्रदान करें।



श्रीमान् पं० स्वामी बलवीर सिंह जी शास्त्री
वर्तमान श्री महन्त साहिब

श्री निर्मल पंचायती अखाड़ा कनखल (हरिद्वार)

इस भारत खण्ड में कितने ही मन्त्र-द्रष्टा, ऋषि, महर्षि, मननशील मुनि, गुरु अवतार, तत्त्वदर्शी, ब्रह्मज्ञानी, शान्त चित्त, भजनानन्दी, तपस्वी सन्त महात्मा हुए जिन्होंने

सर्वे भवन्तु सुखिनः सर्वे सन्तु निरामयः
सर्वे भद्राणि पश्यन्तु मा कश्चिद् दुःख भाग्भवेत ।

के पावन आदर्श को जन कल्याणार्थं अनेक प्रकार के साधन तथा मार्ग बतलाए। संसार की शान्ति के लिए श्री गुरु नानक देव जी महाराज का आविर्भाव हुआ। गुरु घर के वेद-व्यास भाई गुरुदास जी के वचनानुसार "मारिआ सिका जगत विच नानक निर्मल पंथ चलाया" आप निर्मल पन्थ अर्थात् निर्मल सम्प्रदाय के आदि प्रवर्तक हुए। इस निर्मल सम्प्रदाय को श्री गुरु गोविंद सिंह जी महाराज का विशेष रूप से आशीर्वाद प्राप्त था। जिनकी असीम कृपा दृष्टि से निर्मल साधु काशी में विद्या अध्ययनार्थ गये और वेद-वेदाङ्ग के प्रकाण्ड विद्वान् बन कर आये।

इसी निर्मल सम्प्रदाय में से मुकुटमणि प्रसिद्ध ठाकुरों की सम्प्रदाय है। जिस में उच्च कोटि के विद्वान् पण्डित, गुरु-घर के टकसाली ज्ञानी, महातपस्वी, महा मण्डलेश्वर, प्रतिष्ठित मठाधीश, महन्त-सन्त हुए हैं। उन्हीं अमूल्य रत्नों की माला में से महातपस्वी तेजस्वी नाम के रसिक स्वामी भगत सिंह जी महाराज पिंडी घेब वाले हुए हैं जिन्होंने "हरि जसु लिखहि बेअंत सोहहि से हथा" के पवित्र आदर्शानुसार श्री गुरु ग्रन्थ साहिब जी की पावन बीड़ें अपने हाथ से लिखी। लाखों मूल मन्त्र-जपुजी साहिब के पाठ-चालीसे, जप-अनुष्ठानों द्वारा कठिन तपस्या की। स्वामी जी ने आयु पर्यन्त भूमि शयन ही किया तथा नमक नहीं खाया। "अल्प आहार सुलप सो निद्रा" की अवस्था के अनुसार उच्च आदर्श वाला पवित्र जीवन व्यतीत किया।

सन्तों की महिमा श्रवण कर निर्मल भेष शिरोमणि श्री महन्त पं० स्वामी सुच्चा सिह जो महाराज के मन में स्वामो जी के दर्शन करने की उत्कट इच्छा पैदा हुई।

"मन वैराग भया दर्शन देखने का चाउ"

जैसे मृग शब्द श्रवणार्थ दौड़ता है। चात्रिक स्वाति बूंद के लिए बादल की ओर उड़ता है। चकोर चन्द्र दर्शन के लिए उतावला रहता है एवं चकवी सूर्य दर्शन के लिए उत्सुक रहती है, उसी तरह आप श्री गोइंदवाल साहिब "बाउली साहिब" में स्नानार्थ गये। श्रेष्ठ सत्पुरुषों की संगत के शुभ संस्कार मानव के हृदय में सदा पड़े रहते हैं। यथा—

"पहलो दे जड़ अंदर जमै ता उपर होवै छाउ"

जब जीव के पूर्व कृत निष्काम कर्म फल देने के लिए तत्पर होते हैं तो किसी वीत राग तपस्वी महापुरुष का मिलाप हुआ करता है। यथा गुरु वाक्य है,

"पूरब करम अंकुर जब प्रगटे भेटिउ पुरख रसिक बैरागी
मिटिउ अंधेर मिलत हरि नानक जनम जनम की सोई जागी।"

आप गोइंदवाल के निकट प्रसिद्ध स्थान "थेह सन्तों का" जो व्यास के तट पर धूंदा गाँव के साथ लगता है। जहाँ अहिंसा के पुजारी स्वामी जी ने तप साधना के अपूर्व बल से अहिंसा की पूर्ण प्रतिष्ठा की, जहाँ पर हिंस्र पशुओं ने भी अपना हिंस्र भाव त्याग दिया। स्वामी जी के आसन पर सर्प इत्यादि स्वतन्त्र विचरण करते थे। महर्षि पतञ्जलि ने सत्य ही लिखा है "अहिंसा प्रतिष्ठायां तत्सन्निधौ तत्त्यागो वैर विरोधः" स्वामी जी की चरण-शरण में पहुँच कर सन्तों के पवित्र दर्शन तथा शुभ उपदेश श्रवण कर

मनसा धार जो घरते आवै।
साध संग जनम मरण मिटावै॥
प्रभु अविनाशी घरमहि पाया।
दरसन भेटत होत निहाल॥

इत्यादि गुरु कथनों के अनुसार सफल जीवन तथा कृतार्थ हो गये। स्वामी जी से विधिपूर्वक दीक्षा ग्रहण कर शिष्य हो गये तथा गुरु सेवा-सुमिरन में तत्पर रहने लगे।

कुछ काल गुरु सेवा में रहने के पश्चात् गुरु आज्ञा पाकर आप सर्वतन्त्र स्वतन्त्र सकल शास्त्र निष्णात महामण्डलेश्वर स्वामी प्रेम सिंह जी महाराज की मण्डली में

रह संस्कृत पढ़ने लगे। बाल्यावस्था में आपकी कण्ठ करने की शक्ति अद्भुत थी। स्वामी जी के पास कुछ काल पढ़ने के पश्चात् आप विशेष ग्रन्थों के अध्ययन एवं अनुशीलन के लिए काशी चले गये। वहां आपने वेद शास्त्रों का साङ्गोपाङ्ग अध्ययन किया। काशी तथा कलकत्ते की काव्य तीर्थं इत्यादि परीक्षाएँ पास करने पर आप को दीक्षान्त समारोह में विद्या वारिधि की उपाधि से सम्मानित किया गया।

काशी से आप वापस अपने गुरु स्थान सन्तपुरा पिण्डी घेब चले आये। उस क्षेत्र के लोग आपको देवता रूप में मानते थे। आपकी उज्जवल निर्मल कीर्ति चन्द्रमा के प्रकाश की तरह सर्वत्र फैली हुई थी। आपने पिण्डी घेब रह कर लोक कल्याणार्थ तथा आत्म ज्ञान के लिये उपदेश दिये। लाखों ही मूल मन्त्र तथा जपुजी साहिब के पाठ किये एवं चालीसे काटे। डेरे में "हरि कथा कीर्तन सुखदाई", "हरि झिम झिम अमृत वरसदा" के कथनानुसार कथा कीर्तन एवं अखण्ड पाठों के प्रवाह निरन्तर गङ्गाधारा के समान चलते रहते थे। आप प्रातः सायं गुरुवाणी की कथा-कीर्तन श्रवण कर आनन्दित होते थे। "बैकुण्ठ नगर जहाँ सन्त वासा" के अनुसार वह स्थान प्रत्यक्ष बैकुण्ठ बना हुआ था।

एक दिन सभा में एक प्रभु प्रेमी जिज्ञासु ने प्रश्न किया कि महाराज जी! आप हमें बताओ कि जीव कर्म करने में स्वतन्त्र है अथवा परतन्त्र? महाराज जी ने संगत को सम्बोधित करते हुए कहा—

हे प्रभु प्रेमी सज्जनो! यह कर्म दर्शन का विषय देखने में आपात रमणीय अवश्य है, परन्तु यदि सूक्ष्म दृष्टि से विचार किया जाय तो यह अत्यन्त गूढ़-विषय-जटिल तथा गहन तत्त्व है। "गहना कर्मणो गतिः" आप लोग गुरुवाणी के विचार तो प्रतिदिन श्रवण करते हो। अब आपको शास्त्र रीति से सुगमतापूर्वक उदाहरण देकर बतायेंगे।

यह जीवात्मा कर्म करने में स्वतन्त्र है। वृहदारण्यक उपनिषद् में इसके बारे में संशय से रहित जीव की कर्म करने की स्वतन्त्रता का स्पष्टीकरण बहुत ही सुन्दर ढंग से किया है।

यथा :—

"यथा कामो भवति तत्क्रतुर्भवति
यत्क्रतुर्भवति तत्कर्मकुरुते तदभि सम्पद्यते"

मनुष्य विचारों का पुतला है। यह जीव कामना-प्रधान है। जैसी यह इच्छा करता है वैसा सङ्कल्प होता है। सङ्कल्पानुसार ही कर्म करता है। जीव कर्म करने में स्वतन्त्र है। इसकी पुष्टि छांदोग्योपनिषद् ने भी की है। आत्म-ज्ञान की प्राप्ति हो जाने से मनुष्य सर्व स्थान पर स्वतन्त्र विचरण करता है। यह जिस वस्तु की इच्छा करता है वह इसे सङ्कल्प मात्र से प्राप्त हो जाती है। यद्यपि सांसारिक भोगों में प्रारब्ध को तथा मोक्ष में पुरुषार्थ को प्रधान माना है तथापि पुरुषार्थ करने के लिए जीव को विशेष प्रेरणा प्रदान की है। यथा—

"शुभाशुभभ्यां मार्गाभ्यां वहन्ति वासना सरित।
पौरुषेणा प्रयत्नेन योजनीया शुभे पथि।
अशुभेषु समाविष्टं शुभेष्वेवावतारयेत।

वासना रूपी नदी शुभ तथा अशुभ दो मार्गों से वहती है। मनुष्य को चाहिए कि वासना को अशुभ की ओर से रोक कर शुभ मार्ग पर लगाए। अन्त में महाराज जी ने बताया कि जीव कर्म करने में स्वतन्त्र है। कर्म फल प्रदाता ईश्वर है। जीव कर्म फल भोगने में परतन्त्र है। इस प्रकार महाराज जी के सारगर्भित पवित्र विचार श्रवण कर जिज्ञासुओं को परमानन्द हुआ तथा वह संशय रहित हो गये।

आप अपने पूज्य गुरुदेव जी की पुण्य स्मृति में हर वर्ष नये सम्वत् पर पिण्डीघेब में विराट सन्त समागम करवाते थे जो अब तक चल रहा है। उसमें निर्मल, उदासीन, सेवा पन्थो, नामधारो, पन्थ के उच्चकोटि के विद्वान्, ज्ञानी, कथावाचक तथा अनुभवी सन्तों-महन्तों के दर्शन तथा उनसे वेद-शास्त्रों के गूढ़ तत्त्व, गुरुवाणी रहस्य और नाम की महिमा को श्रद्धापूर्वक श्रवण कर प्रेमी जन अपने जीवन को सफल करते थे। इसी के साथ ही गुरु घर के कीर्तन करने वाले, सङ्गीत के विशेष ज्ञाता रागी भाई चान्द और भाई लालू जैसे अपनी-अपनी राग कला का प्रदर्शन कर संगत को मोहित कर देते थे। वहाँ सन्त समागम की अनुपम शोभा सर्वत्र फैली हुई थी। वहाँ पर श्री गुरुनानक देव की जय, गुरु गोविन्द सिंह की जय, स्वामी भगत सिंह की जय इत्यादि नारों से आकाश गूंज उठता था। वहाँ लोग बाहर से आये साधु-सन्तों का हार्दिक स्वागत करते थे।

जन आवन का इही सुआउ
जन कै संग चित्त आवै नाउ

के अनुसार अपना जीवन सफल करते थे।

पाकिस्तान बन जाने से वह सन्त समागम कुछ वर्ष तक हरिद्वार में होता रहा। पुनः महाराज जी के शुभ सङ्कल्प तथा प्रेमी जनों को श्रद्धा एवं परिश्रम से सन्तपुरा माडल टाउन दिल्ली में होने लगा है। इसी तरह दो अन्य सन्त समागम भी सन्तपुरा थेह साहिब जि० अमृतसर तथा सन्त आश्रम मोदी नगर में होते हैं।

श्री निर्मल पंचायती अखाड़े की सेवा

श्री निर्मल पंचायती आखाड़े का जो उत्थान आपने किया है वह अकथनीय है। वर्तमान में आखाड़े का जो रूप एवं प्रतिष्ठा है वह आप ही के त्याग एवं तप का फल है। आपको वयोवृद्ध, ज्ञान वृद्ध, सच्चरित्र मानते हुए षड्दर्शन साधु समाज के अतिरिक्त धार्मिक श्रद्धालु जनता श्रद्धापूर्वक शीश नवाती थी। आप दैवी गुणों के भंडार थे। यद्यपि––

"विचित्र रूपा खलु चित्त वृत्तयः भिन्नरुचिर्हिलोकः"

के कथनानुसार समाज में विभिन्न प्रकार के अदूरदर्शी-ईर्ष्यालु-तुच्छ व्यक्ति विद्यमान थे। परन्तु आपकी उदारता, सहनशीलता सज्जनता के कारण

ना को बैरी नहीं बेगाना
सगल संगि हमको बणिआई।

के पवित्र आदर्शानुसार सभी से समान व्यवहार करते रहे। यथा चन्दन को विभिन्न टुकड़ों में बाँट देने पर भी वह अपनी सुगन्ध नहीं छोड़ता। उसी तरह महापुरुष वृद्ध होने पर भी सत-सन्तोष-दया-धर्म-क्षमा इत्यादि दैवी गुणों को धारण करते हुए तथा सभी प्रकार के विघ्नों का सामना करते हुए अपने पथ से कभी विचलित नहीं होते। आपका हृदय विशाल एवं अगाध था। आपने कितने ही कुम्भ, अर्द्ध कुम्भ-, सूर्य ग्रहण तथा समागम किये। सब जगह आपकी विजय पताकाएँ लहराती रहीं।

"जिह्वा एक अनेक गुण"। आप अनन्त उत्तम गुणों के भंडार थे मेरी लेखनी पूर्णरूपेण आपके गुण गौरव को लिखने में असमर्थ है। आपकी गुरु सेवा, समाज सेवा, विद्या दान इत्यादि महान उपकारों की अमर कीर्ति का मूर्तिमान प्रत्यक्ष उदाहरण आपसे भिन्न और कहीं नहीं मिलेगा। मेरे मन मन्दिर में ऐसा कोई शब्द नहीं जो मैं अपने पूज्य देवता रूप श्री महन्त जी महराज की सेवा में अर्पण कर इस ग्रन्थ में यथोचित स्थान प्राप्त कर सकूं।



एक आदर्शमय जीवन

श्री १०८ ब्रह्मश्रोत्रिय ब्रह्मनिष्ठ पूज्य श्री महन्त पं० स्वामी सुच्चा सिंह जी महाराज सम्बन्धी कुछ कहना, वह सूर्य को दीपक दिखाने तुल्य है।

जैसे कोई पक्षी आकाश को मापना चाह रहा हो तथा कूएं में डुबकी लगाने वाला अथाह समुद्र की थाह पा लेना चाहता हो, जिस तरह वह दोनों महान् आकाश की गमता और अथाह समुद्र का थाह नहीं पा सकते, ठीक उसी तरह किसी महापुरुष के जीवन सम्बन्धी लिखना जीव का अधूरा यत्न है। क्योंकि—

साधु की महिमा वेद न जानहि, तथा
ब्रह्म ज्ञानी को खोजहि महेश्वर।
ब्रह्म ज्ञानी आप परमेश्वर॥

गुरुवाणी का यही फैसला है। परन्तु प्रेमी श्रद्धालु सूर्य के हजारों मील दूर होने पर भी उसको फूल, धूप-दीप, जल अर्पित करके उसकी प्रसन्नता की इच्छा रखता है। ठीक इसी तरह महाराज जी के पुनीत जीवन दृश्यों को लिखने का यत्न किया जा रहा है। आपने अपने जीवन में बहुत लोगों को मन-वाञ्छित फल दिए।

जैसे स० अमृत सिंह जी सब्बरवाल के गृह में ६ बच्चियों का जन्म हो चुका था। पुत्र एक भी नहीं थी। महाराज जी के पास पुत्र रत्न की दान मांगी। उसके गृह में आपके वचनों से पुत्र उत्पन्न हुआ जिसका नाम काका जसवीर सिंह है। इसी तरह उसके साले अंतर सिंह साहनी को पुत्र दान दिया।

इसी तरह आपको ही सर्वसम्मति से समूह निर्मल साधु समाज ने श्री महन्त जैसे उच्च पद पर चुना। यह आपकी महानता का एक उदाहरण है। पुनः आपने इस अखाड़े को बहुत ऊँचा उठाया।

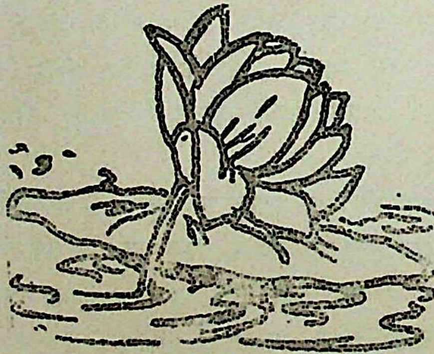
साधुओं तथा गृहस्थों के निवास हेतु सभी तीर्थस्थानों पर सुन्दर मकान तैयार करवाये। विद्यार्थियों के विद्या पढ़ने हेतु विद्यालय का निर्माण करवाया। लंगर चलाए। निर्मल नगर, निर्मल छावनी, निर्मल मार्केट आदि जनता की भलाई हेतु नगर बसाए।

इसी तरह जगह जगह आपने धर्म प्रचार करके साधारण जनता को प्रभु चरणों में लगाया। "ब्रह्मविद् ब्रह्मैव भवति" सिद्धात के अनुसार आपका जीवन ब्रह्मज्ञानी की अवस्था को प्राप्त हो गया था। इस तरह आप अपने जीवन काल में हजारों प्राणियों को प्रभु के मार्ग में लगा कर।

ज्यों जलमहि जल आए खटाना।
त्यों जोति संग जोत समाना॥
मिट गए गवन पाए बिसराम।
कहु नानक जन कै सद काम॥

आप उस परब्रह्म में अभेद हो गए।

महन्त गुरुदीप सिंह जी "दर्शन केसरी"



संतन की सुणि साची साखी
सो बोलहि जो पेखहि आखी

श्री १०८ परम पूज्य निर्मल भेष मुकुटमणि श्री महन्त जी महाराज के पावन दर्शन मैंने सर्व प्रथम १६३२ में अखाड़ा साईं लोक गंज मण्डी रावलपिण्डी में किए थे। उस समय के आपके दर्शन तथा चमत्कार के बारे में कहने के लिए कोई शब्द नहीं है।

"कहु कबीर गूंगे गुड़ खाया पूछे ते क्या कहिए"

आप अपने पूज्य गुरुदेव जी की पावन याद में वार्षिक सन्त समागम करने जब भी हरिद्वारु से पिण्डी घेत्र आते थे तो रावलपिण्डी में अखाड़ा साईं लोक में हीं ठहरते थे। सुबह का भोजन भगत नानक चन्द जी के गृह में होता था।

एक बार की बात है आप सन्त मण्डली सहित रावलपिण्डी डेरे में पहुँच गए। भगन नानक चन्द जी ने आकर दर्शन-पूजनोपरान्त पूछा कि कितने महात्मा का भोजन तैयार करें। उत्तर मिला कि पचीस महात्मा आएँगे। भगत जी के चले जाने के बाद बाहर से और संगत आने लगी। भोजन के समय तक संगत करीब ढाई सौ की गिनती तक पहुँच गई। सारी संगत सन्त मण्डली समेत शब्द पढ़ते हुए भगत नानक चन्द जी के घर पहुच गई। नानक चन्द जी मन में सोचने लगे कि अब क्या करूँ। भोजन तो २५ का ही तैयार किया था यहाँ संगत अधिक आ गई। अब मेरी इज्जत कैसे बचे। आखर चिन्ता करते हुए सारो स्थिति महाराज जी को कही। महाराज जी भगत जी की पीठ पर हाथ फेरते हुए बोले भोजन को सफेद वस्त्रों से ढंक कर श्री गुरु नानक देव जी महाराज के आगे अरदास करके सारी संगत को भोजन कराओ। ऐसा ही किया गया। सारी सन्त मण्डली तथा सङ्गत ने आनन्द से भोजन किया।

जब सन्त मण्डली विदा होकर जाने लगी तो भगत जी महाराज के आगे हाथ बाँध कर रोते हुए बोले कि "महाराज जी! सारा भोजन तो वैसे ही पड़ा हुआ है। आप कृपा करके मुझे उस सन्त के दर्शन कराओ जिसने यह कला दिखाई है।" महाराज जी मुस्कराते हुए सन्त मण्डली की ओर इशारा करते हुए बोले कि यहीं

सभी महात्मा हैं। उस सन्त मण्डली में मेरे पूज्य गुरु देव श्रीमान् महन्त गुरुदित्त सिंह जी, श्रीमान् महन्त हाकम सिंह जी तथा श्रीमान् महन्त दयाल सिंह जी इत्यादि सब महात्मा थे। मैं उस मनोहर दृश्य को आज तक नहीं भूला हूँ। श्री गुरु महाराज जी ने ठीक ही कहा है।

जिना सास गिरास न विसरै हरि नामा मन मंत।
धन से सेई नानका पूरन सोई संत।।

मेरे मन में आपके प्रति जो श्रद्धा रही है, उसे मैं कह नहीं सकता। आपके दर्शन मेरे लिए साक्षात् प्रभु के दर्शन थे।

सन १९४७ में जो देश का बिखराव तथा कत्ले-आम हुआ उसे आप सहन न कर सके, आप बिमार पड़ गए। प्रेमी सन्तों तथा सत्संगियों की ओर से आपके स्वास्थ्य लाभ के लिए १०१ श्री अखण्ड पाठ प्रारम्भ हो गए। हर तीसरे दिन कथा करने की सेवा दास को सौंपी गई। आपकी शारीरिक अवस्था अत्यधिक नर्म हो जाने पर कई महन्त सन्त आपसे अखाड़े की तालियां लेने आए, कई इकट्ठ हुए, परन्तु आप स्थिर रहे अन्त में सभी की हार हुई।

हर परिस्थिति में गुरु महाराज के हजूर बैठकर कई कई घंटे लगातार कथा-कीर्तन श्रवण करते रहना यह आपका बहुत बड़ा तप था। इतने बड़े पद पर रहकर तथा इतने सम्पत्तिशाली होकर भी आप केवल खादी के साधारण वस्त्र पहनते रहे। यह आपका त्याग महान था। गुरु महाराज जी की यह पंक्ति आप पर पूर्ण रूप से सही उतरी–।

मंत्रं राम राम नामं ध्यानं सरबत्र पूरनह।
ज्ञानं सम दुख सुखं जुगति निरमल निरवैरणह।
दयालं सरबत्र जीआ पंच दोख बिवरजतहि।
भोजनं गोपाल कीरतनं अलप माया जल कमल रहतह।
उपदेसं सम मित्र सत्रह भवंत भगति भावनी।
पर निंदा नह स्रोति स्रवणं आपु त्याग सगल रेणुकह।
षट षट लख्यण पूरनं पुरखह नानक नाम साध स्वजनह।

पन्ना—१३५७

श्रीमान् महन्त ज्ञानी जगत सिंह जी (बादशाही बाग अम्बाला शहर)

सदा सुच्चे

परम श्रद्धेय श्री महन्त पं० सुच्चा सिंह जी महाराज से मेरा प्रथम दर्शन-परस त्र्यम्बक के कुंभ पर सन् १९३२ में हुआ था।

आपकी सादगी तथा शुद्ध संकल्पों की सेवा का प्रभाव, निर्मल भेष पर तो पड़ा ही अपितु षड् दर्शन पर भी जिसमें मैं भी हूँ, अत्यन्त पड़ा। आप सदा ऐसे मिलते थे मानो किसी पुराने मित्र से मिल रहे हों। आपका सद् शुभ सेवाभाव निर्मल भेष हृदय में विराज गया था। आपको भेष ने सर्व सम्मति से श्री निर्मल पंचायती अखाड़े के श्री महन्त चुना। आपने अपना जीवन अखाड़े की उन्नति में लगा दिया और अखाड़े की उन्नति पर देश में विख्यात हुए।

वेद-पुराण का ज्ञान प्राप्त कर आपने एक सादा जीवन और जन सेवा में ही न्यौछावर कर दिया। ऐसे सत्पुरुष योगी महात्मा संसार में आकर संसार को शुभ मार्ग दर्शाकर कल्याण करते हैं। सद् मार्ग पर चलने के लिए प्रेरित करते हैं। आपका षड्-दर्शन से प्यार, जनता जनार्दन सेवकों पर सदा आशीर्वाद रहा।

मेरी आप जैसे महात्मा के चरणों में नम्न श्रद्धाञ्जली स्वीकृत होवे।

महन्त फुमन दास श्री पंचैती अखाड़ा बड़ा उदासीन।



युग पुरुष पूज्य महाराज जी

आप पूर्ण ब्रह्मज्ञानी थे। सर्व प्राणिमात्र से आपका समव्यवहार था। आपके नजदीकी होने का मुझे बहुत गौरव है। मेरे पूज्य दादा गुरुदेव रत्न सिंह जी महाराज के ही शिष्य रत्न थे आपके गुरुदेव पूज्य स्वामी भगत सिंह जी महाराज तथा मेरे गुरुदेव महन्त हाकम सिंह जी महाराज। इस कारण आप सदैव हम पर कृपालु रहे।

आप ने अपने एक शताब्दि के जीवन में लाखों प्राणियों को नाम दान देकर कृतार्थ किया। आज यद्यपि आपका शरीर वर्तमान नहीं है, परन्तु आपके उपकार सदा हमारे साथ रहेंगे। आपके गुणगान करने का सामर्थ्य हम कैसे करें ?

रसना एक अनेक गुण पूरन,
जन की केतक उपमा कहीए।

महन्त मञ्जीत सिंह जी अमृतसर

निर्मल भेष भूषण

पूज्य श्री महन्त साहिब जी ने अपने जीवन काल में अनेकों उपकार किये। अखाड़े को आगे बढ़ाया। विद्या जिज्ञासुओं को विद्या प्राप्ति में हर तरह से सहयोग दिया। उन्होंने जो कार्य किये हैं उनसे निर्मल समाज आपका सदा ऋणि रहेगा। आपका नाम निर्मल भेष में सदा उज्जवल रहेगा।

हरि के सेवक जो हरि भाए
तिनकी कथा निरारी रे।

महन्त पं० निहाल सिंह जी हरिद्वार

□

पारस रूप जीवन

पूज्य महाराज जी का जीवन एक पूर्ण सन्त का जीवन था। सादा सा पहरावा बीसवीं शताब्दी की चमक-दमक से दूर, केवल नाम वाणी में एक रस आपका जीवन था।

आपकी शरण में जो भी आया उसने मन वाञ्छित फल पाया। आपकी शरण में आकर अनेकों ही प्राणी उच्च पद को पा गए। आप पारस थे। जो प्राणी आपके चरण स्पर्श कर गया वह स्वर्ण बन गया। जैसे चन्दन अपने पास के वृक्षों को सुगन्धि देकर चन्दन ही बना लेता है उसी तरह आपकी शरण में जो भी आया वह साधु बन गया। सच ही कहा है।

कबीर-चंदन का बिरवा भला बेड़ियों ढाक पलाश।
ओ भी चन्दन होए रहे बसे जो चन्दन पास॥

ऐसे थे हमारे महाराज जी। उनके चरण कमलों में बारंबार प्रणाम अर्पित होवे।

संत मेहर सिंह जी अकाली बटोत (जम्मू-कश्मीर)

महान आत्मा

इस देश की विशेषता यही रही है कि यहाँ समय-समय पर कोई न कोई महापुरुष अवतार लेते ही रहते हैं। महात्मा हम उसे कहते हैं जिसकी आत्मा महान हो। वह समुद्र की तरह गंभीर, आकाश की तरह व्यापक, हवा की तरह उदार, पृथ्वी की तरह क्षमाशील, सूर्य की तरह तेजस्वी हो।

ऐसे ही थे हमारे पूज्य गुरुदेव जी महाराज। जिन्होंने जीवन में कठिन तपस्या की। लाखों जीवों का उधार किया। हजारों को नाम-दान, विद्या-दान, औषधि-दान, धन-धान्य आदि के वरदान दिये। वह परोपकारी महाराज जी आज हमारे में नहीं हैं। परन्तु उनके द्वारा दी हुए शिक्षाएँ, किए हुए उपकार हमारे में सदैव रहेंगे।

महन्त पुरुषोत्तम सिंह शास्त्री (मोदी नगर)

□

एक महान् विभूति

अनन्त श्री विभूषित, परम पूज्यपाद, परम कृपालु, विद्वद्वरिष्ठ, ब्रह्मश्रोत्रिय, ब्रह्मनिष्ठ तथा श्री निर्मल सम्प्रदाय भेष विभूषण एवं वयोवृद्ध श्री महन्त जी महाराज के जीवन में शम, दम, सेवा, भजन, तितिक्षा, तपस्या, शान्ति, त्याग तथा वैराग्य एवं समदर्शिता आदि गुणों का अवलोकन करते हैं, तो वास्तव में वे प्राचीन वैदिककालीन ऋषियों की परम्परा में दृष्टिगत होने लगते हैं, क्योंकि आपके जीवन में "सादा जीवन आदर्श विचार" की सूक्ति पराकाष्ठा को स्पर्श करती हुई स्पष्ट दृष्टिगोचर होती थी। आपके सान्निध्य में आने वाले भक्तजन एवं साधु समाज के हृदय को ही नहीं अपितु जन-जन के मानस को सादा जीवन व्यतीत करने के लिए प्रेरित करती रही। यह भी आपके जीवन की एक प्रधान उपलब्धि थी।

"यद्यदाचरति श्रेष्ठस्तत्तदेवेतरो जनः" श्री गीताजी के इस भगवद् वचन का आचरण एवं पालन आपके जीवन में पूर्णरूपेण समाविष्ट था। आपकी वेद, धर्मशास्त्र के विधि विधान के प्रति धार्मिक देवस्थानों के प्रति अगाध निष्ठा थी। आप शास्त्रीय पद्धति से ही सर्व कर्मों का सम्पादन करते रहे। आप गंगाजी में स्नान करने के पश्चात् गंगाजल के जल बिन्दुओं को जो शरीर पर शेष रह जाते, उन्हें भी अत्यन्त श्रद्धा से धारण करते थे, उन्हें वस्त्र से नहीं सुखाते थे। ऐसे स्नान को शास्त्र में 'मूसल स्नान' से सम्बोधित किया गया है, जिसका शास्त्रोक्त बहुत ही महत्व है। इसी प्रकार आपके जीवन के सभी धार्मिक कृत्यों में वेद शास्त्र की मर्यादाओं का समादर और आचार संहिता का पालन आपके जीवन का मुख्य अङ्ग रहा।

जिस समय कुम्भ और अर्धकुम्भ मेला के समय पर उज्जैन, त्र्यम्बक, हरिद्वार, प्रयागराजादि पावन तीर्थ स्थलों में स्नान करने का अवसर आता था, तो उस समय आप भले कितने ही शारीरिक दृष्टि से अस्वस्थ क्यों न हों परन्तु आप अपने शरीर की कभी भी चिन्ता न करके उस अविनाशी स्वरूप अकाल पुरुष परमात्मा का ध्यान करते हुए बड़े अदम्य उत्साह के साथ तत्पर होकर "महाजनों येन गतः सःपन्थः", इस उक्ति को चरितार्थ करते थे।

आपके तत्वावधान में पावन तीर्थ क्षेत्र के प्राङ्गण में स्थित आपके विशाल "निर्मल सत्सङ्ग-ज्ञान शिविर" में श्रद्धालु भक्तजन वहाँ पहुँचकर भक्ति और ज्ञान एवं वैराग्य की अमृतमयी कथाओं को तथा मन्त्र व्याख्यानों को यथा "एकं सद्विप्रा बहुधा वदन्ति" "सर्वं खल्विदं ब्रह्म" "एको देवः सर्वं भूतेषु निगूढः" "एकोम् सत्नाम" "सीया राममय सब जग जानो" "इह विष संसार जो तुम देखदे इह जग हर का रूप है हर रूप नदरी आया" इत्यादि मन्त्रों की विशद् व्याख्या श्रवण कर गृहस्थ समाज ही नहीं अपितु महात्मा वृन्द भी कृतकृत्य हो जाते थे।

आपके जीवन में कैसी भी पक्ष और विपक्ष की ओर से धार्मिक अथवा सामाजिक विषम एवं गम्भीर परिस्थितियाँ उपस्थित हुई परन्तु आपने उन्हें विमल विवेक के द्वारा दीर्घ दृष्टिकोण का परिचय देते हुए समाधान किया जिससे आपके त्याग, शान्ति, और सहिष्णुता एवं सहजमृदुता का दिग्दर्शन होता था। यही कारण है कि आपके श्री चरणों में उभय पक्ष के सदस्य ही नहीं अपितु सभी सम्प्रदायों के महापुरुष नत-मस्तक होकर अभिनन्दन करते थे।

जबसे आपने श्री निर्मल पञ्चायती आखाड़े की "श्री महन्ती" का पद भार ग्रहण करके इस पद को अलङ्कृत किया था। तभी से आपने निर्मल पञ्चायती आखाड़े को सभी दृष्टियों से "दिन दूनी रात चौगुनी" की लोकोक्ति को सार्थक करते हुए पुराने स्थानों का जीर्णोद्धार एवं नवीन स्थानों का निर्माण कर अखाड़े को उत्थान एवं संवर्द्धन की ओर अग्रसर किया। प्रवृत्ति प्रधान क्षेत्र में रहते हुए भी त्याग, वैराग्य तथा निवृत्तिपूर्वक जीवन की दिनचर्या व्यतीत करना यह भी आपके एक असाधारण व्यक्तित्व का द्योतक था।

आपकी तितिक्षा त्याग एवं ज्ञान गरिमा अत्यन्त श्लाघनीय थी। 'परोपकाराय सतां विभूतयः' ही जिनके जीवन का चरम लक्ष्य था ऐसी महान् विभूति को हम कोटि-कोटि प्रणमन करते हैं।

अनन्त श्री विभूषित परम श्रद्धेय ब्रह्मनिष्ठ
विरक्त शिरोमणि श्री सद्गुरुदेव श्री स्वामी मेहर सिंह जी
महाराज के अकिञ्चन चरणचञ्चरीक
सन्त जगदीश हरि शास्त्री
ग्राम पोस्ट—राजगढ़ जिला लुधियाना

श्रीमान् वियोगी जी

(इस ग्रन्थ के लेखक)

"बाबाणीआ काहाणीआ पुत सपुत करेनि"

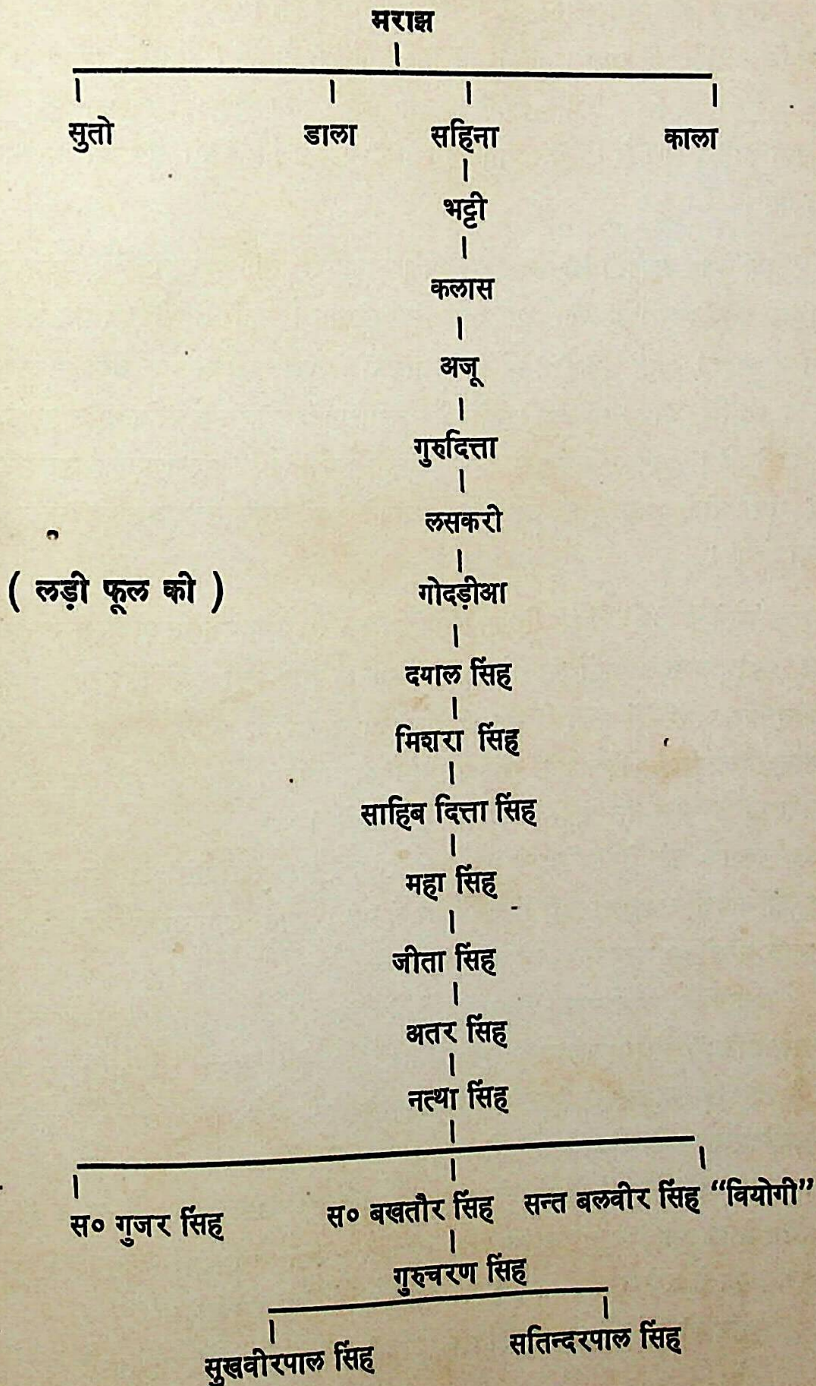
सर्व गुण सम्पन्न विद्वान् कोई-कोई होता है। निर्मले साधु वेद-वेदाङ्ग, गुरुमत्त-गुरुवाणी तथा इतिहास से तो ज्ञात होते हैं परन्तु आर्थिक विश्लेषण एवं विश्व राजनीनि से प्रायः अज्ञात। वर्तमान युग विज्ञान का युग है। विज्ञान, अर्थशास्त्र, आर्थिक भाईचारा इत्यादि आधुनिक विषयों के सम्पूर्ण ज्ञाता तथा इन विषयों पर हुई शङ्काओं के समाधान करने वाले निर्मल सन्त पण्डित बलवीर सिंह जी वियोगी हैं जिनकी जानकारी देना अत्यावश्यक है।

माननीय वियोगी जी १६२० से लेकर आजतक समूह सन्तों-महन्तों, विरक्तों, पण्डितों, समूह पंथक तथा राजनैतिक नेताओं, अध्यापकों, लेखकों, सम्पादकों, आश्रमों तथा गुरुद्वारों से प्रेम एवं घनिष्ठ मैत्री सम्बन्ध रखे हुए हैं। इसी कारण आपका हृदय विशाल तथा अनुभवी है। आपने देश-भक्ति, विद्या-अध्ययन तथा कथा-व्याख्यान के कारण सम्पूर्ण देश का भ्रमण किया है। आपके विचार जाति, भाषा एवं सम्प्रदाय से ऊपर हैं। सर्व जीवों को सम-दृष्टि से देखते तथा उपदेश देते हैं।

आप सिद्धू (बैराड़) वंश के रत्न हैं। इस वंश ने पञ्जाब तथा भारत के इतिहास में नया अध्याय शुरू किया है। छठे गुरु श्री गुरु हरि गोविंद साहिब से लेकर दशम गुरु पर्यन्त गुरु चरणों में उपस्थित रहते हुए सेवा करके अनेकों वरदान तथा हुकुमनामे प्राप्त किये हैं। आप इसी ऐतिहासिक वंश के कुल-दीपक हैं। वंश-वृक्ष इस तरह है।



श्रीमान् महन्त बलवीर सिंह जी "वियोगी"
(लेखक)


मराझ
सुतो
डाला
सहिना
काला
भट्टी
कलास
अजू
गुरुदित्ता
लसकरो
(लड़ी फूल की)
गोदड़ीआ
दयाल सिंह
मिशरा सिंह
साहिब दित्ता सिंह
महा सिंह
जीता सिंह
अतर सिंह
नत्था सिंह
स० गुजर सिंह
स० बखतौर सिंह
सन्त बलवीर सिंह "वियोगी"
गुरुचरण सिंह
सुखवीरपाल सिंह
सतिन्दरपाल सिंह

आपका जन्म सन् १६०८ ई० में स० नत्था सिंह जी सिद्धु के गृह में गाँव बुरज थरोड़ जि० भटिंडा में हुआ। प्रारम्भिक विद्या गाँव में ही हुई। विद्या की ऐसी लग्न लगी कि गृह-त्याग आप दमदमा साहिब मस्तुआणा, पञ्जा साहिब, मुराला, चुपाला, ननकाना साहिब इत्यादि विभिन्न धार्मिक स्थानों का दर्शन करते हुए श्री अमृतसर पहुँच गए।

यह समय अकाली आन्दोलन का था। गुरुद्वारा सुधार लहर पूरे यौवन पर थी। चल रहे "मोर्चे" में आप भी सम्मिलित हो गए। जहाँ आपने अत्यन्त असह्य कष्टों को सहा। भाई केरु के मोर्चे में ९ बार जेल गए। इस समय आप में दूसरा गुण यह था कि आप धार्मिक दीवानों में उत्साहपूर्वक जोशीली कविताएँ तथा शब्द पढ़ा करते थे। आपका मनोहर रूप मधुर आवाज तथा उत्साहपूर्वक उच्चरित शब्द सुन श्रोता जन झूम उठते थे। आपने कई वर्षों तक अकाली लहर में हिस्सा लिया।

"जैतो के मोर्चे" में भी हिस्सा लिया १५।१ जत्थे में सम्मिलित होकर गिरफ्तारी दी। १०१ अखण्ड पाठों के भोग समय सारा पन्थ वहां एकत्रित हुआ। वहाँ श्रीमान् सन्त अतर सिंह जी मस्तुआणे वालों का अलौकिक कीर्तन तथा दर्शन तथा श्रीमान् सन्त सुन्दर सिंह जी भिंडरावालों की मनोहर कथा आपके हृदय-प्रदेश में समा गई। सन्त सुन्दर सिंह जी के तो इतने निकट हो गए कि कीर्तन समय ढोलक बजाने की सेवा केवल आप ही करने लगे। व्युत्पन्नमति जान सन्त सुन्दर सिंह जी आपको अपने साथ ही भिंडर कलाँ ले गए। जहाँ आप गुरुमत्त तथा वेदान्त के उच्च ग्रन्थों का अध्ययन करने लगे।

एक दिन प्रबोध चन्द्र नाटक पढ़ रहे थे कि संस्कृत की यह पंक्तियाँ "ऋते ज्ञानान्न मुक्तिः" क्षीणे पुण्ये मर्त्यलोकं विशन्ति" आई। आपने अर्थ पूछा तो सन्त जी ने कहा कि यह संस्कृत है आप मूल भाषा का पाठ पढ़ो। परन्तु आप इन पंक्तियों के अर्थ समझने की जिद करने लगे। तब आपकी संस्कृत पढ़ने की जिज्ञासा को देख सन्त सुन्दर सिंह जी ने आपको पूज्य श्री महन्त जी के पावन चरणों में पिण्डी घेब डेरे भेज दिया। जहाँ आपने मन लगाकर विद्या अध्ययन किया तथा पूज्य महाराज जी से मर्यादापूर्वक दीक्षा ग्रहण करके उनके शिष्य हो गए।

आप की प्रतिभा तथा विद्या अध्ययन की रुचि देखकर श्री महन्त जी ने उच्च

विद्या हेतु आपको प्रथम हरिद्वार अनन्तर काशी भेज दिया। जहां आपने धर्म-दर्शन के उच्चतम ग्रन्थों का गहन चिन्तन किया। विद्या सम्पन्न होकर आप वापस पिंडो धेव पहुँच गुरु सेवा में तत्पर रहने लगे। आपकी योग्यता देखकर महाराज जी ने आपको डेरा थेह साहिब धूंदे के महन्त नियुक्त कर दिया। यह स्थान व्यास नद के तट पर अत्यन्त रमणीय एवं शान्त स्थान है। यहां पर आप कुछ काल ही टिके। अपनी विद्या-पिपासा को शान्त करने के लिए महाराज जी से शुभाशीर्वाद लेकर थेह साहिब को छोड़ आप "सिक्ख-शहीद मिशनरी कालिज" अमृतसर में प्रविष्ट हुए। इस समय आपके विद्यादाता प्रिंसीपल गङ्गा सिंह जी आप पर विशेष गर्व करते थे। क्योंकि आप संस्कृत के पण्डित होने के साथ ही श्री गुरु ग्रन्थ साहिब जी की कथा भी सन्त सुन्दर सिंह जी से पढ़ चुके थे। इस मिशनरी कालिज से प्रशिक्षण लेकर आपने वह योग्यता प्राप्त की जो अन्य किसी में होनी असंभव है। क्योंकि जो गुरुमत्त के ज्ञाता होते हैं वह संस्कृत के पण्डित नहीं होते तथा जो संस्कृत के पण्डित होते हैं वह गुरुमत्त से अधिकतर अज्ञात। अगर दोनों गुण हों तो भी किसी मिशनरी कालिज से विधिपूर्वक प्रशिक्षित नहीं होते। परन्तु आपने संस्कृत, गुरुमत्त तथा मिशनरी कालिज से विधिपूर्वक प्रशिक्षण ले योग्यता प्राप्त की है।

१९४५-४६ के समय स्वतन्त्रता की लहर तेज हो रही थी। अमृतसर से वापस आकर आपने रियासत पटियाला के छोटे से कस्बे "कोठा गुरु" को अपना केन्द्र बनाया। आपने प्रजा मण्डल की बहुत सी सभाएँ की जिनके अध्यक्ष पद को बाबू बृच्छ भान जी (बाद में मुख्य मन्त्री पैप्सू) ज्ञानी जैल सिंह जी (वर्तमान राष्ट्रपति) कामरेड जगीर सिंह जोगा वर्तमान एम. एल. ए., सन्त इन्द्रसिंह जी चक्रवर्ती, श्री हरबन्स लाल जी (बाद में अध्यक्ष पञ्जाब विधान सभा), श्री कुलवंत राय भटिंडा, श्री चानन राम डोड इत्यादि प्रसिद्ध नेता सुशोभित करते रहे। स्वतन्त्रता के लिए आपने प्रजा को जत्थेबंद किया तथा राजाओं के अत्याचारों को प्रकट किया। आपका यह क्रान्तिकारी रूप देख राजशाही ने आपको बुरज थरोड़ से गिरफ्तार कर कोठा गुरु थाने में बन्द कर दिया। यहाँ से बरनाला जेल भेज दिया। वहाँ आपसे बाबू बृच्छ भान, सन्त इन्द्र सिंह चक्रवर्ती, स. हरचरण सिंह कालांवाली, स. बलवंत सिंह जी वकील बरनाला इत्यादि मुलाकात करने आये तथा पढ़ने के लिए कांग्रेस का इतिहास दिया। इस समय आपके केस की पैरवी, स० तीर्थ सिंह जी वकील ने

की तथा पैप्सू हाई कोर्ट से आपको ससम्मान रिहा करवाया। इसके बाद भी काफी समय तक आप जन साधारण में स्वतन्त्रता के लिए प्रचार करते रहे।

काफी समय राजनीति में काम करने के बाद आप पुनः श्री महन्त जी महाराज के चरणों में उपस्थित हो गये। इन्हीं दिनों महाराज जी ने अपना "सन्तपुरा" डेरा माडल टाउन दिल्ली में स्थापित किया था। जो एक दर्शनीय स्थल है। आपको विद्वान् तथा सुयोग्य समझ एवं प्रमुख शिष्य होने से सन्तपुरा के महन्त बना दिया तथा नए सम्वत् पर समूह निर्मल साधुओं तथा संगत में इस महन्ती की पगड़ी दी गई। यहाँ आपने गुरुमत्त प्रचार की लहर चला दी है। देश के हर कोने से जिज्ञासु आकर ज्ञान नदी में डुबकी लगाते हैं। यहाँ पर गुरु पर्व तथा अन्य त्यौहार तो उत्साह से मनाये ही जाते हैं परन्तु जो नाम-वर्षा नये सम्वत् पर (यह दिन स्वामी भगत सिंह जी की याद में मनाया जाता है) होती है वह अकथनीय है। तीन दिन तक देश-विदेश से जिज्ञासु जन पूज्य महाराज जी के चरणों में उपस्थित होकर भव-बन्धनों से छूटते हैं। वियोगी जी धर्म प्रचारार्थ हरिद्वार, ऋषिकेश, इलाहाबाद, पटना, बंबई, अमृतसर इत्यादि विभिन्न नगरों में पहुँचते रहते हैं।

जब आप श्री गुरु ग्रन्थ साहिब जी की कथा करते हैं तो ज्ञान-वर्षा की झड़ी लग जाती है। गुरुवाणी के शब्द, उपनिषदों के मन्त्र, गीता के श्लोक तथा अन्य संस्कृत एवं भाषा के ग्रन्थों के मनोहर प्रमाणों से युक्त आपका व्याख्यान श्रोता मन्त्र-मुग्ध होकर श्रवण करते हैं। आपके दृष्टान्त तथा तर्क अकाट्य होते हैं। आपका धर्म-दर्शन तथा इतिहास सम्बन्धी चिन्तन एवं मनन विलक्षण है। एतत्सम्बन्धी वेद काल से लेकर अब तक के अर्वाचीन-प्राचीन लेखकों की कृतियों का अध्ययन तो आपके दैनिक जीवन का एक महत्त्वपूर्ण अङ्ग है।

एक ओर जहाँ आप स्वयं गुरुवाणी का प्रचार करते हैं वहीं दूसरी ओर यह भी ध्यान है कि हमारे पश्चात् की यह प्रचार परम्परा चलती रहे। इसी उद्देश्य की पूर्ति हेतु आपके दो शिष्य काशी में विद्याध्ययन कर रहे हैं। एक सन्त ज्ञान सिंह जी शास्त्री हैं जो कि श्री निर्मल पंचायती अखाड़ा सती चौतरा वाराणसी के वर्तमान में मुकामी महन्त हैं। आप दर्शनाचार्य की उपाधि प्राप्त किए हैं तथा आगे भी पढ़ाई कर रहे हैं। साथ ही अखाड़े की सेवा तथा प्रचार कार्य भी करते हैं। इस ग्रन्थ को प्रकाशित करने का गुरुतर भार भी श्रीमान् वियोगी जी ने अपने इस शिष्य को ही सौंपा है।

दूसरे हैं सन्त ओंकार सिंह जी आप वेदान्त विषय से शास्त्री की उपाधि प्राप्त किए हैं। अपने बड़े गुरु भाई के साथ काशी में रहकर विद्याध्ययन कर रहे हैं। समय-समय पर दोनों गुरु भाई दिल्ली, हरिद्वार आदि पहुँचकर आपके आदेश से सेवा कार्य भो करते हैं।

वर्तमान में आप पूज्य गुरुदेव जी श्री महन्त साहिब जी के जोवन को शब्दों में अङ्कित कर रहे हैं। क्योंकि महापुरुषों के चरण चिन्हों पर चलकर ही जिज्ञासु जन प्रभु प्राप्ति करते हैं कहा भी है "महाजनो येन गतः सः पन्थः"। इसलिए आप महाराज जी के जीवन चरित्र को अङ्कित कर समूह साधु समाज, सिक्ख पन्थ तथा जन-साधारण पर महान उपकार कर रहे हैं।

जैसे महाराज जी का जीवन-तप-त्याग तथा उपकारों का प्रत्यक्ष उदाहरण है। इसी तरह आपका सत्तर वर्ष का जीवन भी एक जीवंत इतिहास है। १६५० से लेकर अबं तक महाराज जी के जीवन चरित्रों, चमत्कारों तथा उपकारों को निकट से देखा है। इतना समय साथ रहने का जो सौभाग्य आपको प्राप्त हुआ तथा जो भी सामग्री इस जीवन गाथा में दी है वह विश्वसनीय है।

दूसरा विश्वास का कारण यह है कि "वियोगी जी" स्वयं तर्कवादी विद्वान हैं अन्ध विश्वासी नहीं। हर बात को विचार तथा तर्क की कसौटी पर चढ़ा कर देखते हैं। महाराज जी के चरणों में अनन्त श्रद्धा रही है। इसलिए आपने सत्य शब्दोंको ही अङ्कित किया है। जिससे जिज्ञासु जनों को निःसन्देह धर्म-अर्थ-काम तथा मोक्षकी प्राप्ति होगी।

धनु सु कागदु कलम धंनु
धनु भांडा धनु मसु।
धनु लेखारी नानका
जिनि नामु लिखाया सचु॥

ज्ञानी बलवन्त सिंह जी कोठा गुरु

❀ ❀ ❀

भूमिका

हम सदा वर्तमान में जीते हैं। आज का युग भौतिकवाद का युग है। विज्ञान ने आज हमारी प्राचीन मान्यताओं को धुंधला कर दिया है। हमारी धार्मिक भावनाओं को ठेस पहुँचाई है। जो चन्द्रमा इन्द्र का सहायक था। विज्ञान ने उसे अच्छी तरह देख ही नहीं लिया है अपितु उस पर अपनी पताकाएँ लहरा दी हैं। विज्ञान हर उत्पत्तिशील वस्तु का अध्ययन कर रहा है। इसे न कोई इन्द्रलोक अथवा शिवलोक ही मिला है तथा न ही कोई स्वर्ग-भूमि, जहाँ से कहा गया है "क्षीणे पुण्ये मर्त्यलोकं विशन्ति।"

परन्तु इतना होने पर भी मनुष्य को पीड़ा यथावत् है। अशान्ति, ऊँच-नीच आदि पहले से बढ़ते जा रहे हैं। शान्ति के स्थान पर अशान्ति, माला के स्थान पर तलवार, प्यार के स्थान पर घृणा में बढ़ोतरी हुई है। धर्म के रहते अधर्म पनप रहा है। गुरु-पीरों-अवतारों की यह पृथिवी नरक बन रही है। आज यह अपने विनाश के रास्ते बना रहा है। अपने ही भाइयों को ज्वालामुखी के पर्वत पर खड़ा कर रहा है। विज्ञान जहाँ सृजनात्मक कार्यों में अग्रसर है वहीं पर अस्ति को नास्ति में रूपांतरित करने के लिए तत्पर हो रहा है।

आज इसके पास शान्ति, भाईचारा, स्थिरता तथा प्राणिमात्र के लिए सुख के साधनों की कमी है।

हजारों खिजर पैदा कर चुकी है नस्ल आदमी की।
ये सब तसलीम, आदमी अब तक भटकता है॥

आत्मा-परमात्मा, धर्म-आचरण मात्र शब्दजाल बन गए हैं। मनुष्य स्वार्थ में पड़कर, अपना आश्रय संसार पर रखे हुए है। दीन-धर्म को त्याग सम्पूर्ण शक्ति मायिक पदार्थों को संलग्न करने में लगा रहा है। इसकी दशा यह हो गई है कि—

भाई बंदी हेत चुकाया।
दुनिया कारण दीन गँवाया॥

इसी लिए इसका जीवन अकेला तथा रसहीन हो गया है।

इस झूठ की अँधेरी, पाप-प्रवृत अवस्था को बदलने हेतु महापुरुषों का आविर्भाव होता है। जो प्राणी के जीवन को संसार से ऊपर उठाकर सत् की ओर प्रेरित करते हैं। महापुरुष अपना सहारा देकर भटके हुए जीवों को "कलि ताती ठाढा हरि नाऊ" जपाकर "आतश दुनीया खुनक नाम खुदाया" का रंग चढ़ाकर–

उह धनवंत कुलवंत पतिवंत।
जीवन मुक्त जिस रिदे भगवंत।
धंन धंन धंन जन आया।
जिस प्रसादि सभ जगत तराया।
जन आवन का इहै सुआउ।
जन कै संग चिति आवै नाउ।
आप मुक्त मुक्त करै संसार।
नानक तिस जन कउ सदा नमस्कार॥

इत्यादि वाक्यों अनुसार

अपने नियत कार्यक्रम को सम्पूर्ण कर परमात्मा में अभेद हो जाते हैं।

नानक लीन भयो गोबिंद सिउँ।
ज्यों पानी संग पानी॥

ब्रह्मश्रोत्रिय ब्रह्मनिष्ठ महामहिम पूज्य गुरुदेव जी जिनका यह पवित्र जीवन अंकित करने का यत्न किया गया है एक उच्च पवित्र जीवन वाले थे। आप आठों पहर अन्तरात्मा में लीन रहते थे। बाहर कर्तव्यनिष्ठ होकर सांसारिक कार्यों में दिलचस्पी लेते थे।

आपका जीवन लिखना कठिन है। परन्तु "ज्यों प्रेरे त्यों करना" इस तरह समझकर यह तुच्छ यत्न किया गया है। आपका शिष्य होने से मेरा आपसे घनिष्ठ सम्पर्क सन् १६२५ से १६८५ तक रहा है। मैंने बचपन से ही आपको पास से देखा है। परन्तु मैं निर-गुण इस अथाह सागर की थाह पाने में असफल रहा। पूर्ण का ज्ञान अपूर्ण कैसे कर सकता है? आप पूर्ण पुरुष थे, शान्त-चित्त, सुमेरु पर्वत की तरह स्थिर, समुद्र जैसे गम्भीर।

ऐसे महापुरुषों के सम्बन्ध में लिखने के लिए बहुत सामर्थ्य चाहिए, जिससे मैं खाली हूँ। परन्तु आपका चरण सेवक शिष्य होने से यह यत्न किया है। आपके जीवन समय कई कार्यक्रम बनाये गए परन्तु होना वही था जो आपको अच्छा लगता था।

आज इस महाकुम्भ के पर्व पर आपकी याद में आपके प्रेमीओं तथा श्री निर्मल पंचायती अखाड़ा की ओर से दिन मनाने हेतु मेरी ड्यूटी आपका जीवन लिखने में लगाई गई है। मेरे जैसे रोग-ग्रस्त व्यक्ति के लिए यह कार्य बहुत मुश्किल था परन्तु मेरे प्रिय शिष्य सन्त ज्ञान सिंह शास्त्री के उत्साह, पूज्य चरण महामहिम श्री १०८ श्री महन्त पं० स्वामी बलबीर सिंह जी वेदान्ताचार्य, मित्रवर पं० गुरुदीप सिंह जी दर्शन केसरी, महन्त त्रिलोक सिंह जी सुभाष घाट, महन्त उत्तम सिंह जी सैकेट्री, महन्त सरमुख सिंह जी आदि के सहयोग तथा उदारता से यह कार्य करने में सफल हो पाया हूँ। मैं हृदय से आप सबका आभारी हूँ।

साथ ही ज्ञानी बलवंत सिंह जी कोठा गुरु का भी बहुत ऋणि हूँ, जिन्होंने महाराज जी सम्बन्धी खोजपूर्ण निबन्ध लिख कर दिया है। इस तरह स० त्रिलोक सिंह जी फूल आदि सब सहयोगियों का भी धन्यवाद करता हूँ।

महन्त बलबीर सिंह वियोगी
सन्तपुरा जी १/२ माडल टाउन
दिल्ली-६



सम्पादकीय

सन् १९८४ के नए संवत् पर सन्तपुरा माडल टाउन दिल्ली में महाराज श्री के प्रेमीओं ने यह निश्चय किया था कि महाराज जी की जन्म शताब्दी मनाई जायगी। शताब्दो समारोह हेतु एक कमेटो का गठन भो हुआ था। जिसमें पूज्य गुरुदेव (श्रीमान् १०८ महन्त बलवोर सिंह जी वियोगी), पूज्य श्रीमान् महन्त गुरुदीप सिंह जी दर्शन केसरी, पूज्य चरण वर्तमान श्रो महन्त साहिब जी पं० बलवोर सिंह जी शास्त्री वेदान्ताचार्य, भक्त बिशन दास जी अहमद नगर, बाबू सोहन लाल जी तथा बाबू चूनी लाल जी गुलाटी बंबई, बाबू इन्द्र राज जी सेठी दिल्ली तथा महाराज जी के परम भक्त बाबू ईश्वर दासजी मेहता दिल्लो थे।

उस समय महाराज श्री के जोवन को अंकित करने का कार्यभार पूज्य गुरुदेव जी के ऊपर आया था। तब दास ने एक मामूली सहायक के रूप में महाराज जी के जीवन लेखन-संपादन में किञ्चित् सहयोग किया था। शताब्दी समारोह के प्रबन्ध हेतु जब पूज्य गुरुदेव जी तथा पूज्य केसरो जी महाराज बंबई से अहमदनगर पहुँचे तो वह दुर्दिन आया जिसने सभी को झकझोर कर रख दिया। देश की भूतपूर्व प्रधान मन्त्री श्रीमती इन्दिरा गांधी की नृशंस हत्या के पश्चात् गुण्डागर्दी का ताण्डव नृत्य होने लगा। चारों ओर आग लगी थी। सन् १९४७ के घाव अभी सूखे ही नहीं थे कि गुण्डागर्दी ने पुनः अपना रंग दिखा दिया। चारों तरफ की लूट-मार में हजारों व्यक्तियों की जानें चली गई। खरबों रुपयों की सम्पत्ति जल कर स्वाहा हो गई। लाखों लोग बे-घर हो गए।

इस आग की लपटों ने महाराज जी के प्रेमीयों को भी आतंकित किया। कई प्रेमीयों का बहुत नुकसान हुआ। खास कर दिल्ली, महाराष्ट्र तथा उ० प्र० में। दिल्ली में सन्त पुरे का आधा भाग नष्ट हो गया। ऐसी हालत में सभी कार्य ठप हो गए। बहुत दिनों तक अनिश्चय की स्थिति बनी रही। उस समय महाराज जी का शरीर बहुत कमजोर हो गया था। परन्तु फिर भी मुरादाबाद, इलाहाबाद, कानपुर, दिल्ली, मोदीनगर, मेरठ आदि स्थानों पर पहुँच कर महाराज जी ने प्रेमीयों को सांत्वना दी।

कुछ दिनों उपरान्त महाराज जी के आशीर्वाद से प्रेमी भक्तों में पुनः उत्साह पैदा हुआ। तब यह निश्चय हुआ था कि आज के ही दिन यहाँ हरिद्वार में ही महाराज जी का जन्म शताब्दी समारोह मनाया जायगा। परन्तु शायद महाराज जी को यह समारोह शुरू से स्वीकार नहीं था।

आप शुरू से ही उपराम रहे। जब पूज्य गुरुदेव जी आपसे आपके जीवन सम्बन्धी कुछ पूछते तथा आपके मुखारविंद से उच्चरित वाक्यों को टेप करने का यत्न करते तो आप चुप हो जाते। हम सभी हैरान रह जाते। तब यह निश्चय हुआ कि आपके प्रेमीयों तथा सन्त महात्माओं की जानकारी के आधार पर ही आपका जीवन लिखा जायगा।

पूज्य गुरुदेव जो बचपन से ही महाराज जी के श्री चरणों के आश्रय में हैं। उनको स्वयं भी काफी जानकारी है। सैकड़ों पत्र आपके भक्तों द्वारा प्राप्त हुए। इस तरह आपके जोवन को रेखांकित किया गया। पूज्य गुरुदेव जी ने इसे गुरुमुखी लिपि में लिखा था। परन्तु अधिकतर लोगों का विचार था कि इसे हिन्दी में लिखा जाय ताकि अधिक से अधिक लोग आपके जीवन चरित्र से लाभ उठा सकें। गुरुमुखी से देवनागरी में करने का आदेश इस सेवक को मिला। यद्यपि मैं कोई भाषा शास्त्री नहीं हूँ। केवल एक साधारण छात्र हूँ। तथापि पूज्य महाराज जी के आशीर्वाद से इस कार्य को यथामति सम्पन्न किया है। इसमें भाषा सम्बन्धी, वाक्य योजना सम्बन्धी तथा विषय प्रतिपादन में जो त्रुटियाँ हैं वे मेरी अपनी हैं। लेखकों की नहीं हैं। एतदर्थ सुधीजनों से क्षमा प्रार्थी हूँ।

मैं अपने त्रिदेवों श्रीमान् श्री १०८ निखिल तन्त्र स्वतन्त्र पण्डित मण्डल मण्डन धैर्य्य धारिधौरेय वीरवारवर सुतपः परिपूतकाय, श्रोत्रिय ब्रह्मनिष्ठ ज्ञानगरिष्ठ लब्धप्रतिष्ठ वर्तमान श्री महन्त साहिब पण्डित स्वामी बलवीर सिंह जी शास्त्री तथा आपके परम मित्र मेरे पूज्य गुरुदेव पिता सकल शास्त्र पारावारीण निर्मलकृत कमल दिवाकर श्री १०८ सन्त बलवीर सिंह जो "वियोगी" एवं पितृतुल्य निरस्त समस्त रागदोषाभिमान-सदाचारविचार संरक्षित सनातनधर्माचार्य-विद्यारक्षणसलक्षण पूज्य चरण महन्त गुरुदीप सिंह जी दर्शन केसरी का धन्यवाद किन शब्दों से करूं जिनके

चरणों में रहकर आज यह कीट भी महाराज जी के जीवन-चरित्र को संपादन करने की धृष्टता कर रहा है। यह सब आप तीनों के शुभाशीर्वाद का फल है।

आज मुझे हठात् कविकुल गुरु महाकवि कालिदास का यह श्लोक याद आ रहा है।

क्व ? सूर्य प्रभवो वंशः क्व ? चाल्पविषया मतिः।
तितीर्षुर्दुस्तरं मोहादुडुपेनास्मि सागरम्॥

अर्थात् महाराज जी का जीवन गहरा सागर है और मैं उसे अपनी अल्प बुद्धि रूपी नौका से पार करना चाहता हूँ। वास्तव में यह मेरी धृष्टता है। महाराज जी महान थे। वह गुणों के सागर थे। उनके जीवन को मैं किस तरह संपादन करूं ?

आज से ठीक बारह वर्ष पूर्व इसी हरिद्वार के कुम्भ पर मेरी तो यह दशा थी कि

हम रुलते फिरते कोई बात न पूछता।

परन्तु आज

गुरु सति गुर संग कोरे हम थापे॥

पूज्य गुरुदेव (इस पुस्तक के लेखक) तथा सतिगुरु देव (पूज्य श्री महाराज) जी की चरण धूलि प्राप्त कर यह कीट भी महात्माओं के आशीर्वाद को पा गया है।

पुस्तक के सम्पादन तथा लेखन में प्रसिद्ध विद्वान तथा महाराज जी के शिष्य ज्ञानी बलवंत सिंह जी कोठा गुरु तथा विद्यावारिधि स० त्रिलोक सिंह जी फुल माडल टाउन देहली का भी हृदय से आभारी हूँ। पुस्तक के प्रकाशन में बाबू सोहन लाल जी गुलाटी, बाबू चूनी लाल जी गुलाटी, बाबू बिशन दास जी अहमद नगर तथा बाबू ईश्वर दास जी मेहता समेत महाराज जी के सम्पूर्ण शिष्य वर्ग का भी आभार व्यक्त करता हूँ।

❋ ❋ ❋

"जीवन शिक्षा मुद्रणालय (प्रा०) लि०," गोलघर वाराणसी के संचालक बाबू रामजी सिंह का भी हृदय से आभारी हूँ जिन्होंने कम से कम समय में इसे छापा। साथ ही आपके सभी कर्मचारियों का भी हृदय से आभार व्यक्त करता हूँ जिन्होंने श्रद्धा पूर्वक इस कार्य को पूरा किया।

मेरे अन्तः करण में तनिक भी यह अहंभाव नहीं है कि मैं महाराज जी के जीवन का संपादन कर पाया हूँ। यह सब महाराज जी की कृपा का फल है। मेरी तो बस पूज्य महाराज जी के चरणों में यही प्रार्थना है—

दुर्वार संसार दवाग्नितप्तं
दोधूयमानं दुरदृष्टवातैः
भीतं प्रपन्नं परिपाहि मृत्योः
शरण्यमन्यं यदहं न जाने ॥

जिससे छुटकारा पाना अतिकठिन है उस संसार दावानल से दग्ध तथा दुर्भाग्यरूपी प्रबल आंधी से अत्यन्त कम्पित और डरे हुए मुझ शरणागत की आप काल से रक्षा करें, क्योंकि इस समय मैं और किसी शरण देने वाले को नहीं जानता।

अन्धकूप में पतत विकराल।
नानक काढ़ लेओ प्रभु दयाल ॥

तथा

नानक दास एहि सुख मांगै।
मोको कर संतन की धूरे ॥

महाकुंभपर्व हरिद्वार
१० अप्रेल सन् १९८६
दिन गुरुवार
चैत्र शुक्ल प्रतिपदा
सम्वत् २०४३

महाराज जी के सेवकों का चरण सेवक
सन्त ज्ञान सिंह शास्त्री, दर्शनाचार्य
मुकामी महन्त
श्री निर्मल पंचायती अखाड़ा
सती चौतरा—हड़हा वाराणसी

❋ ❋ ❋



ब्रह्मश्रोत्रिय ब्रह्मनिष्ठ प्रातःस्मरणीय श्री १०८ श्री महन्त
पं० स्वामी सुच्चा सिंह जी महाराज

निर्मल सम्प्रदाय

श्री गुरु नानक देव जी महाराज से लेकर दशम गुरु श्रीगुरु गोविन्द सिंह जी महाराज तक जो गुरु प्यारे शिष्य घर-द्वार छोड़कर गुरु-चरणों में ही रहते थे वह आदि निर्मले संत थे। तभी तो भट्टो ने गुरु-चरणों में आकर निर्मल भेष का दर्शन किया तो उनके मुख से अनायास ही यह वाणी फूट पड़ी "निर्मल भेख अपार तासु बिन अवरन कोई"। गुरु-चरणों में रहनेवाले इन शिष्यों का जीवन अति उत्तम था। गुरु-चरणों में रहते हुए यह आदि निर्मले संत गुरुवाणी पढ़ते, गुरुवाणी के अनुसार अपना आचरण बनाते, औरों को गुरुओं द्वारा बताये जा रहे शुभ मार्ग पर चलने के लिए प्रेरित करते, गुरु-घर की हर प्रकार की सेवा करते हुए खुशियाँ प्राप्त करते थे।

समय के परिवर्तन से जब दशमेश गुरु, गुरु गोविन्द सिंह जी ने संत-सिपाही खालसा पन्थ का सृजन किया तो यह निर्मले संत-सिपाही बन गये। एक दिन "पाऊंटा सहिब" (हिमाचल प्रदेश) में श्री गुरु गोविन्द सिंह जी ने अपने पाँच त्यागी वैरागी शिष्यों को भारतीय संस्कृति, धर्म तथा दर्शन के अध्ययन के लिए काशी भेजा। भारतीय धर्म, दर्शन तथा संस्कृति संस्कृत भाषा में है। बिना संस्कृत के ज्ञान के धर्म-दर्शन का आशय समझ में नहीं आता है। वह प्रथम पाँच निर्मले संत गुरु कृपा से शीघ्र ही सम्पूर्ण वेदों तथा शास्त्रों का अध्ययन करके गुरु-चरणों में पहुँच गये। उन विद्वान् तथा त्यागी वैरागी निर्मल संतो को गुरु महाराज जी ने अनेकों बरदान देते हुए कहा कि तुम्हारी निर्मल सम्प्रदाय इस संसार में सूर्यवत् चमकेगी जिसमें अनेक ही विद्वान्, गुणीज्ञानी, योगिराज, तपस्वी, भजनानन्दी महापुरुष महात्मा होंगे जो इस संसार में भटके हुए जीवों को गुरुवाणी का उपदेश देकर प्रभुचरणों में लगायेंगे। इस तरह दसमेश पिता जी ने सैकड़ों ही बरदान इस निर्मल संप्रदाय को दिए। निर्मल संप्रदाय का इतिहास बहुत से ग्रन्थों में तथा हिन्दी, पंजाबी, अंग्रेजी, सस्कृत तथा उर्दू आदि भाषाओं के ग्रन्थों में विस्तारपूर्वक दिया हुआ है। यहाँ केवल सकेत मात्र से ही दर्शा दिया गया है।

इस निर्मल सम्प्रदाय की बहुत सी सम्प्रदायें (उपशाखाएँ) प्रसिद्ध हैं इनमें से ठाकुरों की सम्प्रदाय बहुत ही प्रसिद्ध है।

ठाकुर सम्प्रदाय के प्रमुख श्री ठाकुर दयाल सिंह जी महाराज अमृतसर

ठाकुर दयाल सिंह जी का जन्म अमृतसर के एक कुलीन परिवार में हुआ था। जब आप की उम्र १५ वर्ष की थी, तभी पिता जी का देहावसान हो गया। कुछ ही समय तक आप अपनी माता जी की सेवा कर पाये कि वाहिगुरु की इच्छा से माता जी भी सदा के लिए साथ छोड़ गईं। माता-पिता के विछुड़ जाने से आपके मन पर बहुत गहरा प्रभाव पड़ा, क्योंकि अपने समूचे परिवार में आप अकेले पड़ गये थे। परिणामतः, आप हमेशा बहुत ही उदासीन रहने लगे। इसी उदासीन अवस्था में संयोगवश आप का मिलन सन्त बाबा रामसिंह जी से हो गया।

सन्त बाबा रामसिंह जी अमृतसर में बाबा अटल के पास श्मशान में घास की बनी झोपड़ी में रहते थे। यह महात्मा बहुत ही अल-मस्त-बेपरवाह फकीर थे। ठाकुर दयाल सिंह जी का बाबा के पास आना जाना नित्यप्रति होने लगा। बाद में आप बाबा से प्रभावित होकर सेवक बन गये। बाबा रामसिंह जी ने कुछ दिनों में आपको "योगवाशिष्ठ" अच्छी तरह कण्ठस्थ करा दिया और प्रतिदिन आप से योगवाशिष्ठ का पाठ सुन्दर स्वरों में सुना करते थे। धीरे-धीरे ठाकुर दयाल सिंह जी पूज्यपाद प्रभु की चरणों में अपने को समर्पित कर दिए। इतना ही नहीं, बल्कि प्रभु में प्रगाढ़ प्रेम हो जाने के नाते अपने निजी स्थान, जहाँ आजकल डेरा "ठाकुरां" है में एक कुटिया सन्तों के निवास हेतु बनवा दिया और प्रार्थनापूर्वक सन्तों के साथ बाबा रामसिंह जी को वहाँ ले आये। बाबा कुटिया देखकर हँसते हुए कहने लगे, दयालसिंह! अभी तेरा मन प्रवृत्तियों से घिरा हुआ है। अच्छा कोई बात नहीं। प्रवृत्ति भी ऐसी होगी कि बड़े-बड़े राजा-महाराजा यहाँ पर आकर शीश झुकायेंगे, किन्तु याद रखना 'जैसे जल में कमल निरालम् मुरगाई नैसाणे' के वाक्य सदृश प्रवृत्ति में ही निवृत्ति होनी चाहिये।

कुछ समय के पश्चात् सन्त रामसिंह जी इस परिवर्तनशील संसार से पार्थिव शरीर का परित्याग कर अपने मूल स्वरूप में लीन हो गये। तब आप संसार में बहुत ही उपराम रहने लगे। किसी से बात-चीत तक नहीं करते थे। हर समय वाहिगुरु नाम में ही लीन रहा करते थे। अच्छे-अच्छे महात्मा भी आप की इस उच्च प्रवृत्ति से प्रभावित होकर हाथ जोड़ नतमस्तक होते जाते थे।

आप के भजन का तेज सूर्य सदृश चारों तरफ फैल गया। हजारों-हजारों की संख्या में दर्शनार्थी श्रद्धालु आने लगे, सत्सङ्ग की सरिता धारा-प्रवाह बहने लगी।

अनेक साधु तथा गृहस्थ आप के शिष्य बनने लगे, भवन बन गये। सङ्गत-पङ्गत का अटूट लङ्गर लगने लगा। दोनों वक्त तीन-तीन सौ तक साधु एवं श्रद्धालुजन एक पंक्ति में बैठकर प्रसाद चखने लगे। यह सम्पूर्ण कार्य अनायास ही हरि इच्छा से होता चला जा रहा था। इस प्रकार आप का यश दिन दूना रात चौगुना फैल रहा था। एक तरफ जहाँ साधारण जनता आप के दर्शन करती थी वहीं दूसरी तरफ राजे-महाराजे भी आपका दर्शन कर अपने को धन्य समझते थे। आप के अनेक शिष्यों में से बाबा मिश्रा सिंह जी बहुत ही विख्यात महापुरुष हुये थे।

श्रीमान् बाबा मिश्रा सिंह जी अमृतसर :—

आप का जन्म सन् १८१२ ई० में अमृतसर में ही भाई सावन सिंह जी मुज्जफराबाद वालों के घर में हुआ था। आप की अभिरुचि सङ्गीत कला में अत्यधिक थी। अतः अल्पायु में ही रागविद्या सीखने में प्रवृत्त हो गये तथा १६ वर्ष की अवस्था आते-आते सङ्गीत शास्त्र के आप प्रकाण्ड पण्डित हो गये। माता-पिता ने आप की शादी कर दी किन्तु मात्र दो वर्ष बाद ही आप गृहस्थ आश्रम से ऊब गये और ठाकुर दयाल सिंह जी महाराज के शिष्य बन गये। डेरे में रहकर सेवा सुमिरन के अतिरिक्त दोनों समय कीर्तन-भजन करके साधु सङ्गत की सेवा करने लगे। जब आप कीर्तन करते थे तब ठाकुर जी अतिप्रसन्न होते थे। इस प्रकार कई वर्षों तक आप ठाकुर दयाल सिंह जी के पास रहकर कीर्तन तथा सेवा सुमिरन करते रहे।

सन्त बाबा फतह सिंह जी जो ठाकुरों के स्थान के पास ही चौक लक्ष्मणसर में ही अपना डेरा बनाकर रहते थे, ठाकुर दयाल सिंह जी के पास आकर प्रार्थना करने लगे कि कोई योग्य उत्तराधिकारी अपने सेवकों में से मुझे दे दीजिये, जिससे डेरे की देख-रेख में मेरी मदद हो सके। मेरा शरीर अब वृद्धावस्था में पहुँच गया है जिससे मैं डेरे की व्यवस्था संभालने में असमर्थ हो गया हूँ। श्रीमान् ठाकुर जी ने बाबा फतह सिंह जी के वचन सुनकर सन्त मिश्रा सिंह जी को उन्हें सौंप दिया। वहाँ सन्त मिश्रा सिंह जी दोनों समय कीर्तन-भजन करते और दूर-दराज से डेरे में आये साधु-सन्तों की सेवा करते थे जिससे डेरे की शोभा दिनों-दिन बढने लगी। आप सुबह अमृतबेला में ही कीर्तन करने प्रतिदिन हरिमन्दिरसाहिब जाया करते थे।

बाबा मिश्रा सिंह जी ने अपने जीवन काल में डेरे को बहुत सुन्दर बनाने के साथ ही उन्नत किया, जैसा कि अपने परलोक-गमन के २१ वर्ष पूर्व ही महाराज रतन सिंह जी को महन्ती की पगड़ी अपने हाथों से ही देकर डेरे का महन्त बना दिया था। इस प्रकार आप अपने पूरे जीवन काल में नामचिन्तन गुरुवाणी का प्रचार साधु-सङ्गत की सेवा में समाहित कर सन् १८८७ ई० में गुरु-चरणों में विलीन हो गये।

श्रीमान् महन्त रतन सिंह जो महाराज :—

श्री रतन सिंह जी महाराज का जीवन बड़ा ही पवित्र और उच्च आदर्शों से ओतप्रोत था। सचमुच आप अपने व्यवहार से इस संसार मे अनमोल रत्न बने रहे। आप स्वभावतः सरल एवं अत्यधिक उदार प्रवृत्ति के होने के नाते निर्मल सम्प्रदाय के प्रमुख सन्त स्वीकार किये गये।

आपका जन्म-स्थान पनिआलो तहि बाण प्रबन्ध जम्बू-कश्मीर में सन् १८४१ ई० में हुआ था। आपका लाल चेहरा गौरवर्ण देखते हुए हर कोई कहता था कि यह वहुत ही होनहार वालक है जैसा कि इसको देखने मात्र से ही मन में शान्ति की अनुभूति होती है। वहुत ही छोटी आयु में आप श्री गुरुग्रन्थसाहिब के पाठी हो गए। २० वर्ष की आयु में आप नौकरी की तलाश में पेशावर गये जहाँ श्रीमान् महन्त मिश्रा सिंह जी महाराज के दिव्य दर्शन हो गये। यहाँ पर महन्त मिश्रा सिंह जी का वैराग्यमय गुरुवाणी कीतन सुनते ही आपका मन सांसारिक भोगविलास नौकरी से उपराम हो गया तथा एक वाहिगुरु की ही नौकरी चाहने लगे। एक दिन एकान्त में महन्त मिश्रा सिंह जी के चरणों में अपनी दिली इच्छा जाहिर किये। महन्त जी ने आपकी यह पारमार्थिक प्रवृत्ति को देखकर आप को अपने साथ ही अमृतसर ले आये।

अमृतसर आकर आपने सेवा, नाम सुमिरन तथा ब्रह्मविद्या-अध्ययन किया। महन्त श्री मिश्रा सिह जी महाराज के आदेशानुसार पण्डित श्याम सिंह जी ने आपका विद्या-अध्ययन हेतु मार्ग प्रशस्त किया। आपकी शान्तप्रिय प्रवृत्ति एवं सेवाभाव तथा नाम सुमिरन की भावना देखकर महाराज मिश्रा सिंह जी वहुत ही प्रसन्न रहा करते थे। सन् १८७७ ई० में आपको डेरे की वसीयत लिखकर अपने हाथ से पगड़ी दे दी। यद्यपि डेरे की व्यवस्था एवं अतिथिसेवा आप पहले भी किया करते थे; किन्तु जिम्मेवारी के मिलते ही आपने डेरे की व्यवस्था ऐसी की कि अमृतसर से निकलकर आपका यश सम्पूर्ण निमल भेष में विभूषित होने लगा और आपका गुणगान जन-जन में होने लगा।

आपने काफी हद तक साधु-सन्तों को अपने साथ ही रखकर विद्याध्ययन में प्रवृत्त किया। आपके द्वारा जारी विद्या का प्रवाह आज तक अबाध रूप से निरन्तर चलता चला आ रहा है। आपके परम दयालु स्वभाव तथा कोमल हृदय की एक घटना स्मरणीय है। सन् १८९९ ई० में जब अमृतसर में प्लेग की बीमारी फैली तब एक यात्री इस डेरे में बीमार पड़ गया। कमेटी वालों को जब पता चला कि कोई यात्री इस डेरे में प्लेग रोग मे ग्रस्त पड़ा हुआ है तो सारा अमला मय डाक्टरों के डेरे पहुँच गया। यात्री को डेरे से वाहर करने के लिए जब महन्त श्री महाराज से कहा गया तब आप ने कहा – भाई ! जिस कारण आप लोग आये हैं वह हमसे नहीं होगा।

यह यात्री परदेश में बीमार है, अगर इस दुःखी का सहारा हम सन्त नहीं होंगे तो कौन बनेगा। अतः इस हालत में हम इस दुःखी को डेरे से बाहर नहीं कर सकते। इस प्रकार का खरा जवाब सुनकर सभी चले गये। पुनः डिप्टी कमीश्नर आये और उसने भी कहा महन्त जी ! इस प्लेग के मरीज को बाहर निकाल दीजिये, अन्यथा इसके मर जाने पर पूरे डेरे में आग लगवा दूँगा। आप बड़े ही निर्भीक होकर सहज स्वभाव से जवाब दिये। अगर डेरा जलाओगे तो जला देना किन्तु मेरे जीते जी दुःखी को डेरे से बाहर करना असंभव है। डिप्टी कमीश्नर यह सुनकर गुस्से में आ गया, तथा तीन चार सौ पुलिस को साथ लेकर जबरदस्ती उस मरीज को डेरे से बाहर ले गया। बाहर जाते ही वह मर गया। इधर पुलिस ने डेरे के साधुओं को बाहर निकाल कर डेरे में आग लगा दिये। किन्तु महन्त रतन सिंह जी महाराज के वचनानुसार मगन रहे।

"आवत हरख न जावत सोगा।"

डिप्टी कमीश्नर ने बाद में बहुत ही पश्चात्ताप किया। तदनन्तर महाराज रतन सिंह जी ने कहा—दुःख मनाने की कोई बात नहीं। हम उस गुरु के शिष्य हैं जिसने गरम रेत पर रखे, खौलते हुए कड़ाहों में शान्ति पूर्वक बैठे रहे। कमीश्नर यह बात समझ न सका। तब पुनः महाराज ने पञ्चम बादशाह की शहीदी का सारा प्रसङ्ग कमीश्नर को सुनाया। सुनकर डिप्टी कमीश्नर ने महन्त जी के चरण छुए तथा श्री गुरु अर्जुन देव जो महाराज को शुक्रिया अदा किये।

आपके तप-तेज का यश इतना फैला कि डेरा दिनोंदिन बढ़ता गया। गुरुवाणी तथा वाहिगुरु नाम के ऐसे रसिक थे कि सुबह अमृतवेला में ८-८ घंटे तक लगातार एक आसन पर बैठे प्रभु-चरणों में ध्यान मग्न रहते। यह नियम आपका अंतिम समय तक कायम रहा। आपके शान्त स्वभाव का हर निर्मल साधु पर इतना गहरा प्रभाव पड़ा कि सम्पूर्ण निर्मल साधु-समाज आपको अत्यधिक संम्मान की दृष्टि से देखता था। सन् १९२०-२१ ई० में जब अकाली लहर फैला तो आप ने अपने अधिकारों की रक्षा के लिए निर्मल सम्प्रदाय की ओर से "निर्मल महामण्डल" की स्थापना की और उसके प्रथम अध्यक्ष सर्वसम्मत से आप ही को चुना गया। कई वर्षों तक आप इस पद पर रहकर निर्मल सम्प्रदाय की सेवा करते रहे।

आप से ही गुरु दीक्षा लेकर स्वामी भगत सिंह जी महाराज पिण्डी घेब वाले ने निर्मल सम्प्रदाय में प्रवेश पाया। महाराज महन्त रतन सिंह जी के अनेक शिष्य हुए जिनमें कुछ प्रमुख शिष्य बाबा पं० प्रेम सिंह जी षड्दर्शनाचार्य, बाबा लाल सिंह जी, ज्ञानी हाकम सिंह जी, बाबा पाल सिंह जी, सन्त हरनाम सिंह जी, सन्त लक्ष्मण सिंह जी, भाई लाभ सिंह जी, सन्त सुन्दर सिंह जी तथा आप के उत्तराधिकारी श्रीमान् महन्त हाकम सिंह जी महाराज इत्यादि।

अन्ततः १० वर्ष की अवधि में चैत्र मास के सन् १६३० ई० को अमृतसर में ही आप वैकुण्ठधाम को चल बसे।

स्वामी भगत सिंह जी महाराज पिण्डी घेव वाले :—

स्वामी भगत सिंह जी महाराज निर्मल भेष में महान प्रतिभा वाले साधु हो चुके हैं। आपकी उज्ज्वल कीर्ति भजन-सुमिरन, नामवाणी का प्रचार, सहजधारी बच्चों को अमृतपान कराना, कम खाने, कम सोने, कम बोलने में थी। आप निर्मल भेष में उच्चकोटि के महापुरुष एवं तेजस्वी साधु थे। बाद में आपसे प्रभावित हुए महापुरुषों एवं शिष्यों ने आपके गुण-गौरव का गान अहर्निष किया।

महाराज श्री महन्त पं० स्वामी सुच्चा सिंह जी आप की सेवा में किस तरह लिप्त हुए, इस प्रसङ्ग से पहले महाराज स्वामी भगत सिंह जी के जीवन पर संक्षिप्त रूप में रोशनी डालना अत्यधिक आवश्यक है।

स्वामी भगतसिंह जी महाराज का जन्म पश्चिम पंजाब (पाकिस्तान) में पिण्डी घेव जिला कैमलपुर में सन् १८५४ ई० ज्येष्ठ सुदी पूर्णिमा के दिन माता मूर्ति तथा भाई गौहर सिंह जी चचड़ा के घर में हुआ था। पाकिस्तान बनने से पूर्व ही यह हिन्दू, सिख एवं मुसलमानों का एक मनोहर इलाका था। यहाँ के लोग धार्मिक, सामाजिक एवं आर्थिक दृष्टि से खुशहाल थे। सभी सम्प्रदायों में आपसी सौमनस्यता तथा प्यार के कारण वातावरण बहुत ही अच्छा था। भाई गौहर सिंह जी गुरुवाणी के जाने माने विद्वान् तथा सदाचारी गुरुमुख सिख थे। आप की धर्मपत्नी मूर्ति देवी जी अत्यन्त साध्वी प्रवृत्ति की थीं। स्वामी भगत सिंहजी के पवित्र विचार अपने माता-पिता के खून तथा पूर्व जन्म के संस्कारों से युक्त थे। भाई गौहर सिंह जी के दो पुत्र रत्न और भी थे जिनका नाम भाई मोहर सिंह तथा भाई अंगीर सिंह था। यह जुगल जोड़ी भी अपने सन्त रूप माता-पिता से गुरुमत्त की शिक्षा लेकर नाम दान के रंग में रँग चुकी थी।

प्रारम्भिक शिक्षा :—

पाँच वर्ष की आयु में स्वामीजी को भाई गुरुदित्त सिंह जी की पाठशाला में पढ़ने के लिए भेजा गया। भाई साहब उन दिनों गुरुमत्त के प्रमुख ज्ञानी थे। अल्प समय में ही स्वामी जी ने श्री गुरुग्रन्थसाहिब जी का पाठ तथा अन्य छोटे-छोटे गुरुमत्त ग्रन्थों को विचार लिया। आप की लिखावट बहुत ही सुन्दर थी। आप जिसको भी गुरुवाणी का अधिकारी समझते उसी को पोथी एवं गुटका लिखकर देते। इस काम में आप के माता-पिता तथा भाई गुरुदित्त सिंह जी ने आपको उत्साहित किया और ग्रन्थों के अतिरिक्त आपने पाँच श्री गुरुग्रन्थसाहिब लिखे जिनका दर्शन करने से मन शान्त

हो जाता है। यह ग्रन्थ कब और कहाँ लिखे गये इसका विधिवत विवेचन आगे किया जायेगा। आपने निम्नलिखित गुरुवाक्यों को हृदयङ्गम किया था—

"हरिजसु लिखहि लाए भावनी से हस्त पविता।
हरि जसु लिखहि बेअंत सोहहि से हथा॥

हरिभजन में आपकी अत्यधिक अभिरुचि थी। जैसा कि ग्रन्थ लिखने के पश्चात् खाली समय निकालकर आप एकान्त में बैठकर हरिभजन सुमिरन में व्यतीत करते थे। आपके गुणों का गान लोग करते फिरते थे तथा हरिसुमिरन देखकर आश्चर्य चकित हो जाया करते थे। आपको प्राप्त कर आपके माता-पिता अपने को भाग्यशाली समझते थे। बाल्यावस्था में ही आपका वाणी पर पूर्णतया नियंत्रण हो गया था तथा अल्पाहार, श्वान सदृश निद्रा को आपने अपने जीवन का आधार बना रखा था। स्वामी जी ने घर में रहते हुए ही उपराम वृत्ति अपनाकर आध्यात्ममार्ग का चुनाव कर लिया था जिससे माता-पिताको यह संदेह होने लगा कि कहीं आप साधु ही न बन जायँ। माता-पिता ने जब इस साधु प्रवृत्ति से ओत-प्रोत आपको देखा तो एक कुलीन परिवार में सुशीला कन्या के साथ सगाई पक्की कर ली, किन्तु आपके इनकार कर देने से इस कार्य में सफलता न मिल सकी।

सन्त मार्ग की ओर तीव्रगति से बढ़ते आपके कदम देखकर जहाँ एक तरफ प्रसन्नता हुई वहीं दूसरी ओर निराशा की भी अनुभूति हुई। माताजी ने एक दिन बातों ही बातों में पूछा कि बेटा! क्या तूने सगाई इसलिए नहीं स्वीकार की कि मैं आजाद होकर फकीरों की तरह जंगल-जंगल घूमूँ। स्वामीजी ने प्रसन्न मुद्रा में मातृभक्ति के अधीन होकर वचन दिया कि माताजी जब तक आपका शरीर है तब तक मैं घर से बाहर नहीं जाऊँगा। यह प्रण आपने पूर्ण किया। आप घर में ही सन्त प्रवृत्ति से रहते हुए प्रभुचिन्तन करते रहे तथा जब तक माता मूर्ति जी का शरीर रहा तब तक आप घर के बाहर पाँव नहीं डाले। अहर्निश माताजी की सेवा करना, ग्रन्थ लिखना, हरिपूजन, सुमिरन करना आपका नित्य नियम था। आपको लोग पूर्णतया साधु समझते थे तथा श्रद्धायुक्त होकर चरण स्पर्श करते थे।

हजूरसाहिब की यात्रा :—

आपकी यह सबसे बड़ी खासियत थी कि आप एकान्तप्रिय एवं सात्विक वृत्ति वाले थे। माताजी के देहावसान के उपरान्त आपका सम्पूर्ण समय प्रभु-सुमिरन में ही व्यतीत होता था। आपने—

गुरमुखि खोजत भए उदासी,
दरसन कै ताई भेख निवासी।
साच वखर के हम वणजारे,
नानक गुरुमुखि उतरसिपारे॥ पृष्ठ ६३९

के आधार पर किसी गुरुमुख की खोज में सत्य व्यापार के लिए तथा अज्ञान, अँधेरे में से अपने को निकालने के लिए यात्रा शुरु कर दिये—

सतिगुरु मिलै अंधेरा जाए,
नानक हउमै मेटि समाए ॥ पृष्ठ ६३५

सन् १८७८ ई० में आपने दुःख भंजनी थोहा खालसा जिला रावलपिण्डी (पाकिस्तान) पहुँचकर सन्त निहाल सिंह जो "ठाकुर" के दिव्यदर्शन किये, तथा आप डेरे में हो रहे सन्तसङ्ग में बैठकर कथा-कीर्तन का आनन्द लेना शुरू कर दिये। ठाकुर जी महाराज संस्कृत साहित्य में आचार्य थे तथा निर्मल सम्प्रदाय के प्रसिद्ध विद्वान् थे जिनसे आपने "मोक्षपन्थ प्रकाश" तथा वेदान्त के वहुत से ग्रन्थों का अध्ययन किया था। यहीं पर रहते हुए आपने श्री गुरुग्रन्थसाहिब जी की एक प्रति लिखकर पूर्ण किये, जो आप की एवं डेरे की शोभा का कारण बनी। इसी प्रकार इसी स्थान पर आपने रहकर वेदान्त के उत्तम ग्रन्थों का गहन अध्ययन किया तथा कथा-कीर्तन का आनन्द प्राप्त किया। जब आप अपने पूर्व के निर्धारित कार्यक्रमानुसार प्रस्थान करने लगे तो सङ्गत ने प्रेम भावना प्रकट करते हुए कुछ दिन और रुकने की प्रार्थना की। तदनन्तर आप ने श्री हजूरसाहिब जाने की इच्छा प्रकट करते हुए वहाँ से विदा लिए। वहाँ से चलकर आप डेरा मुराला जिला गुजरात आ गये। उस समय डेरे के संचालक बाबा विशन सिंह जी थे। बाबा जी गुरुघर के तथा षट्शास्त्रों के विख्यात विद्वान् होने के साथ ही गुरुवाणी के भी ज्ञाता थे। आपसे— स्वामीजी ने श्री गुरुग्रन्थसाहिब जी की आन पूर्वी कथा श्रवण की, जिन-जिन शब्दों की कथा होती थी उनको सुनकर अच्छे ढंग से सुन्दर अक्षरों में लिखकर पूरे एक वर्ष की कथा को एक जगह संकलित कर लिये और उसे वावा विशन सिंह जी को भेंट किया। वहाँ से आपने गुजरावाला, लाहौर आदि स्थानों पर गुरुधामों के दर्शन करते हुए श्री अमृतसर पहुँचकर रामदास सरोवर में स्नान किया। इसके पश्चात् डेरा वावा मिश्रा सिंह जी में पहुँच कर शान्तात्मा महन्त रतन सिंह जी के दर्शन किये। यहाँ से चलकर रास्ते में हो विभिन्न गुरुधामों एवं तीर्थ तपस्थलियों के भी दर्शन करते हुए श्री हजूरसाहिब पहुँच गये।

श्री हजूरसाहिब में रहते हुए आप ने कठिन तपस्या की, लङ्गर के जूठे बर्तन साफ करना, जङ्गल से लकड़ी लाना तथा गुरुसाहिब जी के पवित्र पावन स्थान को साफ करना इत्यादि था। यहीं पर सन्त अतर सिंह जी मस्तुआने वाले से मिलाप हुआ। यही पर ही गुरुमतानुसार श्री तख्तसाहिब से अमृतपान किया, इस तरह तीन वर्ष लगातार अविचल नगर श्री हजूरसाहिब में रहकर सेवा, प्रभु-सुमिरन की कठिन तपस्या करके आपने पुनः अमृतसर की ओर प्रस्थान किया।

अमृतसर पहुँचकर श्री दरबारसाहिब के दर्शन करने के पश्चात् स्वामीजी पूर्ण योगी श्रीमान् १०८ महन्त रतन सिंह जी की शरण में आ गये। महन्तजी महाराज का जीवन स्वर्ण अक्षरों में लिखने योग्य है। आपकी ओर हठात् आकर्षित होकर स्वामीजी चले गये। एक दिन एकान्त समय में स्वामीजी ने अपने दिल की इच्छा आपसे जाहिर की जिसे सुनकर आप बहुत प्रसन्न हुए तथा स्वामीजी को गुरुमंत्र देकर सन्त-स्वरूप को कायम रखने हेतु वचन लिया। इस घटना को ज्ञानी अर्जुन सिंह जी घेवा ने अपने कुण्डलिया में इस प्रकार लिखा है —

अमृतसर में निर्मले सन्तों का डेरा,
मिश्रासिंह प्रसिद्ध था इक साधु चंगेरा।
साधु चंगेरा रतनसिंह उनका था चेला,
अपने सन्तों का थां उन सङ्ग हुआ मेला।

निर्मल भेष आपार डाला पल्ला गल में,
बने "निर्मले सन्त" पहुँच कर अमृतसर में॥

निर्मल सुन्दर भेष है ऐसा और न कोई।
करके मैल से रहित उज्ज्वल कर देवे जोई॥

जो भी कोई आ गया इस सुन्दर भेखे।
मिटे उसके लिखे हुए यमों के लेखे॥

निर्मल वाणा देख दौड़ जाए सारे कलमल।
धर्म राय डर जाए देख कर साधु निर्मल॥

कुछ दिन गुरु चरणों में रहकर आप पिण्डीघेव पहुँचे। आपने "सोल नदी" के किनारे अपना डेरा बना लिया जो बाद में चलकर सन्तपुरा नाम से प्रसिद्ध हुआ। यहीं पर आपने एक गुफा भी बनाई जिसमें आपने कई वर्षों तक निराहार रहकर गुरु शब्द की कठिन तपस्या की। आपकी यश सुगन्धि चारों तरफ फैलने लगी। जिज्ञासु भ्रमर आने लगे तथा आप से शब्द ग्रहण कर अपनी ज्ञान-पिपासा शान्त कर गुरु शब्द में जुड़ने लगे। एक दिन आपको श्री गोइन्दवालसाहिब के दर्शन करने की इच्छा जागृत हुई। आप सन्त मण्डली तथा भक्त मण्डली समेत श्री गोइन्द-वाल आ गये। इस पवित्र तपःस्थली की बावली में चौरासी सीढ़ीयाँ हैं। हरजपुजी साहिब के पाठ के उपरान्त बावली में स्नान करना पुनः दूसरी सीढ़ी पर पाठ करना ही इस स्थान की मर्यादा है। आपने सभी सन्तों समेत तीन दिन तक लगातार इस विधि से पूजन एवं अर्चन किया। एक दिन सायंकाल में जब आप "व्यास" नदी के किनारे घूमने गये तो आप की दृष्टि एक ऊँचे थेह पर गयी। यह थेह

धूंदा गाँव तथा गोइन्दवाल के मध्य में स्थित है। पूर्व काल में बाबा आलासिंह जी इस स्थान पर रहकर तपस्या करते थे। उनके पश्चात् यह खण्डहर हो गया था।

स्वामीजी ने नाम वाणी के अभ्यास सहित श्री गुरु अमर दास जी की पावन छाया में अपना जीवन व्यतीत करने का संकल्प किया। सन्त समाज सहित यहाँ पर डेरा लगा लिया। जब आस-पास के गाँवों के प्रेमी जनों को ऐसे महापुरुषों के आने का पता चला तो अपने आप दर्शनार्थियों की भीड़ जुटने लगी, लङ्गर का प्रवाह चलने लगा। श्रीगुरुग्रन्थसाहिबजी के प्रकाश के लिए एक सुन्दर हरि-मंदिर तैयार हो गया। यहाँ रहकर सन्त, महात्मा तपस्या करने लगे। इस तरह की तपस्या से स्वामी जी की—

कबीर तू तू करता तू हुआ,
मुझ में रहा न हूँ।
जब आपा पर का मिट गया,
जत देखा तत् तू॥

कबीर जा कउ खोजते,
पाइउ सोई ठौर।
सोई फिर के तू भया,
जाकउ कहता और॥

वाली स्थिती हो गई।

बहुत ही कम दिनों में यह स्थान पुनः पूरे पंजाब प्रान्त में प्रसिद्ध हो गया। यहाँ पर ही श्री १०८ श्री महन्त साहिबजी का मिलन स्वामीजी से हुआ।

आपसे उपदेशित सन्त एवं शिष्यगण—

जिन्हें आपने ज्ञानदीप देकर आम जनता को शुभमार्ग दिखाने के लिए प्रेरित किया उन महापुरुषों में से कुछ के नाम इस प्रकार हैं—

सन्तशिष्य—

श्रीमान् सन्त रामसिंहजी ज्ञानी (हजूरसाहिब वाले)
" दीदारसिंहजी ज्ञानी
" रामसिंहजी ज्ञानी
" किरपासिंहजी
" भागसिंहजी
" जीवनसिंहजी
" मङ्गलसिंहजी धूंदाथेहसाहिब

श्रीमान् सन्त इन्दरसिंहजी पिण्डी घेव

,, मित्तसिंहजी विरक्त

,, गुरुदयालसिंहजी वैद्यराज

,, नारायणसिंहजी महन्तधूंदाथेह

,, जस्सासिंहजी निहंग

,, सन्तसिंहजी क्षेत्र वाले अमृतसर

,, रामसिंहजी किंगवाले

,, सन्तसिंहजी विरक्त

तथा श्रीमान् १०८ श्री महन्त पण्डित सुच्चासिंहजी महाराज श्री निमल पंचायती अखाडा कनखल (हरिद्वार) प्रमुख थे ।

गृहस्थ शिष्य—

सन्त हरिसिंहजी, भाई खजानसिंहजी झाम, सन्तसिंहजी भूटानी, गण्डा सिंहजी चड्डा, हुक्मासिंहजी खडपोची, अमीतसिंहजी भूटानी, बाबा तेजासिंहजी भल्ले लाहौर, नारायणसिंहजी जौहर, ज्ञानी बलवन्तसिंहजी ग्रन्थी, अमरीकसिंहजी जौहर, भाई गोपालसिंहजी ग्रंथी, महासिंहजी जौहर, भक्त जैरामसिंहजी जब्बी दिलावर, स० प्रेमसिंहजी सेठी इत्यादि प्रमुख रहे हैं ।

मास्टर नारायणसिंहजी, बी० ए० डिंग जिला गुजरात, रामसिंहजी जग्गी, सरदार अमीरसिंहजी दंदी वाले, स० रामसिंहजी धूंदा, भाई सुन्दरसिंहजी दर्जी धूंदा, भाई जस्सासिंहजी धूंदा, भाई चेतसिंहजी धूंदा, महापुरुष बाबा जस्सासिंहजी झंडेर, बाबा गुरुमुखसिंहजी भल्ला गोइंदवाल, बाबा सुचेतसिंहजी भल्ला गोइंदवाल, बाबा गंडासिंहजी भल्ला गोइन्दवाल, मास्टर भगतरामसिंहजी बी० ए०, बी० टी० रावलपिण्डी आदि सहजधारी शिष्यों ने आप से अमृतपान किया तथा भक्त नानकचन्दजी रावलपिण्डी, भक्त मोहरामल्लजी लांबा, भक्त लखमीचन्दजी लांबा, भक्त नारायणदासजी लांबा पिण्डी घेव, लाला लोडींदामल्लजी सेठी, भक्त मल्लाशाह दिलवागी, लाला हेमराज लांबा, लाला गोदुड़शाह जंगी, लाला गोदड़शाह बजाज, भक्त जैरामजी अमदालवाले, लाला रामचन्द दंदी, लाला लधारामजी ठेकेदार, लाला फतेहचन्द, भक्तपालाशाहजी कमडियालवाले आदि भक्तजनों ने आप से नाम वर्षा की बूंद प्राप्त कर शान्ति प्राप्त की तथा औरों को शान्ति के मार्ग पर लगाया ।

बैकुण्ठ गमन—

पिण्डीघेव से धंदाथेहसाहिब आए अभी आप को तीन माह ही व्यतीत हो पाये थे कि आप का शरीर व्याधिग्रस्त हो गया । इस खबर को सुनकर

आपके शिष्यगण आप के पास इकट्ठे होने शुरू हो गये। अन्त में आप के भक्तों को पीड़ित करनेवाली वह घड़ी भी आ गयी जब इस पञ्चभौतिक शरीर का पिंजरा खाली कर आप ने अपने निजस्वरूप में समा जाने की तैयारी की। उस समय आप के हज़ूर भक्त हरिचन्द जी पिण्डी घेव, वावा जस्सासिंहजी झंडेर, भाई चेत-सिंहजी धूंदा, भक्त ठाकुरदासजी, महन्त नरायणसिंहजी थे। स्वामीजी ने अपने अंतिम श्वासों को परब्रह्म परमात्मा में लीन करते समय शिष्यों को अपने पास बुलाकर कहा 'शरीर सवका नाशवान है, इस शरीर में निवासकर रही सत्ता अविनाशी है'—

साधो इहो तनु मिथिआ जानो।
या भीतर जो राम बसत है,
साचो ताहि पछानो॥

तथा

जो दीसै सो संगल बिनासै।
जिउ बादर की छाई॥
जन नानक जग जानो मिथिआ।
रहिउ राम सरणाई॥

गुरुसाहिबजी के इन वचनों द्वारा शरीर पर आशा न रखकर अपनी आशा गुरुशब्द पर ही रखनी चाहिए। इस तरह सद् उपदेश देते हुए शरीर की नश्वरता तथा आत्मतत्त्व की सत्ता का ज्ञान देकर कहा "तुम सब प्रेमी बाहर बैठकर एक मन होकर श्री जपुजी का पाठ करो, हमारे पास केवल महन्त नारायणसिंहजी को ही रहने दो"। इसके बाद स्वयं स्वामी जी ने महन्त नारायणसिंहजी से कहा "तुम मूल मंत्र का पाठ करते रहना, मुझे वुलाने की चेष्टा मत करना। हमारा बिस्तर एक तरफ लगाकर अपने मन को गुरुशब्द के साथ लगाना'। स्वामीजी का आसन तैयार कर दिया गया। जब स्वामीजी अपने आसन पर विराजमान हो गये तो महन्त नारायणसिंहजी ने मूलमंत्र का पाठ शुरू कर दिया। स्वामीजी ने जपुजीसाहिब के अंतिम श्लोक की समाप्ति पर—

सूरज किरण मिले,
जल का जल हुआ राम।
जोती जोती रली,
संपूरण थीआ राम॥

पढ़कर कुछ देर समाधि में स्थित रहे पुनः हाथ जोड़कर शीश झुका, चादर ओढ़ लेट गये। महन्त नारायणसिंहजी ने यह सारा दृश्य देख बाहर बैठे प्रेमी जन को भीतर बुलाया। जब मुख से कपड़ा हटाया तो स्वामी जी—

हरि हरिजन दुई एक हैं,
बिव विचार कछु नाहि।
जल ते उपज तरंग जिऊ,
जल ही विखै समाए॥

के हुकुम से १८ पौषमास सन् १९२१ ई०, दिन रविवार की अमृतवेला में पार्थिव शरीर को परित्याग कर परब्रह्म परमेश्वर में अभेद हो गये। सतसङ्ग प्रेमियों में विरह वेदना चुभने लगी। कुछ प्रेमियों ने श्री अमृतसर पहुँचकर श्रीमान् महन्त रतनसिंहजी को यह बात सुनाई। महन्त जी महाराज सन्त मण्डली सहित थेह-साहिब पहुँच गये। महन्त जी महाराज के पहुँचने से पूर्व ही प्रेमीजनों ने स्वामी जी के पार्थिव शरीर को विवान में सजाकर रखा। तत्पश्चात् महन्त रतनसिंहजी ने सुगन्धित सामग्री सहित अंतिम संस्कार किया। यह दृश्य बहुत ही वैराग्यमय था। स्वामीजी महाराज के सभी प्रेमीजन, पिण्डीघेब, लाहौर, रावलपिण्डी, अमृतसर तथा आस-पास के गावों से पहुँच गये। शब्द कीर्तन की वर्षा हो रही थी। शब्द चौकी तथा गुरुवाणी का पाठ करके सारी सङ्गत डेरे आ गयी। इसके उपरान्त मर्यादा पूर्वक आप की पावन पवित्र अस्थियाँ चुनकर हरिद्वार ले जाकर गङ्गा में प्रवाहित कर दी गईं।

तंवर (तूर) खानदान

विक्रमादित्य के वंश में से तंवर खानदान ने ७ वीं शताब्दी विक्रमी में कन्नौजपर अधिकार किया तो उस वंश के राजा अनंगपाल ने ६ वीं शताब्दी में दिल्ली को ६ वीं बार पुनः आबाद करके 'लालकोट' नामक किला बनाया। इस वंश के अंतिम राजाओं ने भटिण्डाराज्य की राजधानी लाहौर चली जाने पर सतलुज तक मालवा देश पर शासन किया। इस वंश में २० राजे हुए। अंतिम राजा अग्निपाल ने पुत्रहीन होने के नाते १०७० में अपने दौहित्र पृथ्वीराज चौहान को दिल्ली का राज्य समर्पित कर दिया। इसके अधीन उस समय भटिण्डा, थानेसर, सरहिन्द, हनूर एवं तिहाड़ा में छोटे-छोटे मांडलिक राजा थे जो १३ वीं शताब्दी में मंजु राजपुतों ने जैसलमेर से आकर बरबाद कर दिये। आज तिहाडा किराडा वाला आदि के खण्डहर उस बरबादी की भयानकता को स्पष्ट करते हैं।

तंवर वंश की राजावली एवं राजावधि निम्नलिखित प्रकार से है—

क्रम०		नाम	राज-समय		
१.	श्रीमान्	अनंगपाल	१८ वर्ष		
२.	,,	वासुदेव	१६ ,,	१ माह	१८ दिन
३.	,,	धंधनव	२१ ,,	३ ,,	२६ दिन
४.	,,	पृथ्वीमल्ल	१६ ,,	३ ,,	१६ ,,
५.	,,	जयदेव	२० ,,	७ ,,	२८ ,,
६.	,,	नरपाल	१४ ,,	४ ,,	६ ,,
७.	,,	अवध	२६ ,,	७ ,,	११ ,,
८.	,,	वत्सराज	२१ ,,	२ ,,	१३ ,,
६.	,,	कीक	२२ ,,	३ ,,	१६ ,,
१०.	,,	रघुपाल	२१ ,,	६ ,,	५ ,,
११.	,,	नेकपाल	२० ,,	४ ,,	४ ,,
१२.	,,	गोपाल	१८ ,,	३ ,,	५ ,,
१३.	,,	सुलक्षण	२५ ,,	२ ,,	२ ,,
१४.	,,	जैपाल	१६ ,,	४ ,,	१३ ,,
१५.	,,	कंवर पाल	१६ ,,	६ ,,	११ ,,
१६.	,,	अनेकपाल	१६ ,,	६ ,,	१८ ,,

क्रम०	नाम	राज-समय		
१७.	श्रीमान् विजयपाल	२४ ,,	१ ,,	६ ,,
१८.	,, रामपाल	२१ ,,	२ ,,	१५ ,,
१९.	,, अग्निपाल	२१ ,,	२ ,,	१५ ,,
२०.	,, पृथिवीराज	२२ ,,	३ ,,	१६ ,,
	कुल ३९१ वर्ष	५ माह	१७ दिन	(आईने अकबरी से)

सूचना:—इसमें कुछ वर्षों की अशुद्धि है, क्योंकि ८५७ ई० में यह राज्य स्थापित हुआ। तबसे ११९३ ई० तक ३३६ वर्ष बनते हैं। अतः ५५ वर्षों की भूल है। यह भी हो सकता है कि तूरों का राज्य ८०२ ई० में दिल्ली पर हो गया हो।

चौहान वंशः—

सोमेश्वरदेव के पुत्र पृथ्वीराज (राएपथौरा) ने अपने नाना अग्निपाल तंवर से दिल्ली का राज्य प्राप्त किया। इसने अपने से कई गुना बलशाली जयचन्द कनौज वाले को हार दी थी तथा उसके सहायक परमादेव, परमाल आदि चंदेल एवं उसके जरनैल आला तथा ऊदल आदि को महोबे आदि के युद्ध-क्षेत्रों में कई बार हराया। इसकी बहादुरी के वृत्तान्त कवि चन्द्र वरदाई ने पृथ्वीराज रासो में अच्छी तरह लिखे हैं। इस अंतिम प्रतापी हिन्दू राजा को मुहम्मद गोरी ने ११९३ ई० में चावडी जिला करनाल के युद्ध-क्षेत्र में मारकर दिल्ली शासन पर अधिकार किया। इसके समय जंबर चौहान का गढ देरेडा, थानेसर, सौढोर, पलट, सुनाम, पायल, सालबाहनपुर, लऊहारु, रोहिताख हजारु एवं सरसा प्रसिद्धनगर तथा कई उप राजधानियाँ थीं।

इन राजों के अधीन सुनाम में वरिआह राजपूतों की चौधरी थी, धौले तपे पास धालीवाल, हांसी, हंसार सरसा पर सराऊ, बागड में चौहान, लखी जंगल में जोधे, पूरवे धर्मकोट, चूसक में पंजतूर, फरीद कोट के आस-पास तूर वंश वाले थे।

□

भिंडर कलाँ का इतिहास

ज्ञानी बलवन्तसिंह जो कोठा गुरु

भिडराँ वाले सन्त एवं श्री महन्त जी महाराज

'जेहा डिठा मै तेहो कहिआ ।
तिसु रसु आया जिन भेद लहिआ,
सन्तन की सुणि साची साखी'
सो बोलहि जो पेखहि आखी ।
सन्तन की महिमा कवन वखानउ,
अगाधि बोधि किछु मिति नही जानउ,
पारब्रह्म मोहि किरपा कीजै
धूर संतन की नानक दीजै ।' पृष्ठ—१८१

"भिडराँ वाले सन्त" यह जाना पहचाना शब्द है। "भिंडर कलाँ" तथा "भिंडर खुरद" यह एक साथ सटे हुए दो गाँव हैं। केवल नाम-भेद तथा राजकीय कागजों के कारण ही भिंडर के साथ "कलाँ" तथा "खुरद" शब्द का प्रयोग होता है। वस्तुतः गाँव एक ही है। भिंडर नाम के गाँव "माझे" तथा "दोआबे" में भी हैं। परन्तु जिस गाँव का वर्णन हम लोग करने जा रहे हैं वह सतलुज नद के "कावां वाला पत्तन" के निकट थाना धर्मकोट, तह० जीरा, जिला फिरोजपुर में मोगा मण्डी से १४ किलोमीटर दूर है।

प्राचीन दृष्टि से देखें तो इस गाँव का इतिहास दिल्ली के राजपूत वश तूर से जा मिलता है। काल गति से यह वंश शासन करता हुआ पतन को प्राप्त हुआ। दुर्दैव से दिल्ली भी छूट गई। इन लोगों ने दिल्ली से प्रस्थान कर दिया। जो कबीला पञ्जाब की ओर आया वह राजपूत वंशज तूर थे। इधर आकर इन लोगों ने काफी गाँव बसाए जिनमें से एक यह भिंडर है। इस पूरे गाँव का एक ही गोत्र तूर है। इन्हीं तूरों को पुरातन ग्रन्थों में तुरवंश, तरवंश, तंवर, तंवार इत्यादि से लिखा है। पुराणों के अनुसार राजा ययाति के पुत्र तरवसु का वंश है।

इस गाँव के नाम एवं स्थान के ज्ञान के बारे में प्रचलित लोक-गाथाओं के अतिरिक्त अन्य कोई साधन नहीं। इस गाँव को आबाद करने वाला "चंनण" नाम का वृद्ध पुरुष था जो अपने काफिले सहित ५०० वर्ष पूर्व यहाँ आकर रहने लगा। यह वह

समय था जब श्री गुरु नानक देव जी महाराज अवतार लेकर संसार का कल्याण कर रहे थे। यहाँ पर "समन" नाम के महात्मा का निवास था। "चंनण" ने भी सन्त के समीप अपना डेरा लगा दिया तथा उसकी सेवा में तत्पर रहने लगा। महात्मा समन ने यहाँ गाँव बसाने की आज्ञा दी तथा बताया कि यह भूमि तप-तेज वाली है। यहाँ जंगली भेड़ ने बाघ को अपना शिशु (लेला) नहीं उठाने दिया था। यह स्थान उस समय सतलुज के तट पर था। चंनण ने अपने बड़ों के नाम पर इसे "भिंडर" नाम से बसाया। चंनण का अर्थ होता है 'चन्दन' चन्दन का वृक्ष सुगन्धी देता है और सबको अपना रूप हो बना लेता है। यह चंनण (चन्दन) का पेड़ भी संसार को आध्यात्मिक खुशबू दे रहा है

यह कथा भो प्रचलित है कि सतलुज के कावां वाले पत्तन द्वारा जो यात्री दोआबे से मालवे की तरफ आते थे वह यहाँ पर ही विश्राम करते थे। यहां शुरू से ही साधुओं के डेरे होने से यात्रियों के लिए लंगर चलते थे जिसे साधु-भाषा में 'भंडारा' कहते हैं। इसी भंडारे का अपभ्रंश रूप भिंडर बन गया है। संत समन का डेरा तथा उसके हाथों द्वारा लगाया नीम का वृक्ष गांव की श्रद्धा के केन्द्र हैं।

यह स्थान आदि काल से ही रमणीक चला आ रहा है। सतलुज ने इसे और भी रमणीय बनाया है। रमणीकता इसके कण-कण में समा गई है तथा इस बीसवीं शताब्दी के वैज्ञानिक युग में और बढ़ी है। विधाता ने पता नहीं इसे कितने आशीर्वाद दिये हैं। धन-धान्य से यह गांव भरपूर है। हरे-हरे धान, गेहूँ, सब्जी की खेती, बागों के फलों से लदे वृक्ष, टयूबेलों से चाँदी सदृश बहती हुई जल धाराएं, निश्छल तथा मधुर भाषी किसान, खेतों में काम करते हुए मन को मोह लेते हैं।

सा धरती भई हरीआवली,
जिथै मेरा सतिगुर बैठा आए।
से जंत भए हरीआवले
जिनी मेरा सतिगुर देखिआ जाए ॥ (पन्ना १३०)

पञ्जाब सिक्खी का घर है। इसका बच्चा २ सिक्खी को पहचानता है। परन्तु यह भिंडर सिक्खी का केन्द्र है। जब मोगा पार करके जलालाबाद की सड़क पर चलें तो बाल-वृद्ध, नर-नारी सभी अमृतधारी मिलेंगे। सभी विवेक बुद्धि सम्पन्न, नम्र, गुरुमुख, नाम वाणी में रङ्गे हुए मिलने पर पहले ही "वाहिगुरू जी का खालसा वाहिगुरूजी की फतह" कहते हुए चरणों पर झुक जाते हैं।

जैसा सुन्दर आध्यात्मिक रूप इस गांव का है वैसा ही भौतिक स्वरूप भी। लड़के तथा लड़कियों के दो हाई स्कूल हैं जिनकी इमारतें भव्य हैं। गाँव की वीथिकाएं पक्की हैं। पशुओं का अस्पताल, पञ्जाब ऐंड सिंध बैंक की शाखा, टेलीफोन

केन्द्र, डाकघर एवं अनाज का क्रय केन्द्र भी है। गांव के चौतरफा पक्की सड़क है तथा मोगा से प्रति घंटे उपरां त बस सेवा भी है।

गांव के विकास कार्य में प्रसिद्ध उद्योग-पति तथा पञ्जाब के भू० पू० विद्या मन्त्री स० सोहन सिंह जी बासी का प्रयास प्रशंसनीय है जिन्होंने अपने पिता स्वर्गीय भाई लाल सिंह जी की याद में पांच लाख रु० की लागत से २५ बिस्तरों का अस्पताल तथा हाई स्कूल में एक हाल का भो निर्माण कराया है।

विश्व में बड़े-बड़े शहर, तीर्थ तथा अन्य स्थान हैं जो सभी अपनी जगह महान हैं। परन्तु भिडर गांव साधु-धूलि के कारण पञ्जाब में ही नहीं अपितु विश्व में देदीप्यमान हो रहा है।

कई ऐसे गांव हैं जहां पर राजनेता, देश-भक्त, साहित्यकार, डाक्टर, वैज्ञानिक, कुशल अभियंता तथा खिलाड़ी पैदा हुए हैं। परन्तु यह गांव विलक्षण है यहाँ ब्रह्म-ज्ञानी महापुरुषों का आविर्भाव सदा से ही होता आया है। इस गांव ने सम्पूर्ण भारत को कथा-कोर्तन, नाम-वाणी, सेवा-सुमिरन, भक्ति-शक्ति तथा ब्रह्मज्ञान को गङ्गोत्तरी प्रवाहित करके मानवता, विवेक, ज्ञान, सत्संग, सदुपदेश तथा सन्मार्ग प्रदान किया है। यह गांव महात्मा समन से लेकर अब तक मानव मात्र को सत्य के पथ पर अग्रसारित करता आ रहा है।

इस गाँव में बाबा खजान सिंह जी एक सद्-गृहस्थ, नाम-वाणी के रसिक, गुरु सिक्खी की युक्ति स्वजोवन से बताने वाले महान आत्मा थे। जिन्होंने अपने खेत में कुटिया बनाकर सवा लाख श्री जपुजी साहिब के पाठ किये थे। उस स्थान पर सन्त सुन्दर सिंह जी ने एक सुन्दर गुरुद्वारा स्थापित किया तथा पञ्जाब में पहली बार १२२ श्री अखण्ड पाठों की लड़ी सम्पूर्ण करके स्थान का नाम "अखण्ड प्रकाश" प्रसिद्ध किया। यह स्थान गुरुमत्त विद्या का केन्द्र तथा सिक्खी की टकसाल है। इसी से भिडर गाँव को अन्तर्राष्ट्रीय प्रसिद्धि प्राप्त हुई है। सुन्दर गुरुद्वारा तथा निर्माणाधीन हाल (१५० × १०, चारों तरफ १० फोट बरामदा, ऊपर गैलरी) अपने आप में एक मिसाल है। विद्यार्थियों के लिए कमरे, सुन्दर लंगर तथा प्रबन्धकों में नम्रता तथाँ सेवा की भावना श्लाघनीय है।

ब्रह्म-ज्ञानी सन्त सुन्दर सिंह जी ने सम्पूर्ण देश में मण्डली घुमाकर श्री गुरु-ग्रन्थसाहिब जी की २१ कथाएँ सम्पूर्ण की। नाम वाणी की वर्षा तथा लाखों प्राणियों को अमृत पान कराया। आपके तप प्रभाव से भिडरां वाली सम्प्रदाय विख्यात हुई। श्रीमान सन्त इन्दर सिंह जी ने भी तप-त्याग तथा नाम सुमिरन किया। (यह दोनों सत्पुरुष बाबा खजान सिंह जी के सुपुत्र हैं)

श्रीमान सन्त सुन्दर सिंह जी की चरण-शरण में रहते हुए सन्त गुरुबचन

सिंह जी 'खालसा' (गुरुद्वारा अखण्ड प्रकाश के जत्थेदार) सन्त गुरुदयाल सिंह जी बोपाराए सन्त आजायब सिंह जी लम्मा जट पुरा, सन्त नारायण सिंह जी लधाई के, ज्ञानी चेत सिंह जी, भू० पू० हेड ग्रन्थी श्री हरिमन्दिर साहिब, अमृतसर, पं० हकीकत सिंह जी "अरविन्द" रत्तोवाल आदि कितने ही "मैलागर संगण निम बिरख से चन्दनह" का रूप हो गए। इसी तरह सन्त गुरुबचन सिंह जी "खालसा" से वरोसाए हुए निर्मल आत्मा श्रीमान सन्त मोहन सिंह जी (इस स्थान के वर्तमान अधिष्ठाता), ज्ञानी कृपाल सिंह जी जत्थेदार श्री अकाल तख्त अमृतसर प्रसिद्ध हैं।

इसी गाँव की एक और पवित्र आत्मा उदासीन वर्य, विद्या दिवाकर स्वामी केशो दास जी महाराज अपने सुन्दर केश तथा दाढ़ी के कारण वशिष्ठ तथा व्यास जी का रूप प्रतीत होते थे। उनके शिष्य महन्त चेतन देव जो संस्कृत के अद्वितीय विद्वान थे। गाँव के मध्य में स्वामी केशो दास जी का डेरा है। इसके छोटे छोटे दरवाजे, नानक शाही ईंटें, संदूकी छत की लकड़ी बता रहे हैं कि आश्रम प्राचीन है। दीवारों से आध्यात्मिक प्रभाव की सुगन्ध आती है। वेदों के मन्त्र गुञ्जायमान होते अनुभव होते हैं।

श्रीमान सन्त मित्त सिंह जी इसी गाँव की एक और निर्मल-आत्मा है। आप पूर्ण विरक्त तथा नाम के रसिक एवं भ्रमण द्वारा जन साधारण को सदुपदेश देते हैं। सन्त रामधन जी गाँव के बाहर भले ही प्रसिद्ध नहीं परन्तु गाँव वालों की आपके प्रति अटूट श्रद्धा है।

वस्तुतः यह गाँव ही सन्तों का है। एक महात्मा ने तूर वंश के बड़ों को कहकर यह गाँव बसाया था। उस समय से आज तक इस गाँव में सन्तों का प्रभाव है। इसने सन्तों के इतिहास में नया अध्याय शुरू किया है। इसलिए इसका नाम हो सन्तपुरा होना चाहिए था। किसी भी महापुरुष का उल्लेख करें गाँव वालों के हाथ श्रद्धा से बंध जाते हैं तथा शीश झुक जाता है। "हरि सन्तन कर नमो नमो" का मनन गाँव वाले कर रहे हैं। साधु निवास के कारण यह गाँव एक तीर्थ बन गया है।

हमारे इस निबन्ध के नायक श्रीमान १०८ निर्मल भेष भूषण विद्या मार्तण्ड श्री महन्त पं० सुच्चा सिंह जी महाराज का जन्म नगर भी यही भिंडर कलां है जिनके महान उपकारों की पताका सातवें आकाश तक लहरा रही है। जैसे पावन गुरुवाणी में सत्पुरुषों की महिमा वर्णन करते हुए कहा है कि—

"धनु धंनु पिता धंनु धंन कुल,
धनु धनु सु जननी जिनि गुरु जणिआ माए।
धनु धंन गुरु जिनि नामु आराधिआ
आपि तरिआ जिनी डिठा तिना लए छडाए।

हरि सतिगुर मेलहु दया करि
जन नानकु धोवै पाए।" पृष्ठ—३१०

यह सभी महापुरुष श्रीमान सन्त सुन्दर सिंह जी, स्वामी केशो दास जी तथा पूज्य श्री महन्त जी महाराज तूरवंश के कोहिनूर हीरे हैं। इस त्रिमूर्ति का शरीर ही भिन्न है, आत्मा एक ही है। सन्त सुन्दर सिंह जी स्वस्थान की अपेक्षा स्वामी केशो दास जी के डेरे में हर सुविधा देखनी चाहते थे। स्वामी केशो दास जी "अखण्ड प्रकाश" की सेवा करके अपना अहोभाग्य समझते थे। पूज्य श्री महन्त जी की प्रारम्भिक विद्या स्वामी केशो दास जी के डेरे में ही हुई थी। सन्त सुन्दर सिंह जी महाराज विद्यार्थिओं को संस्कृत अध्ययन के लिए श्री महन्त जी महाराज के पास पिंडीघेब ही भेजते थे। श्री महन्त जी महाराज गुरुमत्त विद्या के लिए सन्त सुन्दर सिंह जी की टकसाल को सर्वोत्तम मानते थे।

केवल श्री महन्त जी महाराज तथा सन्त सुन्दर सिंह जी में ही निकटता नहीं थी। अपितु दोनों के नाम-दाता श्री १०८ स्वामी भगत सिंह जी महाराज पिंडीघेब (पूज्य श्री महन्त जी के गुरुदेव) तथा श्रीमान सन्त बिशन सिंह जी मुरालेवाले (सन्त सुन्दर सिंह जी के नाम दाता) का भी आपस में घनिष्ठ प्रेम था। स्वामी भगत सिंह जी महाराज ने पावन श्री गुरु ग्रन्थ साहिब जी की एक बीड़ मुराले डेरे में सन्त बिशन सिंह जी के पास रहकर लिखी थी। गुरुवाणी-वेदान्त इत्यादि ब्रह्म विद्या के चिन्तन में दोनों महापुरुष कई-कई सप्ताह आपस में विचार विमर्श करते रहते थे। यह निकटता मुराले से भिंडर तक समा गई थी।

पूज्य श्री महन्त जी महाराज का आध्यात्मिक संसार में अकथनीय प्रभाव था। निर्मल सम्प्रदाय, सिक्ख पन्थ तथा षड्-दर्शन साधु समाज में आपका सर्वोपरि सतिकार था। रोचकता पैदा हुई कि आपके समकालीन महानुभाव देश में और कौन-कौन हुए हैं। मैं चाहता हूँ कि केवल धार्मिक व्यक्तियों की सूची ही अङ्कित की जाए। इससे पाठकों को यह भी पता चलेगा कि आपके जन्म समय और कौन-कौन महापुरुष स-शरीर विराजमान थे। इसमें केवल वही महापुरुष शामिल किए गए हैं जिनका आपसे निकट का सम्बन्ध रहा।

आपका जन्म सन् १८८६ में हुआ। आपके जन्म से केवल १६ वर्ष पूर्व ही ब्रह्म-ज्ञानी बाबा महताब सिंह जी प्रथम श्री महन्त श्री निर्मल पंचायती आखाड़ा ब्रह्मलीन हुए थे। आपके जन्म समय पूज्य पं० राम सिंह जी कुबेरिए "श्री महन्त" पद पर सुशोभित थे। १० वर्ष तक आपके समय में इस पद पर रहकर ब्रह्मलीन हुए। अन्य निर्मल भेष तथा इलाका नित्रासो महापुरुषों का समकाल इस तरह है।

नाम	जन्म सन्	कब से कब तक श्री महन्त	कुल समय	कुल आयु
श्री महन्त बाबा महताब सिंह जी	१८१२	१८३२ से १८७१	६	५१
,, ,, पं० राम सिंह जी कुबेरिए	१८१८	१८७१ से १८७६	२५	७८
,, ,, पं० ऊधव सिंह जी न्यायिक	१८४१	१८७६ से १९०५	६	६४
,, ,, पं० साधु सिंह जी पटियाला	१८४५	१९०५ से १९०८	३	६३
,, ,, पं० राम सिंह जी हरीके	१८६१	१९०८ से १९२७	१९	६६
,, ,, पं० दया सिंह जी उगो	१८६८	१९२७ से १९२९	२	६१
,, ,, पं० जीवन सिंह जी काशी	१८७६	१९२९ से १९३४	४	५८
,, ,, पं० सुच्चा सिंह जी	१८८६	१९३४ से १९८६	५१	१००
नायब श्री महन्त पं० तारा सिंह जी नरोत्तम	१८२२	१८७५ से १८९१	१६	६९
,, ,, पं० दीवानसिंह जी ठीकरीवाले	१८३१	१८९१ से १८९३	२	६२
,, ,, पं० ऊधव सिंह जी न्यायिक	१८४१	१८९३ से १८९६	३	६४
,, ,, पं० मेहर सिंह जी	१८६२	१९२० से १९२७	७	६४
श्रीमान संत अतर सिंह जी मस्तुआणा	१८६६			
,, ,, भगत सिंह जी पिंडोघेव	१८५४			
,, ,, सुन्दर सिंह जी भिंडरावाले	१८८३			
,, ,, इन्दर सिंह जी भिंडरावाले	१८८६			
,, ,, बिशन सिंह जी मुरालेवाले	१८५२			
,, ,, गुरुदयाल सिंह जी बोपाराए	१८८६			
,, ,, गुरुबचन सिंह जी "खालसा" भिंडरावाले	१९०२			

यह उन महापुरुषों के नाम, आयु की सूची है जो आपके समय किसी न किसी रूप में विद्यमान थे। केवल ब्रह्मज्ञानी बाबा महताब सिंह जी ही आपसे पहले ब्रह्मलीन हो गए थे। शेष सभी महापुरुष आपके समकालीन होते हुए भी केवल श्रीमान सन्त इन्दर सिंह जी को छोड़ ब्रह्मलीन हो चुके हैं।

आपकी छत्र-छाया में अनन्त सन्त-महन्तों ने निर्मल अखाड़े की सेवा की। सबका नाम लिखना यद्यपि असंभव है तथापि केन्द्रीय स्थान श्री निर्मल पंचायती अखाड़ा कनखल में जो सेक्रेटरी—कोठारी आपके समय सेवा रत रहे हैं उनके नाम इस तरह हैं।

सेक्रेटरी—

श्रीमान महन्त केहर सिंह जी जलाल
,, ,, मान सिंह जी
,, ,, जोरावर सिंह शास्त्री काशी
,, ,, मूल सिंह जी अमृतसर
,, ,, जोरा सिंह जी
,, ,, सरमुख सिंह शेखवां
,, ,, सुन्दर सिंह जी
,, ,, उत्तम सिंह जी वर्तमान

कोठारी—

श्रीमान महन्त उत्तम सिंह जी (वर्तमान सेक्रेटरी)
,, ,, प्रताप सिंह जी मुरदू
,, ,, ज्वाला सिंह जी
,, ,, मेहर सिंह जी बरनाला
,, ,, दिलीप सिंह जी शेखवां
,, ,, भूपाल सिंह जी
, ,, हरभजन सिंह जी बरनाला
,, ,, ज्ञानी निरञ्जन सिंह जी अमृतसर
,, ,, पं० हकीकत सिंह जी "अरविंद"
,, ,, ज्ञानी गुरुदासा सिंह जी
,, ,, सरमुख सिंह जी वर्तमान

आप के "श्री महन्त" बन जाने पर निम्नलिखित कुम्भ हो चुके हैं।

हरिद्वार	प्रयाग	त्र्यम्बक	उज्जैन
१९३९	१९४१	१९४४	१९४४
१९५१	१९५३	१९५६	१९५६
१९६२	१९६५	१९६८	१९६८
१९७४	१९७६	१९८०	१९८०

आप ने "श्री महन्त" के उच्च पद पर आसीन होकर अखाड़े के गुरुतर कार्यों में रहते हुए भी जीवन भर नाम-सुमरिन, नित्य-नियम में आलस्य नहीं आने दिया। तपोनिधि स्वामी भगत सिंह जी की तरह त्रिपहरे के नियमानुसार १०० वर्ष की आयु में भी रात्रि को एक बजे नित्य-क्रिया से निवृत्त होकर प्रभु चिन्तन में बैठ जाते थे। आपका ८-९ घंटे तक बैठने का अभ्यास था। आप इस पावन वाक्य को सार्थक करते रहे।

"गुरमुखि बुढे कदे नाही जिना अंतरि सुरति ज्ञान।
सदा सदा हरि गुण रवहि अतरि सहज धिआनु।
उए सदा अनंदि बिबेक रहहि दुखि सुखि एक समानि।
तिना नदरी इको आया सभु आतम रामु पछानु।"

मुख से "कच्ची कथनी" का कभी व्याख्यान नहीं दिया। परन्तु आपका आध्यात्मिक तप-तेज, व्यक्तित्व तथा आचरण कथा व्याख्यानों से कहीं अधिक प्रभाव छोड़ता था। "अमृत दिसट पेखे होए संत" के कथनानुसार हर दर्शनार्थी दर्शन करके शान्ति तथा आत्मिक आनन्द प्राप्त करता था। मन खिल उठता था। बस! यही सन्त की पूर्ण निशानी है। आप ने जीवनभर कभी भड़कीले वस्त्र नहीं पहने। सादा खादी का कमीज धोती तथा पगड़ी (बिना शीशे में देखे) पहनते रहे।

लाखों रेशमी वस्त्र पहनने वालों, सुन्दर बना के बाँधी गई पगड़ी वालों, रत्न जटित स्वर्णभूषण पहनने वालों में से आपके मुख-मण्डल पर नाम का प्रभाव, तप-तेज विलक्षण ही प्रगट हो रहा होता था। "गुझड़ा लधम लाल मथै ही प्रगट थिआ" वाला शान्त रूप दूर से ही दृष्टिगोचर हो रहा होता था। इसलिए दर्शनीय व्यक्तित्व, तपोनिधि, जितेन्द्रिय, उदारात्मा, महाविद्वान, गुरुवाणी के परम श्रद्धालु, गुरुमत्त के धारण करने वाले गुरु घर के अद्वितीय प्रचारक थे।

सिक्खी में अथाह श्रद्धा थी। श्री गुरु ग्रन्थ साहिब जी को इष्ट गुरु मानते तथा प्रचारित करते थे। आपके तो जीवन का आधार ही गुरुवाणी था। इसलिए प्रातः सायं दोनों समय श्री गुरु ग्रन्थ साहिब जी के दरबार में अवश्य उपस्थित होते थे।अमृत-पान को मानव जीवन का सर्वोत्तम लाभ मानते थे।

एक बार "चक बाबा गांधा सिंह" जिला फरीदकोट में निर्मल भेष की एक विराट सभा हुई। निर्मल महामण्डल की मीटिंग मण्डल के तत्कालीन प्रधान महन्त मूल सिंह जी की अध्यक्षता मे हो रही थी। जब निर्मल सम्प्रदाय के सैद्धान्तिक पक्षों पर विचार चला तो पं० हरिकृष्ण सिंह जी उगो वालों ने निर्मल साधु की परिभाषा का वर्णन करते हुए कहा कि निर्मले साधु के लिए दाढ़ी–केश होना आवश्यक है। तब श्री महन्त जी ने इस पर सख्त किन्तु करते हुए कहा कि दाढ़ी-केशों वाली बात संशयात्मक है। क्यों कि दाढ़ी–केश तो अन्य सम्प्रदायों—उदासीन, दादु पन्थी, वैष्णव आदि सभी में होते हैं। अतः यह साफ लिखो कि हर निर्मल साधु श्री गुरु गोविंद सिंह जी के पाँच प्यारों से विधि-पूर्वक अमृत-पान करने वाला होगा। अमृत-पान के बिना कोई निर्मल-साधु नहीं बन सकता। क्योंकि इस वार्ता का निर्मले विद्वान महात्मा ३०० वर्षों से अपने सैकड़ों ग्रन्थों में निरूपण करते आ रहे हैं। लेखक ने इन शब्दों को श्रीमुख से श्रवण कर हृदय में धारण कर रक्खा है। इसी से पता चलता है कि आपके हृदय में गुरुमत्त रहत मर्यादा तथा गुरुवाणी के प्रति कितनी श्रद्धा थी।

सम-दृष्टि ऐसी थी कि सम्पूर्ण भारत को अपनी जन्म-भूमि मानते थे। इसलिए विशेष जन्म-भूमि से मोह नहीं पड़ा। जन्म नगर में आने का सङ्कल्प कभी उठा ही नहीं। श्रीमान सन्त गुरुबचन सिंह जी "खालसा" के दशहरे पर अन्य महात्माओं की तरह आप भी उनकी अन्तिम अरदास में सम्मिलत होने के लिए ही पधारे थे। जब परिवार तथा गांव वालों को आपके आगमन की सूचना मिली तो सभी श्रद्धा एवं प्रसन्नता से आपके चरणों में उपस्थित हुए। सभी अपनी-अपनी स्मृति देने लगे। परन्तु आप उपराम वृत्ति में ही रहे। परिवार वालों ने सन्त बलवीर सिंह जी "वियोगी" को प्रार्थना की कि आप महाराज जी को घर लाकर हमारे ऊपर उपकार करें। तब "वियोगी" जी ने विश्वास दिलाया कि हम महाराज जी को अवश्य लाएंगे। शाम को जब कार से घूमने निकले तो नियत कार्यक्रमानुसार आपको घर ले गए। महाराज जी ने कहा "बाहर खेतों में घूमने जाना था, यहाँ गांव में कहाँ ले आए।" तब वियोगी जी ने प्रार्थना की कि "महाराज जी! यह आपका घर है। अपनी चरण-रज से इसे पवित्र करें।" नम्रतापूर्वक प्रार्थना करने पर आप पर्यङ्क पर बैठ गए तथा कहा कि "हमारा घर तो सम्पूर्ण देश है, कोई एक घर नहीं" परिवार तथा मुहल्ले वालों ने विधि-पूर्वक आपका पूजन किया। सारी माया एक विधवा ब्राह्मणी को देकर बोले कि "अब गांव में आए हैं तो स्वामी केशो दास जी के डेरे के भी अवश्य दर्शन कराओ। वही हमारा बड़ा घर है"। आप डेरे के भीतर गए। एक तख्त पर सुन्दर बिछौना-बिछाया गया। आप उस पर सुशोभित हुए। गांव वाले दौड़-दौड़ कर आने लगे। डेरे के वर्तमान महन्त सन्त शरवण दास जी सहित सब श्रीचरणों में बैठे थे। गांव का मिरासी जो अब वृद्धावस्था को प्राप्त हो गया था, आकर बोला "हे सच्चे पादशाह! मैं आपका मिरासी हूँ। बचपन में मैंने आपके साथ पशु चराए हैं। वह समय मुझे कभी नहीं भूलता। आपने पुनः दर्शन देकर मेरा जीवन सफल कर दिया है। इतना कहकर वह श्री चरणों से लिपट गया। तबतक यह समाचार गांव में फैल गया कि अपने गांव के वह सन्त भी आए हैं जो सभी सन्तों के प्रधान हैं। सभी जल्दी-जल्दी पहुँचने लगे। वृद्ध अपनी स्मृति देने लगे कि "हम आपके साथ खेलते रहे हैं।" वृद्ध आपके बाल-काल के चरित्र सुना रहे थे। युवक सुनकर आनन्द ले रहे थे। बच्चे तथा स्त्रियाँ एक टक आपको निहार रहे थे। लक्ष्मी की वर्षा हो रही थी। सभी आनन्द उदधि में लहरा रहे थे। तब आपने सम्पूर्ण माया बाल सखे मिरासी को उठा दी। इस तरह गांव वालों के भव-बन्धनों को कृपा-दृष्टि से काटकर वापस "अखण्ड प्रकाश" पहुँच गए।

दूसरे दिन सन्त गुरुबचन सिंह जी की अन्तिम अरदास के बाद उनके उत्तराधिकारी सन्त मोहन सिंह जी को पगड़ी देकर वापस कनखल (हरिद्वार) चले गए। यह आपके अपने जन्म स्थान की यात्रा थी। वस्तुतः जो गुरुद्वारा "अखण्ड-प्रकाश" की यात्रा थी।

आपने अपने धार्मिक समारोहों पर कभी किसी राजा, मन्त्री इत्यादि को निमन्त्रण नहीं दिया। कभी किसी से मिलने का सङ्कल्प नहीं किया। कोई भी आए, जन साधारण की तरह सदुपदेश ग्रहण करता था। छोटे-बड़े में कोई भेद-भाव नहीं था परन्तु अगर कोई निश्छल सांसारिक आडम्बर से रहित व्यक्ति आ पहुँचे तो उसे अधिक प्यार देते थे।

१३-८-७६ को आपके होनहार शिष्य थेह साहिब के महन्त साहिब सन्त कृपाल सिंह जी ब्रह्मलीन हो गए। सतारहवीं पर आप वहाँ पहुँच गए। २८-८-७६ को आप दोपहर समय अपनी कुटिया में आराम कर रहे थे। जब मैं गोइन्दवाल साहिब जाने के लिए डेरे से बाहर निकला तो पाँच-छः, हृष्ट-पुष्ट, लवे तगड़े जवान जो सिर-मुँह मुँड़ाए तथा हाथ में लाठियाँ लिए हुए थे, तनों पर मात्र कटि वस्त्र लपेटे हुए थे, लग रहा था व्यास नद पार करके आए हैं और थे भी किसी टपरीवास जाति से सम्बन्धित तथा वर्तमान सभ्याचार से एकदम अज्ञात। वह मुझे रोककर बोले "बाबा ! हमने सुना है वह साधुओं का मालिक आया है।" दूसरा बोला "वह गङ्गा वाला"। मैं उनकी यह सरल भाषा सुनकर मुस्कराया तथा कहा कि "हाँ आया है" तो वह अधीरता से हाथ बाँध कर बोले कि "तू हम पर रहम कर, उसे हमें दिखादे, हमारा भी भला हो जाए"। मैंने कहा कि "महाराज आराम कर रहे हैं। आप लोग डेरे के भीतर चलकर लंगर खाओ। शाम को दर्शन कर लेना। मैं गोइंदवाल जा रहा हूँ। किसी सन्त को कहना, दर्शन करवा देगा।" वह बोले "तू ऐसा न कर। हमें वह गङ्गा वाला बड़ा साधू दिखा दे। हम गङ्गा जाकर नहीं देख सकते"। मैं उनकी श्रद्धा तथा प्रेम देखकर वापस चला आया। वह मेरे पीछे-पीछे महाराज की कुटिया तक आए। उनमें से एक अपनी जिज्ञासा शान्त करने के लिए बोला कि "हमें वह गङ्गा वाला बड़ा साधु ही देखना है।"

मैं मन में सोच रहा था कि पता नहीं महाराज जी किवाड़ खोलेंगे अथवा नहीं। परन्तु मेरे देखते-देखते किवाड़ खुल गए। सामने महाराज विराजमान थे। आए प्रेमिओं ने दूर से जमीन पर लेटकर दण्डवत प्रणाम की। महाराज जी ने प्रसन्न मुख होकर आशीर्वाद दिया। कितनी देर तक महाराज जी उनके साथ, उनके कारोबार सम्बन्धी बातें करते रहे। वह भी महाराज को अपने जानवरों के बारे में बताते रहे। सबको मिश्री का प्रसाद दिया। वह सब प्रसाद तथा आशीर्वाद पाकर प्रशन्न-वदन वापस चले गए। मैं यह सब आपकी अन्तर्यामिता तथा गरीब निवाज दृष्टि ही मानता हूँ।

"तेरी अकथ कथा कथनु न जाई
गुण निधान सुखदाते सुआमी
सभते ऊच बड़ाई।"

ऐसे थे दीन दयाल "घट-घट के अन्तर की जानत। भले बुरे की पीर पछानत।" आपका जीवन चरित्र अलौकिक तथा अकथनीय था। मैं तो केवल इन्हीं शब्दों से सन्तोष करता हूँ। आप अनन्त गुणों के भंडार तथा अनन्त मनुष्यों को ज्ञान पथ पर अग्रसरित करने वाले थे।

"तेरे कवन-कवन गुण-कहि गावा तू साहिब गुणी निधाना
तुमरी महिमा वरन न साकउ तूं ठाकुर ऊच भगवाना।"

श्री महन्त पं० स्वामी सुच्चा सिंह जी महाराज

आपका जन्म इसी भिण्डर कलाँ ग्राम में सम्वत् १९४३ में हुआ। आपकी माता का नाम माता महताव कौर तथा पिता जी का नाम सरदार नत्था सिंह था। अभी आप छः वर्ष की आयु के ही थे कि आपके माता-पिता का स्वर्गवास हो गया। आपका पालन आपके चाचा स० अतर सिंह जी ने की। चाचा जी धार्मिक स्वभाव के अति दयालु पुरुष थे। इन्होंने आपकी सेवा-सँभाल दिल लगा कर की। जैसे-जैसे आप बड़े होते गये, आपकी संगत महापुरुषों से होती गई। सरदार अतर सिंह जी आपको संत केशो दास जी के डेरे ले जाते थे। यह डेरा आपके घर के साथ लगता था। यहाँ हर रोज सत्संग का प्रवाह चलता था। यहीं पर आपने गुरुमुखी लिपि में अक्षर ज्ञान किया तथा संतों से कुछ छोटे-वड़े ग्रन्थ पढ़े। आपकी विद्या में लगन को देखकर संत केशो दास जी अति प्रभावित थे। आपकी सहज वृत्ति को देखकर संत जी ने चाचा अतर सिंह से कहा था कि यह कोई साधारण बच्चा नहीं है। यह तो कोई योगिराज महापुरुष वनेगा। इसका निरादर नहीं करना।

अचानक शारीरिक रोग—

इन्हीं दिनों में आपकी बुआ जी जलन्धर से भिंडर कलाँ में आयी हुई थीं, आपके शान्त स्वभाव को देखकर बुआ जी ने आपको अपने साथ जलन्धर ले जाने की इच्छा अपने भाई सरदार अतर सिंह से प्रगट की। सन् १९०० ई० में आप जलन्धर चले गये।

जलन्धर गये अभी थोड़े दिन ही गुजरे थे कि पेचिस की भयंकर बीमारी ने आ घेरा। कोई भी खाई व पियो हुई चीज हजम नहीं होती थी। बहुत से डाक्टरों व वैद्यों को दिखाया व इलाज करवाया, परन्तु कोई भी लाभ प्राप्त न हुआ। यह दशा देख कर बुआ जी बहुत परेशान हो गईं। एक दिन अचानक सरदार अतर सिंह जी जलन्धर आ गये तथा आपकी यह दशा देखकर आपको वापस भिंडर कलाँ ले आये। यहाँ भी इलाज शुरू हुआ, यन्त्र-मन्त्र करवाये गये, पर किसी से भी कुछ लाभ न हुआ। सन्त केशो दास जी को बुलाया तो उन्होंने कहा कि चिन्ता की कोई बात नहीं, शोधन हो रहा है। इस शोधन वाली बात को किसी ने न समझा। सम्पूर्ण परिवार तथा मुहल्ले में उदासीनता छा गई। एक बूढ़ा फकीर पास से गुजर रहा था। उसने पूछा क्या बात है ? तो सबने आपकी बीमारी का हाल कह सुनाया। फकीर साईं ने कहा यह बीमारी किसी औषधि से ठीक नहीं होगी। इसे बकरी का दूध पिलाओ उसी से ही ठीक हो जायेगा।

एक नई व्यायी बकरी खरीदी गई, आपको दूध देना शुरू किया गया, बचा दूध बकरी के बच्चे को छोड़ दिया जाता, कुछ दिनों बाद आप निरोग हो गये। परन्तु बकरी का बच्चा बिना किसी बीमारी के अचानक मर गया। आश्चर्यजनक ढंग से घटी इस घटना को देख कर सभी चकित रह गये। चाचा अतर सिंह जी तथा गाँव के लोगों ने उस बकरी के बच्चे को स्नान कराया तथा कपड़ा आदि डालकर उस अजा-शिशु को विधि पूर्वक दफना दिया। जब आप पूरी तरह स्वस्थ हो गये तो संत केशो दास जी के डेरे गुरुमहाराज के आगे अरदास कराई गई।

स्वामी भगत सिंह जी का भिडर कलां में शुभ आगमन—

सन् १८९९ ई० में स्वामी भगत सिंह जी महाराज भिंडर कलाँ में संत केशो दास जी के डेरे आये। संत केशो दास जी पूर्ण संत थे। इन दिनों आपके डेरे में श्री नानक प्रकाश की कथा हुआ करती थी। चाचा अतर सिंह जी के साथ आप भी प्रतिदिन इस कथा को श्रवण करने जाते थे।

आज पूर्व जन्मों के शुभ कर्म-फल देने के लिए उद्यत हुए। आप जब चाचा जी के साथ कथा-श्रवण करने गये तो आपकी दृष्टि स्वामी भगत सिंह जी महाराज के नूरानी चेहरे पर पड़ गयी। उधर स्वामी भगत सिंह जी महाराज की कृपा-दृष्टि भी इस पवित्र मन बालक पर पड़ी। बस, दृष्टि का मिलाप होते ही आपका मन-कमल खिल गया।

पूरब करम अंकुर जब प्रगटे,
भेटिओ पुरुख रसिक बैरागी।
मिटिओ अंधेर मिलित हरि नानक,
जनम-जनम की सोई जागी॥

आज बाबा बुड्ढा जी का प्रसङ्ग चल रहा था। बाबा जी बचपन में गौएँ चरा रहें थे। जब सृष्टि को अपने नाम दान की वर्षा से सिञ्चित करते हुए श्री गुरुनानक देव जी भी वहाँ आ पहुँचे। श्री गुरुनानक देव जी को प्रभु प्यारा कोई साधु समझ कर यह बच्चा अपनी गौओं का दूध सेवा में ले आया। जब दूध को गरम करने के लिये लकड़ियों को इकट्ठा करके जलाया जाने लगा तो छोटी लकड़ियाँ पहले जलीं तथा बड़ी लकड़ियाँ पीछे जलीं। इस दृश्य को देखकर बच्चे ने श्री गुरु नानक देव जी से पूछा कि क्या इन छोटी लकड़ियों की तरह मुझे भी काल रूपी अग्नि पहले लग जायेंगी? बच्चे के इन वचनों को सुनकर श्री गुरुनानक देव जी ने कहा कि बेटा तू है तो बच्चा! परन्तु बातें बड़े बूढ़ों की तरह करता है। उसी दिन से उस बच्चे का नाम बाबा बुड्ढा जी पड़ गया।

इस प्रसङ्ग ने आपके मन को हिला दिया। एक तो स्वामी भगत सिंह जी महाराज जी का दर्शन, दूसरा बाबा बुड्ढा जी का प्रसंग। आपका तन-मन गुरु-चरणों को प्राप्त करने के लिए तैयार हो गया। मन में फैसला कर लिया कि जिस तरह से बाबा बुड्ढा जी सदा के लिए गुरु नानकदेव जी के हो गये थे उसी तरह मुझे भी सदा-सदा के लिए स्वामी भगत सिंह जी का हो जाना है।

संन्यास लेने की रुचि तथा ब्रह्मविद्या की प्राप्ति :—

स्वामो भगत सिंह महाराज कुछ दिन यहाँ नाम-वाणो का प्रचार करके वापस अपने डेरे में गये तो स्वामो जी के दर्शन न हुए। जब आपने स्वामी जी के बारे में एक प्रेमी से पूछा तो उसने बताया कि स्वामी जी तो गोइन्दवाल के समीप व्यासनद के किनारे अपने डेरे थेहसाहिब पर चले गये हैं, तब आप अपने घर नहीं गये। बिना किसी को बताये चुप-चाप गोइंदवाल को ओर चल पड़े। बेसहारा, बिना किसी जरूरी सामान के घर छोड़ देने में एक अलग ही आनन्द होता है। एक विचित्र भावदशा का सूर्यचक्र मन के चारों ओर छा जाता है। जो उत्साह एवं दैवी स्वप्नों को जन्म देकर बेसहारों का सहारा बन कर मार्ग दिखलाता है। उस समय सभी मुश्किलें आसान तथा सारे रास्ते सरल हो जाते हैं जब मन में कुछ पा लेने की जिज्ञासा हो।

प्रीत-रीत में जग रहे नैन किसी रोशनी की तरफ खिंचते चले जा रहे थे। रास्ते में व्यास नदी को पार करके श्री गोइन्दवालसाहिब पहुँच गये। वहाँ श्री गुरु अमर दास जी के चरणों में प्रार्थना करी।

गुरु दाता दातार है,
हौं मागउ दान गुरु पासि।
चिरी विछुन्ना मेलि प्रभु,
मैं मनि तनि वडड़ी आस ॥

आपका मन स्वामी भगत सिंह जी के चरणों में लगा था। बावलीसाहिब में सोदर की चौकी का समय हो गया था। रागी जनों ने प्रभु-कीर्तन की ध्वनि छेड़ी। सभी तरफ आनन्द-रस छा गया। प्रभु प्रेमी गुरु दरबार में उपस्थित होकर मानव जन्म सफल कर रहे थे। रहरास के पाठ के उपरान्त कीर्तन सोहले का पाठ हुआ। तब अरदास होकर दीवान की समाप्ति हुई। आपने रात्रि को गुरु के लंगर से प्रसाद पाया तथा सारी रात श्री गुरु अमर दास जी महाराज के चरणों में व्यतीत की।

दूसरे दिन प्रातः उठे। स्नान किया। गुरु दरबार में जाकर कीर्तन श्रवण किया। जब सूर्य निकल आया तो गुरु दरबार से बाहर आकर पूज्य स्वामी

भगत सिंह जी महराज के तपो-स्थान का रास्ता पूछा। प्रेमियों के बताए हुए मार्ग से कुछ देर बाद ही आप थेहसाहिब पहुँच गए।

डेरे के अन्दर प्रवेश किया तो आगे क्या देखते हैं कि तपस्या के अवतार, जिनके चेहरे पर प्रभामण्डल छाया हुआ है, स्वामी भगत सिंह जी महाराज अपने आसन पर बैठे हैं। कुछ क्षण के लिए तो आपकी स्थिति—

दर्शन देखत ही सुध की न सुध रही,
बुध की न बुध रही, मति में न मति है।

वाली हो गई। कुछ पलों बाद आगे बढ़ कर स्वामी जी के चरणों में अपने आप को अर्पित कर दिया। स्वामी जी ने आशीर्वाद दिया। स्वामी जी ने पूछा—कहाँ से आए हो ? जी झिडरकला से। कैसे आना हुआ ? जी आपके दर्शन के लिए आया हूँ। क्या करोगे ? जी आपके चरणों में रहने की इच्छा है। इस जंगल में तेरा मन लग जाएगा ? जी आपके चरणों में लग जाएगा। यह सम्पूर्ण कला तो स्वामीजी ने ही की थी।

वह तो बिछुड़ी हुई आत्माओं का मिलाप करा रहे थे। निश्छल, निर्मल मन की बातें बड़ी प्यारी होती हैं। आपके मस्तिष्क की ओर देख कर स्वामीजी ने एक महात्मा को अपने पास बुलाया तथा आज्ञा की कि इस बालक को अमृत पान कराना है। स्वामीजी ने अत्यन्त कृपा की। आपको अमृत पान कराके गुरुमन्त्र दिया तो सहज भाव से ही बालक मन में यह भाव आ गए।

करि कृपा संत मिले मोहि,
तिनते धीरज पाया।
संती मंत दिओ मोहि निरभउ,
गुरु का सबद कमाया॥
जीत लिए ओए महा बिखादी,
सहज सुहेली बाणी।
कहु नानक मनि भया परगासा,
पाया पद निरबाणी॥

इस समय आपकी आयु केवल १-३-१४ वर्ष की ही थी। आप सेवा में लग गए। कूएँ से पानी निकालना, लंगर के जूठे बर्तन साफ करना, डेरे में झाड़ देना, लंगर के लिए लकड़ी लाना आदि। अमृत वेला से रात्रि तक स्वामीजी तथा डेरे की सेवा में मग्न रहते। आपका यह सेवा-भाव देखकर पूज्य स्वामीजी तथा अन्य सन्त बहुत प्रसन्न होते थे।

स्वामीजी के साथ बहुत से विद्वान् तथा भजनानन्दी महात्मा सदा निवास करते थे जिस कारण यह डेरा एक धार्मिक विद्यालय जैसा दिखाई पड़ता था।

इस डेरे में रहकर आपने श्री गुरुग्रन्थसाहिबजी की संथा तथा कई गुरुमत्त एवं वेदान्त के कई छोटे-छोटे ग्रन्थ पढ़ लिए। स्वामीजी ने आपको ज्ञानी नारायण सिंह जो के पास कोटली जि० गुजरात में भेज दिया। जहाँ आपने गुरुवाणी तथा वेदान्त का व्यापक अध्ययन किया। पुनः स्वामीजी की आज्ञा से हंडिआए वरनाले के पास एक विद्वान् ब्राह्मण से संस्कृत पढ़ने गए। उदासीन सम्प्रदाय के महान् विद्वान् स्वामी गंगेश्वरानन्द जी भी उस समय आपके सहपाठी थे। वहाँ से संस्कृत के कई ग्रन्थों का अध्ययन करके वापस स्वामीजी के चरणों में आ गए।

पुनः स्वामीजी ने आपको ऋषिकेश भेज दिया। वहाँ उस समय के महान् विद्वान् सर्वदर्शनाचार्य विरक्तात्मा स्वामी बाबा प्रेम सिंह जी झाड़ी में निवास करते थे। यहाँ पर आपने रहकर जहाँ विद्या अर्जित की वहीं कठिन तपस्या भी की। जंगल में स्वामीजी के साथ रहते हुए रात्रि ३ बजे उठ जाते थे। गङ्गाजी में स्नान करके अपने आसन पर बैठ कर घंटों गुरुमन्त्र का जप-ध्यान करते, दिन में सन्तों की सेवा तथा विद्याध्ययन करते। रात्रि को गुरुमन्त्र का जप करते हुए ही अल्प निद्रा लेते थे। आपकी बुद्धि अत्यन्त तीक्ष्ण थी। अल्प समय में ही व्याकरण, साहित्य आदि के छोटे-बड़े कई ग्रन्थ पढ़ लिए। लघुकौमुदी, मध्यकौमुदी, तर्कसंग्रह, न्याय सिद्धान्त मुक्तावली, रघुवंश महाकाव्य, पञ्चदशी, गीता तथा उपनिषद् एवं कई साहित्य, वेदान्त के ग्रन्थ आपको कण्ठस्थ थे।

आपकी प्रतिभा को देखकर बाबा प्रेम सिंह जी ने आपको उच्च विद्या लेने हेतु काशी भेज दिया। काशी में रहकर आपने विभिन्न विद्वानों से षड्-दर्शनों का विधिपूर्वक अध्ययन किया। आपने शास्त्रार्थ में विलक्षण योग्यता प्राप्त की। आपकी प्रखर बुद्धि, साधुता तथा निर्मल आचरण की सर्वत्र चर्चा होने लगी। काशी में कई साल लगातार रहकर आपने सम्पूर्ण शास्त्रों में योग्यता प्राप्त की।

पिंडीघेव की गद्दी तथा वसीयत :—

आपको हर तरह से योग्य समझकर स्वामी भगत सिंह जी महाराज ने डेरा पिंडीघेव तथा डेरा थेह साहिब धूंदे की वसीयत करवा दी थी। यद्यपि आप स्वामीजी के शिष्यों में सबसे छोटे थे, परन्तु आपकी योग्यता एवं निर्मल सम्प्रदाय तथा साधु समाज में बहुत ख्याति थी। स्वामीजी का हार्दिक प्रेम भी आपके प्रति अधिक था। आप उस समय काशी में ही थे जब पूज्य स्वामीजी इस पञ्चभौतिक शरीर को त्याग कर अपने स्वरूप में लीन हो गए। एक सेवादार भेजकर आपको काशी से बुलाया गया। एक दिन इकठ्ठा करके निर्मल सम्प्रदाय तथा भक्त की ओर से आपको सन्तपुरा डेरा पिंडीघेव की महन्ती की दस्तारबंदी हुई। विशाल सभा में महन्त हाकम सिंह जी आदि महात्माओं ने पगड़ी बाँधी। समूह प्रेमिओं ने आपकी

पूजा की। विशाल भंडारा हुआ। डेरे की ओर से आए महन्तों-संतों का स्वागत हुआ।

सन्तपुरा पिंडोघेव में भव्य इमारत तथा सत्संग :—

सन्तपुरा की गद्दी पर बैठकर आपने प्रेमी जनों को ज्ञान का उपदेश देना शुरू किया। सुबह शाम गुरु दरबार में कथा कीर्तन शुरू हो गया। सत्संग करने की लगन आपको बचपन से ही थी। दोनों समय आप गुरु दरबार में कथा करते जिसे सुनकर प्रेमियों के हृदय प्रफुल्लित हो जाते थे। इस समय सत्संग का ऐसा प्रवाह चला कि जिसकी सुखद याद से आज भी आँखे छलक जाती हैं।

एक प्रभाव पूर्ण प्रभा मण्डल आपके चेहरे पर छाया रहता था। आप के दर्शन अलौकिक थे। जो भी दर्शन करने आता, इस प्यार-पुञ्ज प्रभु-ज्योति के दर्शन से आनन्दित हो जाता। उसके मन की इच्छाएँ दर्शन मात्र से पूर्ण हो जाती थीं। इस समय के कुछ प्रेमिओं के पत्रों से मालूम होता है कि आप उस समय किस तरह प्रभु रग में अभेद हो गए थे।

सत्संग करने के लिए सन्तपुरे में बारहो मास ही मेला लगा रहता था। प्रेमियों ने प्रार्थना की कि महाराज जी सत्संग के लिए एक हाल की आवश्यकता है। सहज स्वभाव से ही आपने कहा कि वन जाएगा। वस! आपके श्री मुख से यह स्वीकृति होनी थी कि देखते देखते एक वहुत ही विशाल भव्य हाल तैयार हो गया। साथ ही भंडार घर (लंगर) भी तैयार हो गया। आए साधुओं के ठहरने के लिए सुन्दर कमरे अलग से तैयार हो गए। विद्या-दान करने वाले ज्ञानी दीदार सिंह जी, ज्ञानी कृपा सिंह जी, ज्ञानी राम सिंह जी आदि के लिए ऊपर की जगह में अलग कमरे वने। शोल नदी के पास नीचे की ओर पशुओं के लिए खुले कमरे तैयार हो गए। वीच में सड़कें बनीं जिनके दोनों ओर सुगन्धित गुलाव लहराने लगे। यह सुन्दर दृश्य आज भी आँखों के सामने से हट नहीं रहा है।

सन् १९२७ के इन दिनों में मेरा शरीर भी आप के चरण-कमलों में आ गया। उस समय आपके गुरु-भाई ज्ञानी राम सिंह जो दशम-ग्रन्थ की कथा कहा करते थे। आपके गुरु-भाई सन्त ज्ञानी इन्द्र सिंह जी, आपके शिष्य सन्त प्रताप सिंह जी राणा तथा संत त्रिलोक सिंह जी, सन्त इद्र सिंह जी, काका मनोहरलाल, भाई काशीराम (वाद में कर्म सिंह) आपके पास रहकर सेवा करते थे। लाला गोदड़ शाह की वृद्ध माता वहुत ही श्रद्धापूर्वक प्रतिदिन लंगर की सेवा करती थीं। पं० हरनामदास जी रवेकु वाल उन्हीं दिनों मेरे साथ पढ़ते थे जो प्रतिदिन अपने नगर से सन्तपुरे आते थे।

सन्तपुरा आश्रम से बाहर एकान्त में तपस्या:—

प्रभु भक्ति का रंग तो आपको अपने गुरुदेव स्वामी भगत सिंह जी से ही लग गया था। यहाँ भी सन्तपुरा में एक गुफा के अंदर आपने तपस्या शुरू कर दी। चिरकाल तक आप यहाँ पर ही एकान्त में प्रभु-चिन्तन करते रहे। पश्चात् आप शील नदी के उस पार पहाड़ी की कन्दराओं में बैठने लगे। प्रतिदिन ३ बजे भोर में ही पहाड़ी कन्दरा में चले जाते तथा ६ बजे के लगभग वापस डेरे में आकर सत्संग में बैठ संगत को दर्शन देते।

आपकी दिनचर्या अपूर्व थी। दृष्टि, वोल-चाल, वेश-भूषा, वाणी का संयम, सादा और समय से खाना, भजन-पाठ, सत्संग, जागना-सोना, सैर आदि नियमबद्ध थे। अन्त तक देखने में आता रहा कि जो कुछ अन्तरात्मा ने स्वीकार किया वही हुआ, उलट कुछ नहीं। उस प्रभु की इच्छा को मानना और सहजानन्द में ही जीवन चलाया था।

तीर्थ-यात्रा :—

आपने अपने साथी सन्तों के साथ भारत के विभिन्न तीर्थ-स्थानों की यात्रा की। श्री पञ्जा साहिब से कोहमारी के रास्ते कश्मीर क्षेत्र के सभी गुरुद्वारों, मन्दिरों, तीर्थों के दर्शन किए। उस समय आप के साथ पं० सम्पूर्ण सिंह जी, पं० कल्याण सिंह जी आदि महात्मा थे। पश्चात् ज्ञानी निरञ्जन सिंह जी, बाबा जवंद सिंह जी आदि के साथ मिल कर पूर्व में नानकमता आदि स्थानों की यात्रा की। आप ने दक्षिण में रामेश्वरम् से लेकर पूर्व में जगन्नाथ पुरी, गंगासागर तथा उत्तर में बदरीनाथ, केदारनाथ, गंगोत्री, यमुनोत्री, अयोध्या, मथुरा, वृन्दावन, पटना साहिब, हजूर साहिब आदि भारत के प्रमुख तीर्थ-स्थानों की यात्रा लगभग पैदल चल कर पूरी की थी। आप पैदल चलने में शारीरिक रूप से अत्यन्त बलशाली थे। ज्ञानी निरञ्जन सिंह जी अमृतसर तथा बहुत से महात्माओं, भक्तों समेत मेरा अनुभव है कि आपकी सामान्य चाल के साथ हम लोग दौड़ कर मिलते थे।

सन्तपुरा पिंडीधेव का सालाना यज्ञ :—

नये संवत् पर आप ने एक यज्ञ शुरू किया जो हर वर्ष सन्तपुरे के अन्दर बड़ी धूम-धाम एवं श्रद्धा से मनाया जाता था। (यह यज्ञ आजकल हर नये संवत् पर दिल्ली माडल टाउन सन्तपुरे में मनाया जाता है)। दूर-दूर से सन्त-महात्मा, रागी, कथा-वाचक, गुणी-ज्ञानी जन आते थे। मास्टर मदन जैसे शास्त्रीय संगीत गाने वाले संगीतज्ञ भी सन्तपुरे में अपनी संगीत कला का प्रदर्शन करते थे। दूर-दूर से आप के प्रेमी आते थे। तीन दिन लगातार शील नदी की रेतीली जमीन

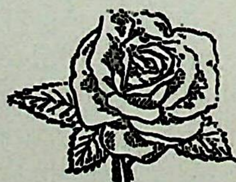
पर गुरु के लंगर से प्रसाद पाने के लिए पंगतें लगती थीं। आए हुए सन्त, महात्मा, रागी, कथाकारों की सेवा के लिए अलग से सेवादार नियुक्त होते थे। अनुशासन इतना था कि जो सेवादार जहाँ नियुक्त है वह वहीं पर पूरी श्रद्धा से अपना कर्तव्य-पालन करता था। शील नदी के किनारे हिन्दू, मुस्लिम, सिक्ख सभी एक ही पंक्ति में बैठकर भोजन पाते थे। हजारों की गिनती में तीनों मजहबों के लोग कथा-कीर्तन श्रवण करते, आप के दर्शन करते, लंगर से प्रसाद पाते हुए अपने जीवन को सफल करते।

इस अपूर्व सन्त समागम से आपकी यशो-पताका दूर-दूर तक फैलने लगी। आपकी यश-गाथा कस्तूरी की तरह सुगन्धित हो उठी, प्रेमी जन भँवरों की तरह मँडराने लगे।

कबीर कस्तूरी भया, भंवर भए सब दास,
ज्यों ज्यों भगति कबीर की, त्यों त्यों राम निवास।

आप हर समय वेदों, शास्त्रों, पुराणों, श्री गुरुग्रन्थसाहिब जी, गुरु इतिहास का पठन-पाठन करते रहते थे। ऐसे आपने कथा-कीर्तन, सत्संग का प्रवाह अटूट चलाया। सम्पूर्ण साधु समाज तथा प्रेमी-भक्तों का प्यार आपके प्रति बढ़ता गया।

□



श्री निर्मल पंचायती अखाड़ा

"कालक्रमेण जगतः परिवर्तमानः" महाकवि की इस सूक्ति के अनुसार समय-चक्र घूमता रहता है। समय के प्रभाव से ही देश की प्राचीन सभ्यता में आमूल परिवर्तन होने लगा। स्वेच्छाचारी शासकों के शासन से धार्मिक कार्यों में सर्वत्र शिथिलता आने लगी। तपोवनों में जाकर महात्माओं के दर्शन एवं प्रवचन सुनने वाले जिज्ञासु कम होने लगे। इन घटनाओं को देखकर प्रत्येक सम्प्रदाय के प्रमुख व्यक्तियों ने धर्म-प्रचारार्थ सार्वजनिक संस्थाओं को बनाने के प्रयत्न आरम्भ कर दिए।

इस परिवर्तन से निर्मल सम्प्रदाय भी अपने को अलग न कर सका। क्योंकि समय की धारा में जो व्यक्ति अपने को नहीं मिला सकते, धीरे-धीरे वह नष्ट होने लगते हैं। समय की परिस्थिति के अनुसार अपने कार्यक्रम को अधिक विकसित तथा व्यापक एवं सुदृढ़ बनाने की आवश्यकता निर्मल सन्तों को भी प्रतीत हुई।

पहले जहाँ निर्मल साधु अलग-अलग रहकर कुम्भ एवं ग्रहण आदि पर्वों पर जनता को सदुपदेश देते थे वहीं अब समूह के रूप में दिखने लगे। कुम्भ आदि पर्वों पर समूह निर्मल मठाधीश, मण्डलेश्वर, विरक्त-पंडित इकट्ठे होते। जनता को गुरु नानक देव जी के मार्ग पर चलने का उपदेश देते। इनके निर्मल आचरण, निर्मल करनी, निर्मल रहनी, निर्मल वेश-भूषा एवं निर्मल ज्ञान को देख राजा-महाराजा तथा आम जनता इनके निकट आने लगी।

महाराजा रणजीत सिंह जैसे गुरु के प्यारे राजा इनसे कथा-कीर्तन श्रवण कर आनन्द मग्न होने लगे। कवि शिरोमणि के इन वचनानुसार—

"यदि सन्ति गुणाः पुंसां विकसन्त्येव ते स्वयम्।
नहि कस्तूरिकाऽमोदः शपथेन विभाव्यते॥

ब्रह्मनिष्ठ यतिवर निर्मल साधुओं की कमनीय कीर्ति सर्वत्र व्यापक हो गई।

समय के चक्र से धीरे-धीरे सबके मन में यह विचार हुआ कि जैसे अन्य साधुओं के अपने-अपने अखाड़े हैं, वह सभी कुम्भ पर्वों पर अपने-अपने इष्ट देवों की भव्य झाँकियाँ निकालते हैं, अपनी पताकाएँ लहराते हैं उसी तरह निर्मल सम्प्रदाय का भी अपना अखाड़ा होना चाहिए जिससे सभी तीर्थ-स्थानों पर श्री गुरु नानकदेव जी महाराज के उपदेशों का विधिवत् प्रचार हो।

इस शुभ कार्य को मूर्त रूप देने के लिए चरनार थलियाँ वाली हवेली पटियाला में सम्वत् १६१८, भाद्र सुदी द्वादशी को श्री गुरुग्रन्थसाहिब जी के सम्मुख विधिवत समारोह पूर्वक श्री निर्मल पंचायती अखाड़ा की स्थापना हुई।

इससे पूर्व मालवेन्द्र भूपेन्द्र नरेन्द्र सिंह जी ने परम तपस्वी वीतराग ब्रह्म-श्रोत्रिय ब्रह्मनिष्ठ बाबा महताब सिंह जी समेत सम्पूर्ण निर्मल सम्प्रदाय के तपस्वियों, पंडितों, विद्वानों को अपने राज्य की राजधानी में श्रद्धा पूर्वक आमन्त्रित किया। लम्बे विचार विमर्श एवं श्रीयुत् बाबा महताब सिंह जी की आज्ञा से पटियाला नरेश ने युवराज महेन्द्र सिंह के साथ श्री गुरुग्रन्थसाहिब जी के सम्मुख खड़े होकर

(१) अखाड़े को बीस वर्ष की आय सहित दो ग्राम चण्डी-भैणी समर्पित किए। पटियाला में कई मकान दिए तथा प्रत्येक कुम्भ पर्व पर शाही आदि हेतु सोने चाँदी का सामान दिया।

(२) इस पुनीत अवसर पर संगरूर नरेश ने दो ग्राम दान किए।

(३) फरीदकोट तथा नाभा नरेश ने एक-एक ग्राम समर्पित किया।

(४) कलसिया नरेश ने तथा अन्य उपस्थित प्रेमी भक्तों, सरदारों ने बहुत सा धन आदि दान किया।

महाराजा पटियाला ने हर कुंभ पर्व तथा ग्रहण आदि पर्व पर अन्न दान, औषधि दान आदि में होने वाला सम्पूर्ण खर्च वहन करने की इच्छा व्यक्त की।

इस मंगल समय में बहुत से पुनीत कार्य हुए। अंत में अखाड़े के परिचालन हेतु नियम आदि बने तथा इसके प्रथम श्री महन्त बाबा महताब सिंह जी महाराज नियुक्त हुए। इस तरह श्री निर्मल पंचायती अखाड़े का सृजन हुआ।

नोट :—श्री निर्मल पंचायती अखाड़े का इतिहास भी भारत की विभिन्न भाषाओं में विविध ग्रन्थों में लिखा गया है। यहाँ ग्रन्थ बढ़ने के भय से संकेत मात्र से दिखा दिया है। विस्तृत जानकारी हेतु अन्य ग्रन्थों को देखें।

□

श्री निर्मल अखाड़ा के श्री "महन्त" पद पर

"जो उपजिओ सो बिनस है" इस गुरु-वाक्य के कथनानुसार जब श्री महन्त पं० जीवन सिंह जी महाराज ब्रह्मलीन हुए तो सम्वत् १६६१ में श्री निर्मल पंचायती अखाड़ा कनखल में निर्मल सम्प्रदाय के प्रतिष्ठित महापुरुषों का एक विराट सम्मेलन हुआ।

अब तक आप को ख्याति सम्पूर्ण निर्मल भेष में फैल गई थी। छोटे-बड़े सभी महन्त-सन्त आप के यशोगुणों का गान करते थे। उस विराट सभा में सभी महापुरुषों ने आप से इस "श्री महन्त" के उच्च आसन को सुशोभित करने का अनुरोध किया। पूज्यनीय महापुरुषों के विशेष आग्रह करने पर आपने संस्था के गुरुतर कार्यभार को अपने सुदृढ़ हाथों में लेकर सम्पूर्ण निर्मल भेष को आनन्दित कर दिया। इस अवसर पर सभी महापुरुषों ने आपकी विधि पूर्वक पूजा की। पश्चात् महाराजा पटियाला की ओर से भी विधिवत् पग दुशाला तथा पूजा की अन्य सामग्री सादर श्री चरणों में अर्पित की गई।

इस पद पर आप जीवन पर्यन्त रहे। इतने लम्बे समय में आपने अखाड़े की चारों ओर से श्री वृद्धि की। लाखों प्राणियों को अपने दर्शन मे कृतार्थ किया। कितने ही कुंभ, अर्द्ध-कुम्भ, यज्ञ, पाठ चतुर्मास आदि करके लाखों प्राणियों को प्रभु-चरणों में लगाया।

तेरे कवन कवन गुण कह कह गावां,
तू साहिब गुणी निधाना।

इतने समय में आपने कितने ही उपकार किए। उन उपकारों को लिख देना हम अल्प वुद्धि वालों के बस की बात नहीं। परन्तु फिर भी संक्षिप्त रूप से यथा मति अलग-अलग उन उपकारों का वर्णन यहाँ कर रहे हैं।

श्री निर्मल पंचायती अखाड़ा की उन्नति :—

श्री महन्त के पद पर रहकर आप ने अखाड़े को हर तरह से ऊंचा उठाया। संस्था की आर्थिक उन्नति यद्यपि पूज्य श्री महन्त बाबा महताब सिंह जी से लेकर पूज्य श्री महन्त पं० जीवन सिंह जी के काल में भी हुई। परन्तु जो अभ्युन्नति आपने की वह अकथनीय है। कुछ संक्षिप्त विवरण नोचे दे रहे हैं।

सन् १६३५ में ग्राम ब्रह्मपुर, गाडोवाल सम्पूर्ण ग्राम खरीदे। रायपुर ग्राम आधा खरीदा।

सन् १९४२ में मिर्जापुर तथा बहादुरपुर का हिस्सा खरीदा।

सन् १९४३ में इब्राहम पुर गाँव खरीदा।

सन् १९४७-४८ में पुलिस वाले मकान की ऊपरी मंजिल बनवाई तथा कुठार वाली हवेली को नई शक्ल दी।

सन् १९५१ में प्रयागराज कोठी में नव-निर्माण करके गुरुद्वारा, क्वार्टर आदि बनाए। मनेथु ग्राम की जमींदारी खरीदी।

कई लाख रुपया खर्च करके पटियाला, संगरुर में नई इमारतें तैयार करवाईं।

नासिक जिला में त्रयम्बकेश्वर का कुम्भ लगता है। वहाँ अखाड़े का कोई मकान नहीं था। यहाँ आपने एक ओर जहाँ भव्य इमारत जिसमें एक सुन्दर बगीचा, गुरु-दरबार, लंगर, रिहायशी कमरे हैं, बनाई; वहीं पहाड़ी के पीछे वाली जमीन भी खरीदी।

लाखों रुपए खर्च करके हरिद्वार, कनखल में दुकाने बनवाईं, निर्मल छावनी बसाई जिसमें बहुत सुन्दर क्वार्टर बने हुए हैं। निर्मल छावनी के चारों ओर दीवार बनाई। ललतारो नदी की ओर बाँध बनाया। ज्वालापुर रोड पर एक नगर बसाया जिसका नाम राम नगर रखा।

इसी तरह उज्जैन म० प्र० में भी जहाँ कुम्भ का मेला लगता है, अखाड़े की कोई इमारत नहीं थी। आपने महावीर बाग के अंदर एक कई एकड़ का बाग खरीदा। इस बाग के चारों ओर करीब आठ फीट उँची काले पत्थर की दीवार है। बीच में बावली लगी है। इसमें लाखों रुपए खर्च करके आपने भव्य इमारत बनवाई जिसमें गुरु-मन्दिर, लंगर आदि का सुन्दर प्रबन्ध है।

प्रयागराज तथा पटना साहिब के दोनों गुरुद्वारों का जो स्वरूप आपके आशीर्वाद से बना वह लिखने से नहीं, देखने से ही बनता है। पटना साहिब में बाला-प्रीतम के स्थान की सेवा मित्रवर श्रीमान् महन्त बलबीर सिंह जी शास्त्री (वर्तमान में श्री महन्त साहिब) द्वारा सम्पन्न हुई। इसमें गुरु-दरबार, लंगर तथा आए यात्रियों के रहने हेतु आधुनिक ढंग से बने कमरे देखने लायक हैं। इसी तरह अहियापुर मुहल्ला इलाहाबाद में तपस्थान पर गुरु मन्दिर, कमरे लंगर आदि तैयार करवाए।

अभी कुछ वर्ष पूर्व ही कुरुक्षेत्र में सुन्दर क्वार्टरों का निर्माण करवाया। बनारस में सती चौतरा मुहल्ले के अन्दर २० दुकाने, गुरु दरबार, लंगर तथा रिहायशी कमरे करीब सात लाख रुपये की लागत से बनवाए। अपना शरीर छोड़ने से पूर्व ही आपने बनारस में हड़हा मुहल्ले के अंदर लाखों रुपया लगवा कर करीब ४१ दुकानें बनवाईं। ऊपर आठ कमरे तैयार करवाए।

यह सम्पूर्ण कार्य आपने अपनी योग्यता से सहज-स्वभाव से ही किया। इन पुनीत कार्यों में आपका सहयोग श्रीमान् महन्त पं० वलवीर सिंह जी शास्त्री (वर्तमान श्री महन्त साहिवजी) श्रीमान् महन्त उत्तम सिंह जी सैक्रेट्री श्री निर्मल पं० अ० कनखल, श्रीमान् महन्त निरञ्जन सिंह जी ज्ञानी अमृतसर, श्रीमान् महन्त सरमुख सिंह जी तथा आपके पौत्र शिष्य तथा मेरे प्रिय सन्त ज्ञान सिंह जी शास्त्री आदि ने तन-मन से किया।



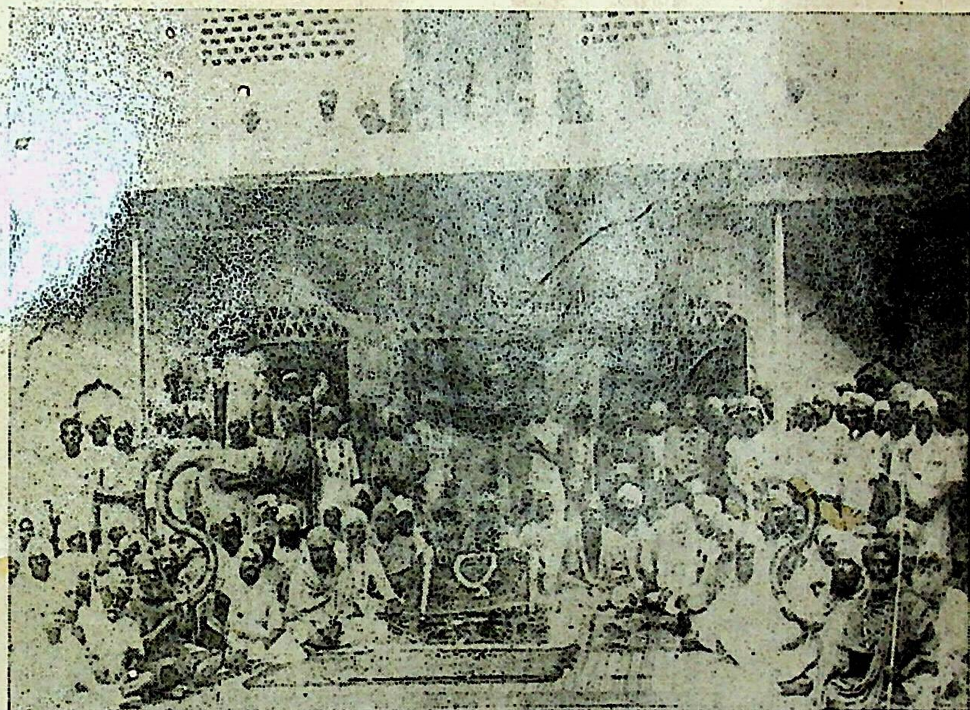
रम्मत अखाड़ा तथा अमृतसर में चतुर्मास

पूर्व में हम संक्षिप्त रूप से श्री निर्मल पंचायती अखाड़े का इतिहास लिख आए हैं। उस समय घूम-घूम कर गुरु उद्देश्यों का प्रचार करने के लिए "रम्मत अखाड़ा" की स्थापना की गई थी। इसका कार्य सम्पूर्ण भारत वर्ष के पवित्र तीर्थों, ग्रामों, शहरों तथा कुंभ आदि पर्वों पर पहुँच कर धर्म-प्रचार करना था। इसका सारा प्रबन्ध केन्द्रीय श्री निर्मल पचायती अखाड़ा की ओर से होता है।

इसमें श्री गुरुग्रन्थसाहिब जी की सवारी हेतु हाथी, सन्त लोगों की सवारी हेतु घोड़े, सभा हेतु चंदोआ, शमियाना, लंगर का सामान, सामान ढोने हेतु बैलगाड़ी आदि होते। महन्त, कारबारी, भंडारी, पुजारी, कीर्तन हेतु रागी जत्था, कथा के लिए निर्मले विद्वान् साधु होते। गाँव के महन्तों, प्रेमियों की ओर से रम्मत का स्वागत होता, भंडारे होते रहते।

वर्षा ऋतु के समय किसी एक स्थान पर चर्तुमास किया जाता। इस चतुर्मास के दौरान सभी महन्त, सन्त, ज्ञानी, पण्डित, कथाकार अपने प्रवचनों द्वारा धर्मोपदेश करते। यह सारा कार्यक्रम महामहिम श्री महन्त साहिब जी की अध्यक्षता में होता था। ऐसे कुछ चर्तुमासों का संक्षिप्त विवरण हम नीचे लिख रहे हैं।

सम्वत् २००६ में श्री अमृतसर जी में चर्तुमास हुआ। श्री मान् महन्त हाकम सिंह जी डेरा बाबा मिश्रा सिंह, श्रीमान् महन्त जीवन सिंह जी डेरा ठाकुरां, श्री मान् महन्त मूल सिंह जी कौलसर, महन्त गणेश सिंह जी डेरा अन्तर्यामी आदि समूह निर्मले सन्तों ने, शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबन्धक कमेटी के जत्थेदार ऊधम सिंह जी नागोके, अध्यक्ष शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबन्धक कमेटी स० ईश्वर सिंह जी मझैल, जत्थेदार मोहन सिंह जी नागोके इत्यादि पदाधिकारीयों के सहयोग से इस चर्तुमास का प्रबन्ध हुआ। अकालीयां वाला बाग में रम्मत अखाड़े का कैम्प लगा। इस अवसर पर महामहिम श्री महन्त पं० स्वामी सुच्चा सिंह जी महाराज की अध्यक्षता में बहुत से निर्मले विद्वान् साधु इकट्ठे हुए। इनमें से महन्त दयाल सिंह जी लाहौर, महन्त हरनाम सिंह जी गुजरां वाला, महन्त सुच्चा सिंह जी लाहौर, महन्त कृपा सिंह जी, महन्त किशन सिंह जी वरपाल, ज्ञानी बिशन सिंह जी क्रीट, पं० गुरुदीप सिंह जी दर्शन केसरी, वर्तमान श्री महन्त साहिब पं० बलवीर सिंह जी वेदान्ताचार्य, पं० सन्त सिंह जी वेदान्ताचार्य, निर्मल स्वामी लाल सिंह जी, ज्ञानी भगवान सिंह जी सहारनपुर, पं० राम बसन्त सिंह जी पटियाला, पं० हकीकत सिंह जी अरविन्द,



आप के श्री महन्त पद पर चुनाव होने का दृश्य

श्री अमृतसर में चतुर्मास

पं० अर्जुन सिंह जी मुनि, वेदान्त वागीश पं० नारायण सिंह जी, पं० कल्याण सिंह जी, महन्त शेर सिंह जी, पं० मणि सिंह जी सार्वभौम, बावा वीर सिंह जी, पं० हरनाम सिंह जी, पं० अर्जुन सिंह जी भिक्षु, पं० गुरुबख्श सिंह जी शास्त्री काशी आदि के नाम वर्णन योग्य हैं।

एक खुला पण्डाल सजाया गया था जिसमें श्री गुरुग्रन्थसाहिब जी की हजूरी में हमारे पूज्य महाराज जी अपनी अचल समाधि में बैठ जाते। सर्वप्रथम गुरुवाणी कीर्तन होता। उपरांत आये निर्मले विद्वान् अपने विद्वत्तापूर्ण प्रवचनों से सत्संग प्रेमी प्रभु-भक्तों को आनन्द-सागर में पहुँचा देते। यह कार्यक्रम श्रावण मास को २२ वीं तिथि से आरम्भ होकर कार्तिक मास की ८ वीं तिथि तक चला।

इधर दानी सज्जनों द्वारा रम्मत अखाड़े के महापुरुषों के लिए भंडारे शुरू हो गए। प्रतिदिन भंडारे होते थे। जलूस के रूप में सन्त मण्डली जाती थी। सन्त मण्डली के दर्शन करके अमृतसर निवासी गुरु-भक्त प्रेमी दूर से ही हाथ जोड़ दण्डवत प्रणाम करते। सन्तों की चरण-धूलि को अपने माथे पर चढाते थे। इन भंडारों के अंत में शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबन्धक कमेटी की ओर से भंडारा हुआ। समूह में निर्मल साधु हमारे महाराज जी के पीछे चल रहे थे। आगे बैंड बाजे, रणसिंगे बजते जा रहे थे। जलूस की शकल में पहुँच कर महाराज जी ने श्री दरबार साहिब में गुरु महाराज के समक्ष अरदास कराई। अकाल तख्त की ओर से सिरोपा आप को भेंट किया गया। भंडारा छक कर संत मण्डली वापस उसी प्रकार अपने स्थान पर लौट आई।

इस कार्यक्रम की समाप्ति पर अमृतसरवासी महन्तों, सन्तों, सद-गृहस्थ प्रेमियों की ओर से आपको विधिवत पूजा की गई तथा यह विदायगी पत्र सम्मान पूर्वक पढ़कर सुनाया गया।

१ ओंम सतिगुर प्रसादि

संत कृपाल दयाल दमोदर काम क्रोध बिखु जारे।
राज माल जोबन तनु जीअरा इन ऊपर लै बारे॥

"विदायगी पत्र"

जो कि

श्री निर्मल पंचायती अखाड़ा के श्री महन्त पं० सुच्चा सिंह जी को अमृतसर निवासी समूह महन्तों-सन्तों की ओर से २३-१०-५२ को सम्मान सहित भेंट किया गया।

इज्जत आन वाले सुच्ची शान वाले, दिल में धर्म का प्रेम रखान वाले।
श्री महन्त पण्डित सुच्चा सिंह जी, जीवन मुक्त हो जगत तरान वाले।
अहं ब्रह्म निश्चय मुंह से भाव भक्ति, दोन दुःखियों का दरद वटान वाले।
सति गुरु नानक श्री दशमेश जी के, चरण पूजकर परम पद पान वाले।
कर्म आपका सदा उपकार करना, भूले हुओं को रास्ता दिखान वाले।
करुणा मुदता मैत्री को धार के, सतिनाम का जाप जपान वाले।
विद्या की टकसाल लाई आपने, सदा सदावर्त हैं लान वाले।
हिन्दोस्तान पञ्जाब प्रचार करके, गुरु घर की महिमा बधान वाले।
कलगीधर के जब निशान झूलें, रणसिंघों की घनघोर लग जावे।
दर्शन करके संगत निहाल होवे, शोभा संतों की दुगनी बढ़ जावे।

विद्या-मार्तण्ड, भेष-शिरोमणि श्रीमान् १०८ श्री महन्त साहिव पण्डित सुच्चा सिंह जी !

आप को छत्र छाया में श्री निर्मल पंचायती अखाड़ा ने हमारे निमन्त्रण देने पर श्री गुरु राम दास जो की पवित्र नगरी श्री अमृतसर में पधारकर, जिस शान से चतुर्मास लगाया है, वह अपने में स्वयं उदाहरण है।

श्री गुरु नानक देव जी के वरदान से "मारिआ सिक्का जगत विच नानक निर्मल पंथ चलाया" अनुसार निर्मल भेष के विद्वान् पण्डितों ज्ञानीओं ने गुरुवाणी, वेद शास्त्र तथा गुरु इतिहास द्वारा सुधासर निवासी श्रद्धालु जनता को निश्चय करा दिया है कि निर्मल भेष का हर विद्वान् श्री गुरु नानकदेव जी के अद्वैत सिद्धान्त का सच्चा प्रचारक है।

निर्मल भेष के शिरोमणि रत्न जी !

यह बात आपके शान्त एवं गंभीर स्वभाव से सम्बन्ध रखती है कि २२ श्रावण से ८ कार्तिक सम्वत् २००६ के इतने दीर्घ समय तक धर्म प्रचार के केन्द्र श्री अमृतसर में लगातार निर्विवाद गुरुमत्त का प्रचार हुआ है। अतः जनता के हृदय-कमलों में प्रफुल्लित होती हुई एक अटल याद कायम रहेगी।

हमको तथा श्री अमृतसर निवासी समूह सत्संगी प्रेमियों को इस बात की बहुत प्रसन्नता हुई है कि १६ साल के पश्चात् श्री निर्मल पंचायती अखाड़ा ने देशके प्रसिद्ध विद्वानों सहित दर्शन देकर कृतार्थ किया है।

अंत में हम सब आप सबंका धन्यवाद करते हुए क्षमा के याचक हैं। आशा है सेवकों से सेवा में रह गई त्रुटियों को न देखकर हमें अपना कृपापात्र बनाकर रखेंगे।

हम हैं—

श्री अमृतसर निवासी समूह निर्मल तथा सेवा पंथी महन्त सन्त।

चतुर्मास पञ्जगराईं कलाँ में

निर्मल सम्प्रदाय का एक उपसम्प्रदाय महिमा शाही है। इसका एक बहुत ही विशाल डेरा जि० फरीदकोट पञ्जाब में पञ्जगराईं नामक कस्बे में है।

सन् १९४० में श्रीमान् पण्डित त्रिलोक सिंह जी, महन्त माहणा सिंह जी ने पूज्य महाराज जी को प्रार्थना करके चतुर्मास अपने डेरे में कराया। नियत समय पर रम्मत अखाड़ा यहाँ पहुँच गया। हरिद्वार से हमारे पूज्य महाराज श्री महन्त साहिब जी भी सन्त मण्डली समेत पहुँच गए। बाहर से निर्मले विद्वान् पण्डित भी पहुँच गए। इनमें पण्डित सम्पूर्ण सिंह जी, पं० हरि कृष्ण सिंह जी उगो, महन्त गुरुदीप सिंह जी दर्शन केसरी, ज्ञानी लाल सिंह जी कोट कपूरा, ज्ञानी दयाल सिंह जी परवाना, ज्ञानी बखतौर सिंह जी, श्री हीरालाल जी नाथ के नाम वर्णन योग्य हैं।

डेरे के बाहर खुले पण्डाल में प्रतिदिन सुबह-शाम कथा कीर्तन का प्रवाह चल पड़ा। आस-पास के ग्रामों से श्रद्धालु जन मण्डलियों के रूप में शब्द गायन करते हुए आने लगे। पूरा समय डेरे में मेले का दृश्य दिखाई देता रहा। श्रद्धालु जन पूज्य महाराज जी के दर्शन करके बहुत आनन्दित होते थे। लेखक ने स्वयं जो वहाँ कथा भी करता था, उस दृश्य को देखा था। जिसमें लोग सन्तों के प्रवचन सुनकर तथा महाराज जी के दर्शन कर आनन्द विभोर हो जाते थे। अभीतक प्रेमी उस आनन्दमय समय को नहीं भूले हैं।

चतुर्मास की समाप्ति पर एक घोड़ा, गाय तथा बहुत सी भेंट अखाड़े को डेरे तथा ग्राम की ओर से की गई। अंत में मान-पत्र पढ़कर पूज्य महाराज जी सहित सम्पूर्ण सन्तों को विदाई दी गई।

इसी तरह बहुत से चतुर्मास आपकी अध्यक्षता में रम्मत अखाड़ा की ओर से लगभग सम्पूर्ण निर्मल स्थानों पर हुए। जिनका पूरा विवरण लिखें तो यह एक अलग ग्रन्थ ही तैयार हो जाएगा।

□

श्री निर्मल पंचायती अखाड़ा की हीरक जयन्ती

सन् १९६२ में निर्मल सम्प्रदाय के दो महान् समागम आये, जिसमें एक था हरिद्वार का कुम्भ तथा दूसरा निर्मल अखाड़ा की हीरक जयन्ती। इस १०० साला जयन्ती को मनाने के लिए निर्मल विद्वानों की समिति गठित की गयी। इसमें श्रीमान् महन्त हाकमसिंह जी प्रधान निर्मल महामण्डल अमृतसर, श्रीमान् महन्त दयालसिंह जी लाहौर वाले, श्रीमान् महन्त गुरुदीप सिंह जी केशरी वाराणसी, श्रीमान् पं० नरहरिसिंह जी नासिक इत्यादि महात्मा थे। सर्वप्रथम पटियाला पति महाराजा यादवेन्द्र सिंह जी जो उस समय पैपसू के गवनर थे को इस जयन्ती में सम्मिलित होने के लिए कहा गया। महाराजा ने भी १३ अप्रैल वैशाख संक्रान्ति के दिन निर्मल छावनी हरिद्वार में आने का निमंत्रण स्वीकार कर लिया। इस साल का कुम्भ बड़े ही धूम-धाम से मनाया गया। निर्मल छावनी में एक वड़ा पण्डाल लगाया गया। जिसमें पूज्य श्री महन्त जी महाराज की अध्यक्षता में समूह निर्मले संतों, महन्तों तथा श्रद्धालु जनता की शोभा यात्रा श्री गुरुग्रन्थ साहिब जी समेत निर्मल छावनी पहुँची। प्रवेश शाही में सबसे आगे बैण्ड बाजे अपनी मधुर धुने बजाते हुए चल रहे थे। इनके पीछे प्रथम श्री महन्त बाबा महताब सिंह जी, गुरुनानक देव जी तथा श्री गुरु गोविन्द सिंह जी की दिव्य मूर्तियां सुनहरी पालकियों में थीं। सोने तथा चाँदी के आभूषणों से सजे हुए हाथी पर सुनहरा झूल पड़ा हुआ था जिसके ऊपर स्वर्णजड़ित हौदे में श्री गुरुग्रन्थ साहिब जी की सवारी थी, जिसपर सुनहरी छत्रछाया हुआ था तथा चंवर डुलाये जा रहे थे। गुरु महाराज जी की सवारी के आगे बैंड अपनी मधुर धुने बजा रहा था तथा महन्त गुरुबचन सिंह जी अमृतसर वालों की गतका पार्टी अपनी कला की प्रदर्शनी कर रही थी। उसके पीछे एक सुसज्जित रथपर सुनहरी छत्र के नीचे पूज्य श्री महन्त जी विराजमान थे। जिनके आगे एक वैण्ड बाजा मधुर धुने वजा रहा था, तथा सन्त महात्मा रणसिङ्गे बजा रहे थे। उसके पीछे बहुत से निर्मले महन्त विद्वान् महापुरुष हाथियों के ऊपर स्वर्णयुक्त हौदों पर बैठे हुए दर्शन दे रहे थे।

दूसरे दिन छावनी में ध्वजा खड़ी हो जाने पर गुरुमत का प्रचार एवं लङ्गर शुरू हो गया। एक विशाल पण्डाल के नीचे दीवान सजा हुआ था। बड़े-बड़े निर्मल व्याख्यान-वाचस्पति अपने व्याख्यानों से जनता को मोहित कर रहे थे। उन विद्वानों में से पं० बलवीर सिंह जी शास्त्री पटना, पं० अर्जुनमुनि जी व्याकरणाचार्य, ज्ञानी विशनसिंह जी किरीट, पं० निहालसिंह जी, ज्ञानी जगतसिंह जी अम्वाला, महन्त गुरुदीप सिंह जी केशरी, पं० नारायण सिंह जी वेदान्ती, स्वामी जगदीश हरि जी

शास्त्री वेदान्ताचार्य इत्यादि महापुरुषों के नाम स्मरणीय है। प्रतिदिन आशा जी की वार के उपरान्त प्रसिद्ध विद्वान् ज्ञानीं चन्नणसिंह जीं गुरने कलां वाले भी गुरु ग्रन्थ साहिब की कथा करते थे। ज्ञानी जी की विद्वत्ता तथा कथा की शैली अपूर्व थी, आप की अद्भूत कथा श्रवण कर पूज्य श्री महन्त जी महाराज अति प्रसन्न हुए और कहा कि गुरुवाणी की कथा केवल ज्ञानो जी ही करेंगे। इस तरह एक महीने तक गुरुमत का प्रचार होता रहा।

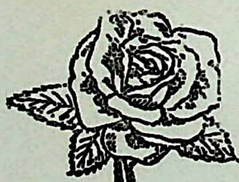
अखाड़े की सौ साला जयन्ती के उपलक्ष्य में २५ अखण्ड-पाठ शुरू किये गये। जिनका भोग खालसा के जन्म दिन १३ अप्रैल वैशाख संक्रान्ति को किया गया। इसी दिन खीर, लड्डू, पूड़े इत्यादि अनेक प्रकार के पदार्थों का भण्डारा प्रातः से सायं तक चलता रहा। सम्पूर्ण षड्-दर्शदन साधु समाज को निमंत्रित किया गया था। जिसमें सैकड़ो की गिनती में वैष्णव, सन्यासी, दादूपन्थी, सेवापन्थी, निहङ्ग सिंह तथा चीफ खालसा दिवान, शिरोमणि गुरुद्वारा कमेटी एवं विभिन्न सिक्ख सभाओं के प्रमुख प्रतिनिधि पहुँचे। पूर्व निर्धारित समय के अनुसार महाराजा यादविन्दर सिंह जी भी पहुँच गए। श्री गुरु ग्रन्थ साहिब जी को प्रणाम करके तथा पूज्य श्री महन्त जी महराज जी के चरणों में प्रणाम करके बैठ गए। स्वागत समिति द्वारा अखाड़े में आने पर महराजा का धन्यवाद किया गया। पूज्य श्री महन्त जी महराज की ओर से अभिनन्दन पत्र पं० बलवीर सिंह जो शास्त्री पटना वाले ने हिन्दी में पढ़ा।

श्री निर्मल पंचायती अखाड़े की स्थापना का कारण, कुम्भों पर अखाड़े का योगदान, सिक्ख महाराजाओं विशेष रूप से महाराजा नरेन्द्रसिंह जी पटियाला की अखाड़े की स्थापना में सहानुभूति, बाबा महताब सिंह जी का तप-तेज-त्याग, गुरुमत गुरुवाणी का प्रचार, अन्न क्षेत्र लगाने इत्यादि अखाड़े का योगदान और प्राप्तियों पर बड़े-बड़े व्याख्यान हुए। इस स्थान पर सारा निर्मल पंथ एकत्रित हुआ था। महाराज यादवेन्द्र सिंह जी ने संक्षेप में किन्तु अत्यन्त सारगभित व्याख्यान देते हुए कहा कि कि निर्मल सम्प्रदाय द्वारा गुरुमत प्रचार, साहित्य-सृजन, त्याग, सुमिरन, मानव-कल्याण के लिए सदुपदेश तथा भारत के कोने-कोने मे गुरुनानक वाणी का प्रचार एवं प्रसार इस सारी सेवा की जितनी प्रशंसा की जाय वह कम ही है। मेरें बड़ों में विशेषतया महाराजा साहिब नरेन्द्र सिंह जी ने जिस भावना से श्री निर्मल पंचायती अखाड़े की स्थापना करवाई थी यह संस्था उसी आदर्श सिद्धान्त के अनुसार ही नामवाणो, सेवा-सुमिरन का प्रचार-प्रसार कर रही है। हमारे बड़ों का दिया दान सफल हुआ है। मुझे इस सौ साला हीरक जयन्ती पर महात्माओं के दर्शन करने का सौभाग्य मिला है विशेष रूप से पूज्य श्री महन्त जी महाराज के दर्शन से मन में परमानन्द एवं शान्ति हुई है। इसके लिए मैं प्रवन्धकों का हार्दिक धन्यवाद करता

हूँ तथा आशा करता हूँ कि भविष्य में भी यह संस्था बड़ों के बनाए नियमानुसार सेवा करती रहेगी।

सति श्री अकाल के जयकारों से महाराजा का व्याख्यान समाप्त हुआ। पूज्य श्री महन्त जी महाराज को प्रणाम करके तथा शुभाशीर्वाद लेकर महाराजा साहिब दिल्ली चले गये। इस प्रकार पूरे एक माह लगातार आनन्दमय वातावरण में यह कुम्भ सम्पन्न हुआ। पूज्य महाराज श्री महन्त जी की अध्यक्षता में अबतक हरिद्वार के चार कुम्भ मनाए गए। साथ ही श्री निर्मल पंचायती अखाड़ा की गौरवमयी हीरक जयन्ती भी आप जी की अध्यक्षता में ही मनायी गयी।

□



निर्मल साहित्य का प्रकाशन

निर्मल सम्प्रदाय विद्वानों तथा विरक्तों का सम्प्रदाय है। ब्रह्मलीन स्वामी करपात्री जी महाराज कहा करते थे कि निर्मला साधु अगर विद्वान और विरक्त नहीं है तो उसे निर्मल संत कहना मुश्किल है। प्राचीन निर्मले सन्तों ने वेद, शास्त्रों तथा गुरुवाणी के विभिन्न विषयों पर बहुत से ग्रन्थ लिखे। उन ग्रन्थों से सदा ही जन-मानस को सद्-उपदेश मिलता रहा है। कठोर तपस्या तथा विद्वत्तापूर्ण लिखे उन ग्रन्थों का पुनः प्रकाशन करने के लिए आपने "निर्मल साहित्य प्रकाशन विभाग" की स्थापना की।

इसमें श्रीमान् महन्त पं० गुरुदीप सिंह जी दर्शन केसरी, श्रीमान् पं० बलवीर सिंह जी शास्त्री (वर्तमान श्री महन्त श्री. नि. पं. अ. कनखल), श्रीमान् पं. हकोकत सिंह जी अरविन्द, श्रीमान् पं० निहाल सिंह जी, श्रीमान् ज्ञानी बिशन सिंह जी क्रीट, श्रीमान् पं० करतार सिंह जी तथा लेखक शामिल हैं।

आप के आशीर्वाद से इस विभाग ने बहुत से ग्रन्थों का प्रकाशन किया जिसमें प्रमुख हैं :—

(१) श्री गुरु तीर्थ संग्रह लेखक स्व. पं० तारा सिंह जी नरोत्तम गुरुमुखी लिपि संपादक पं० करतार सिंह जी।

(२) जीवन पं० हरि सिंह जी ऋषिकेश हिन्दी में।

(३) श्री निर्मल पंचायती अखाड़ा का संक्षिप्त इतिहास हिन्दी में, लेखक स्व. पं० अर्जुन सिंह जी मुनि।

(४) निर्मल पंथ प्रदीपिका, लेखक ज्ञानी ज्ञान सिंह जी गुरुमुखी में, सम्पादक सन्त इन्द्र सिंह चक्रवर्ती।

(५) श्री मोक्ष पंथ प्रकाश, लेखक पं० गुलाब सिंह जी हिन्दी में, सम्पादक महन्त गुरुदीप सिंह जी केसरी।

(६) श्री गुरमत निर्णय सागर गुरुमुखी लिपि, लेखक पं० तारा सिंह जी नरोत्तम, सम्पादक —यह लेखक।

इसतरह आप की प्रेरणा से बहुत से सद्-ग्रंथों का प्रकाशन हुआ है तथा आगे होता रहेगा। आपके आशीर्वाद से तथा श्री गुरु नानक युनिवर्सिटी अमृतसर में, गुरु नानक अध्ययन विभाग के प्रोफैसर प्रीतम सिंह जी के अथक परिश्रम से २८ से ३० मार्च सन् १९७९ में एक गोष्ठी उस विश्व विद्यालय में हुई थी। जिसका विषय था "निर्मल पंथ दी पञ्जाब दे धर्म, दर्शन ते साहित्य नूं देण"। इस गोष्ठी में विभिन्न विद्वानों ने भाग लिया था।

इस तरह जहाँ आपने आम जनता में गुरु सिद्धान्तों का प्रचार सतसंग आदि करके किया, वहीं ग्रन्थ प्रकाशन द्वारा भो आप ने इस कार्य को आगे बढ़ाया।



श्री अमृतसर जी का चारसौ वर्षीय स्थापना समारोह

२६, २७, २८ अक्टूबर सन् १६७७ ई० में गुरु पंथ ने श्री अमृतसर साहिब का स्थापना दिवस मनाने हेतु कार्यक्रम बनाया। यह समारोह मनाने हेतु सभी नानक नाम लेवा सम्प्रदाएं इकट्ठी हुईं। इसमें जहाँ ग्रन्थी समागम, सिंह सभा समागम, कीर्तन दरबार, कवि सम्मेलन, स्त्री समागम, बुद्धिजीवी सम्मेलन आदि विभिन्न प्रोग्राम थे, वहीं पर संत समागम का भी विशेष कार्यक्रम था। शि. गु. प्र. क. ने जहाँ निहंग सिंहों के जत्थों, सेवा पंथी, उदासीन तथा अन्य सिक्ख सन्तों को निमन्त्रित किया, वहाँ पूज्य श्री महन्त साहिब जी महाराज को भी अपनी सम्पूर्ण सन्त मण्डली सहित पधारने का निमन्त्रण भेजा।

निश्चित कार्यक्रम अनुसार महाराज जी संत मण्डली सहित २५-१०-७७ को श्री अमृतसर में डेरा बाबा मिश्रा सिंह पहुँच गए। बहुत से निर्मल विद्वान् साधु भी पहुँचने शुरू हो गए। यह समारोह स्वयं में एक उदाहरण था। दूर-दूर से गुरु प्रेमी पहुँच रहे थे। हर घर धर्मशाला बना हुआ था। हर रसोई घर गुरु का लंगर बन गया था। सभी मठ, मन्दिर, गुरुद्वारे, स्कूल, कालेज, युनीवर्सिटी आदियों में लगे कैम्प बाहर से आये यात्रियों से भरे पड़े थे। निर्मल साधु भी डेरा बाबा मिश्रा सिंह, निर्मल बुंगा महन्त मूल सिंह जी, तपोवन आश्रम सन्त भूरी वाले, डेरा अन्तर्यामी आदि निर्मल स्थानों में पहुँच गए थे।

२६ अक्टूबर को एक बहुत विशाल जलूस श्री गोइंदवाल से चला। इस शोभा यात्रा में सबके आगे अश्वारोही चल रहे थे। फिर चार सौ स्कूटर मोटर साइकल, पीछे चार सौ कारें, उसके पीछे हाथी, उसके पीछे भारत के विभिन्न स्कूलों, कालेजों, विश्वविद्यालयों के लड़के मार्च-पास्ट करते हुए चल रहे थे। इन लड़कों में करीब १००, लड़के स्केटिंग करते हुए चल रहे थे। उसके पीछे बहुत से बैंड बाजे बज रहे थे। जिनके पीछे खुली जीप में केशरी रंग की पोशाकों में सजे पांच प्यारे थे। फिर श्री गुरु ग्रन्थ साहिब जी महाराज की सुनहरी पालकी थी। जिस पर पांचों तख्तों के जत्थेदार गुरु हाजिरी में बैठे थे। पीछे गुरु साहिबों के पावन शस्त्र, वस्त्र तथा अन्य ऐतिहासिक सामग्री एक विशाल ट्रक में थी। उसके पीछे प्रमुख नेता सन्त हरचन्द सिंह जी लौंगोवाल, स. प्रकाश सिंह बादल, स. गुरुचरण सिंह टोहड़ा आदि चल रहे थे। पीछे हजारों की गिनती में संगत सतनाम की ध्वनि करती हुई चल रही थी।

इस शोभा यात्रा के स्वागत हेतु निर्मल सम्प्रदाय की ओर से डेरा तपोवन आश्रम में सन्त गुरुदयाल सिंह जी भूरि वालों के स्थान पर प्रबन्ध किया गया।

आश्रम के मुख्य गेट पर एक भव्य मंच बनाया गया। जिस पर सैंकड़ों की गिनती में विरक्त, महन्त, सन्त, विद्वान, मठाधीश बैठे हुए थे। सब सन्तों के मध्य में उच्चासन पर महामहिम हमारे पूज्य गुरुदेव महाराज जी देवगुरु बृहस्पति की तरह सुशोभित हो रहे थे। ऊपर आकाश से वायुयान द्वारा फूलों की वर्षा हो रही थी तो नीचे प्रेमी जन आप पर मुग्ध होकर फूल वर्षा कर रहे थे।

ज्यों ही श्री गुरु ग्रन्थ साहिब जी महाराज की शोभा यात्रा वाली गाड़ी सन्तों के आगे पहुँची पूज्य महाराज जी की ओर से सन्त गुरुदयाल सिंह भूरि वाले, महन्त गुरुदीप सिंह जी, पं. बलवीर सिंह जी शास्त्री, महन्त मञ्जीत सिंह आदि ने पुष्पमालाएं आदि पहनाकर निर्मल मर्यादानुमार श्री गुरु ग्रन्थ साहिब जी का पूजन किया।

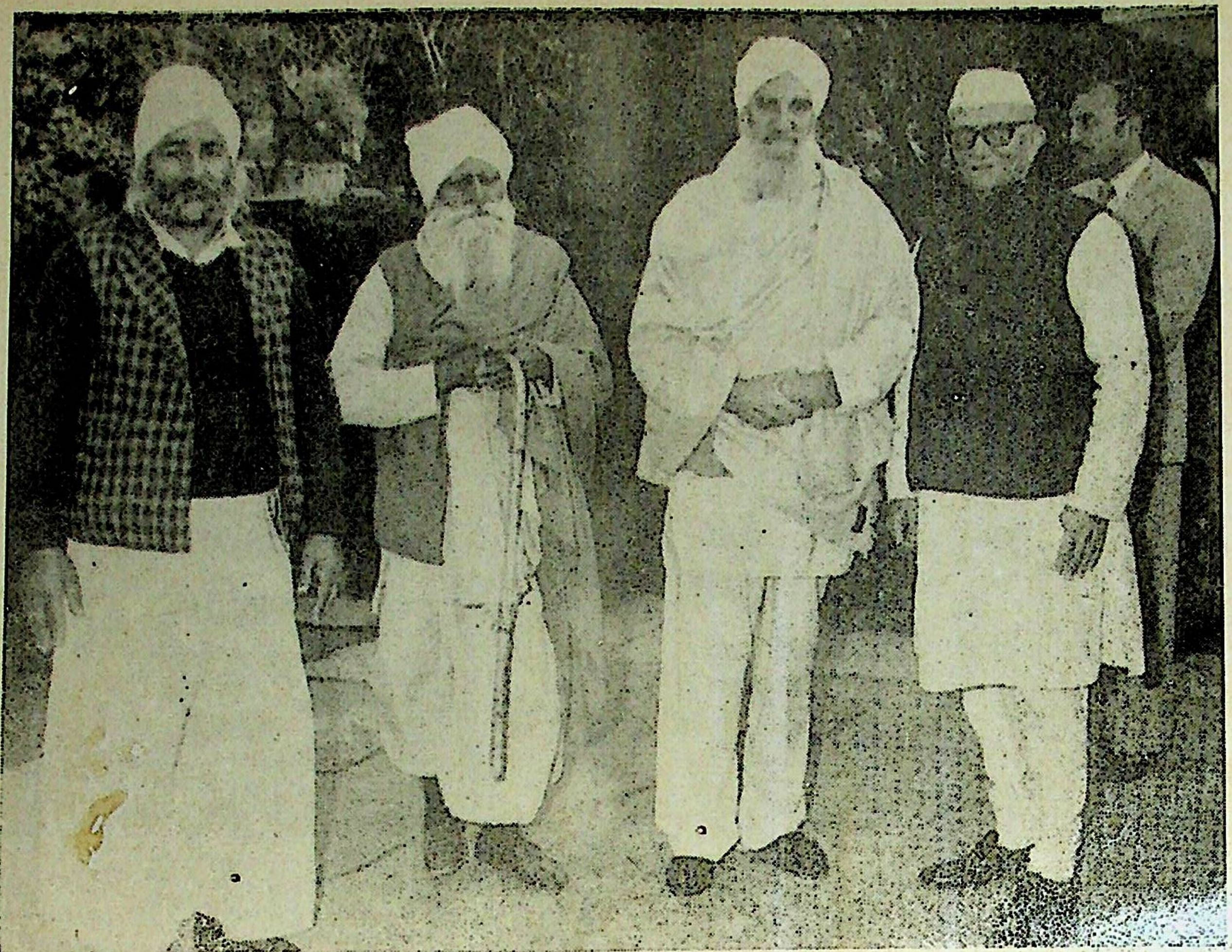
जब पंथ के नेताओं की गाड़ी आई तो श्रीमान् सन्त हरचन्द सिंह जी लोंगोवाल, स० बादल तथा स० टोहड़ा आदि ने नमस्कार किया तथा महाराज जी के चरणों में सन्देश पहुँचाया कि जलूस के रुकने से विघ्न पैदा होगा। अत: आप जो यहीं से नमस्कार स्वीकार करें। पूज्य महाराज जी की तरफ से भी श्रीमान् केसरी जो महाराज ने पंथ की चढ़दी कला के लिए नेताओं को आशीर्वाद दिया।

२७ ता० को मञ्जी साहिब पर ९ बजे सन्त समागम शुरू हुआ। जिसकी अध्यक्षता सन्त निहचल सिंह जी ने की। इसमें सभी सम्प्रदायों के साधुओं ने उत्साह पूर्वक भाग लिया। महाराज जी की अध्यक्षता में निर्मले विद्वान् साधु भी मंच पर सुशोभित हुए। सर्व प्रथम पूज्य महाराज जी ने संगत के जय-जयकार करने पर खड़े होकर मंच पर दर्शन दिए। पश्चात् सभी सम्प्रदायों की ओर से आये साधुओं ने अपने प्रवचन कहे। निर्मल सम्प्रदाय की ओर से पं० बलवीर सिंह जी, महन्त गुरुदीप सिंह जी, महन्त विचित्र सिंह जी नगाली तथा लेखक ने गुरुओं के उपकार, अमृतसर की महानता के ऊपर व्याख्यान दिये।

श्रीमान् सन्त हरचंद सिंह जी लोंगोवाल, स० टोहडा साहिब, श्रीमान् सिंह साहिब ज्ञानी साधु सिंह जी "भंवरा" जत्थेदार श्री अकाल तखत साहिब ने निर्मले सन्तों द्वारा प्राचीन तथा नवीन समय में गैर पञ्जाबी भाषी क्षेत्रों में किये जा रहे गुरुमत प्रचार की भरपूर श्लाघा की। कहा कि इन सन्तों के कारण ही सतनाम का प्रचार भारत के विभिन्न प्रांतों में फैला। हमारा शीश इन निर्मले तथा उदासीन संतों के आगे सदा झुकता रहेगा।

इस तरह प्रेमयुक्त वातावरण में यह सन्त समागम सम्पन्न हुआ। पूज्य महाराज जी समाप्ति उपरान्त सन्त मण्डली सहित डेरा बाबा मिश्रा सिंह वापस आ गये।

उस दिन रात्रि को लगभग ८ बजे अकाली दल के अध्यक्ष सन्त हरचन्द सिंह जी लोंगोवाल महाराज जी के पास डेरे आये। अमृतसर के इस स्थापना महोत्सव में



प्रधान मन्त्री के साथ सन्त मण्डली

पहुँचने हेतु निर्मल सम्प्रदाय का शुक्रिया अदा करते हुए महाराज जी को धन्यवाद दिया। काफी देर महाराज जी के पास सन्त मण्डली में बैठकर पंथ के नेता वापस चले गये।

दूसरे दिन प्रातः महाराज जी तथा सन्त मण्डली श्री हरि मन्दिर साहिब में दर्शन करने गये। कड़ाह प्रसाद की देग तथा पूजा-भेंट चढ़ाई। दर्शन-अरदास करके समूह सन्तों को अपने-अपने स्थान पर जाने को आज्ञा देकर महाराज जी वापस हरिद्वार चले गये।

दुःखी जनों की सहायता

पूज्य महाराज जी दया के समुद्र थे। संसार के प्राणी मात्र को अपनी ही आत्मा समझते थे। सबके सुख-दुःखों को अपना मानते थे।

सन् १९७७ में आंध्र प्रदेश में भयानक समुद्री तूफान आया जो खण्ड प्रलय का रूप धारण कर गया। हजारों प्राणी जान गँवा बैठे। हजारों लोग बे-घर हो गये। करोड़ों रुपये की सम्पत्ति खेती बर्बाद हो गयी। जो व्यक्ति किसी तरह जीवित बचे उनकी जिन्दगी नारकीय बन गई।

इस दुःखदाई समाचार को सुनकर आप का हृदय करुणा से भर गया। कई दिन तक मौन ही रहे। एक दिन अचानक सैक्रेटरी महन्त उत्तम सिंह जी को बुलाया। साथ में अखाड़े के मुन्शी स० दरबारा सिंह तथा कोठरी पं० हकीकत सिंह जी अरविन्द को बुलाकर कहा कि आप लोग तुरन्त ही दिल्ली जाकर प्रधान मन्त्री श्री मोरारजी देसाई को २००००) रु० उन दुःखी जनों के लिए देकर आओ।

महाराज जी की आज्ञा से उक्त तीनों सन्त पुरा माडल टाउन मेरे पास पहुँचे। प्रातः प्रधान मन्त्री श्री मोरारजी देसाई को बीस हजार का ड्राफ्ट भेंट किया। प्रधान मन्त्री जी ने नम्रता तथा धन्यवाद सहित ड्राफ्ट स्वीकार करते हुए कहा—हमारी ओर से पूज्य श्री महन्त जी महाराज को धन्यवाद तथा प्रणाम कहना।

कुम्भ पर्व

भारत ऋषि-मुनियों, गुरु अवतारों की भूमि है। यहाँ के हर क्षेत्र में तीर्थ स्थान हैं। जिनका अलग-अलग महत्त्व है। इन तीर्थ स्थानों पर विभिन्न धार्मिक मेले लगते हैं। इन धार्मिक मेलों में कुम्भ मेलों का महत्त्व सर्वाधिक है।

पुराणों के अनुसार प्राणी मात्र को रोग-शोक से मुक्ति दिलाने के लिए अमृत प्राप्ति की आशा में देवताओं और असुरों ने मिलकर समुद्र मन्थन किया था। अमृत मिल जाने के बाद असुरों को उससे बड़े कौशल से वंचित किया गया। इन्द्र के पुत्र जयंत अमृत-कुम्भ लेकर बारह दिन दसों दिशाओं में भागते फिरे। जिससे बारह स्थानों पर अमृत बिन्दु गिरे। इन बारह स्थानों में से आठ स्वर्ग में हैं और चार पृथ्वी पर। पृथ्वी पर हरिद्वार में गंगा किनारे, प्रयाग में संगम के किनारे, नासिक जिले में त्र्यम्बकेश्वर में गोदावरी के किनारे और उज्जैन में क्षिप्रा नदी के किनारे अमृत बूंद गिरे थे। हर तीसरे वर्ष के अन्त में कुम्भ योग पड़ता है।

यह योग कुम्भ राशि के वृहस्पति में होने पर हरिद्वार में वृषराशि के बृहस्पति में प्रयाग में। सिंह राशि के बृहस्पति में नासिक में तथा वृश्चिक राशि के बृहस्पति में होने पर उज्जैन में पूर्ण कुम्भ होता है। इसके अतिरिक्त हर छठे वर्ष के अन्त में हरिद्वार और प्रयाग में अर्द्ध-कुम्भ योग माना जाता है।

इन कुम्भ पर्वों पर विभिन्न सम्प्रदायों की ओर से बहुत से धर्म-प्रचार शिविर लगते हैं। जिनमें पहुँचकर तीर्थयात्री साधु-महात्माओं से धार्मिक ज्ञान प्राप्त करते हैं। सभी अखाड़े अपनी-अपनी शोभायात्राएँ निकालते हैं। अपने-अपने इष्ट देवों की मूर्तियों-आचार्यों के साथ समूह में चलकर स्नान करने जाते हैं।

श्री निर्मल पंचायती अखाड़ा भी इन कुम्भों में सजधज के साथ पहुँचता है। हमारे पूज्य महाराज जी की छत्र-छाया में श्री निर्मल पंचायती अखाड़ा ने करीब १२ कुम्भ मनाये हैं।

आपकी छत्र-छाया में कुम्भ मेलों में विशेष रौनक रहती थी। आपकी आज्ञा से सर्व प्रथम मेला क्षेत्र में एक छावनी बनाई जाती थी। जिसमें रहने, खाने, स्नान आदि करने के लिए तो व्यवस्था होती ही थी साथही बाहर से आये सद्-गृहस्थ तथा साधु जन गुरु-वाणी के कथा-कीर्तन का आनन्द ले सकें इसके लिए एक विशेष सभा-मण्डप बनता था।

सभा मण्डप में उच्च स्थान पर श्री गुरुग्रन्थसाहिब जी का प्रकाश होता था साथही आपका आसन लग जाता था। साथ में विद्वान साधु बैठते। आगे बाहर से आई श्रद्धालु जनता बैठ जाती। सभा में रागी जन गुरुवाणी कीर्तन करते। निर्मल सम्प्रदाय के विद्वान् विभिन्न उदाहरणों से गुरुवाणी जी के अर्थ को भलीभाँति समझाते। इस तरह लगभग ३० दिन तक यह कुम्भ समागम चलते। निश्चित समय पर शोभा-यात्राएँ निकाली जातीं।

शोभा-यात्रा में बहुत से हाथी-घोड़े होते। सुनहरी पालकियों में श्री गुरुनानकदेव जी, श्री गुरु गोविन्द सिंह जी, बाबा महताब सिंह जी की मूर्तियाँ होतीं जिनके आगे बैंड बाजे बजते हुए चलते।

फिर श्री गुरुग्रन्थसाहिब जी की सवारी हाथी के ऊपर स्वर्ण जटित हौदे में होती। जिस पर सन्त चंवर डुला रहे होते, ऊपर सुनहरी छत्र छाया होता। इस शोभा-यात्रा के आगे भव्य बैंड बाजा बज रहा होता। अस्त्र-शस्त्रों का प्रदर्शन होता। पांच स्वर्ण जटित पताकाएं, पांच निशानसाहिब चल रहे होते। पीछे प्रेमी जन गुरुवाणी का कीर्तन करते चल रहे होते।

फिर इस शोभा-यात्रा के नायक हमारे महाराज जी की शोभा-यात्रा आती। आप सुनहरे हाथी पर सुनहरे हौदे में बैठे होते। पीछे सेवादार सन्त रत्नजटित सुनहरी छत्र लेकर बैठा होता। आगे बैंड बाजा अपनी मधुर धुनें बजाता चलता। सन्त जन रणसिंहे बजाते हुए आगे-आगे चलते। आपके श्रद्धालु पीछे-पीछे भजन गाते हुए चलते। उनके पीछे सम्प्रदाय के विद्वान, विरक्त, महन्त हाथियों पर सुनहरी हौदों में चलते। इन शोभा-यात्राओं का विवरण लिखना मुश्किल बात है। जिन्होंने देखी है वहीं जानते हैं। जब श्री गुरुनानकदेव महाराज की जय। श्री गुरु गोविन्द सिंह महाराज को जय, श्री महन्त सुच्चा सिंह महाराज की जयजयकार से आकाश मण्डल गूंज उठता श्रद्धालु जन आपके दिव्य स्वरूप के दर्शन कर झूम उठते। फूलों की वर्षा करते आपकी चरणधूलि में लेट-लेट पड़ते। उस दृश्य का वर्णन करते समय रोमांच हो जाता है।

इन कुम्भ पर्वों पर आये श्रद्धालुओं को नाम-दान देकर आपने बहुत उपकार किये। भटके हुए जीवों को गुरु चरणों में लगाया।

इन कुम्भ पर्वों पर आप की छत्रछाया में आये यात्रियों को जो लंगर, रहने का स्थान, औषधालय, सत्संग आदि की सुविधा दी जाती थी उसके प्रबन्ध हेतु विभिन्न महन्त-सन्त दिन-रात सेवाकार्य करते थे। इनमें जखीरिए महन्त, कोठारी, कारबारी, पुजारी, भंडारी, वैद्य तथा दूसरे सेवादार साधु कार्य करते थे। उनमें से महन्त उत्तम सिंह जी सैक्रेटरी, महन्त गुरुबचन सिंह जी बरनाला, महन्त बलदेव सिंह जी भूत पिंड, महन्त निरञ्जन सिंह जी अमृतसर, महन्त मित्तल प्रकाश सिंह जी, महन्त सरमुख सिंह जी, महन्त त्रिलोक सिंह जी, स्व० बाबा वीर सिंह जी, महन्त लाल सिंह जी आदि विभिन्न महन्तों सन्तों के नाम उल्लेखनीय हैं। विशेष सेवादारों में महन्त रत्न सिंह जी, महन्त निर्मल सिंह जी दरगन, महन्त प्रताप सिंह राणा आदि का नाम उल्लेखनीय है।



सन्तपुरे में उत्तराधिकार को रस्म



आप के प्रमुख सहयोगी

तीन स्थान तीन समागम

पूज्य महाराज जी के अपने तीन निजी स्थान हैं। पहला सन्तपुरा थेह साहिब गाँव धूंदा जिला अमृतसर में श्री गोइंदवाल साहिब से एक मील दूर व्यास नद के तट पर अतीव मनोहर तथा शान्त स्थान है। यहाँ पर व्यास नद की लहरों से बनी प्राकृतिक गुफाओं में बैठकर पूज्य स्वामी भगत सिंह जी महाराज ने चिर काल तक तपस्या की थी। जब स्वामी जी प्रथम बार पधारे थे तो यहाँ घोर जङ्गल था। अब महाराज जी के शुभाशीर्वाद से यहाँ पर सुन्दर हरिमन्दिर, सन्तों के विश्राम के लिए सुन्दर कुटिया तथा लङ्गर की इमारतें बन गई हैं। खेती की सिंचाई के लिए बिजली मोटरें लगी हुई हैं। इस आश्रम की शोभा बढ़ाने में महाराज जी के शिष्य स्वर्गीय महन्त कृपाल सिंह जी का योगदान सदा स्मरणीय रहेगा। अब स्वर्गीय सन्त जी के शिष्य सन्त त्रिलोचन सिंह जी यहाँ के महन्त हैं। यहाँ स्वामी जी की प्राचीन गुफाओं के दर्शन होते हैं।

यहाँ पर पूज्य स्वामी भगत सिंह जी महाराज के ब्रह्मलीन होने का दिन मनाया जाता है। महाराज जी भी उस समय कई दिनों तक यहाँ दर्शन देते रहे हैं। तीन दिन तक नाम वाणी का प्रचार होता है। दूर-दूर से आकर महात्मा यहाँ दर्शन देते हैं। नाम वाणी का अमृत रस पान करने के लिए धूंदा, खख, झंडेर महापुरुष, फतिहाबाद श्री खडूर साहिब, खवासपुर तथा गोइन्दवाल साहिब इत्यादि स्थानों की सङ्गत भारी गिनती में यहाँ आती है। अब गोइन्दवाल साहिब का औद्योगिक नगर के रूप में विकास हो रहा है। डेरे की सीमा तक पक्की सड़कें पहुँच गई हैं।

दूसरा स्थान मोदी नगर (गोविन्दपुरी) में सन्त आश्रम के नाम से है। यह स्थान मोदीनगर से मेरठ जाने वाली मुख्य सड़क पर है। यहाँ सुन्दर हाल तथा सन्तों के निवास के लिए सुन्दर कुटियाँ बनी हुई हैं। यहाँ पर पूज्य स्वामी भगत सिंह जी महाराज का जन्म दिन मनाया जाता है। दूर-दूर की संगत एकत्र होती है तथा तीन दिन तक नाम वाणी का प्रवाह चलता है। यहाँ के महन्त सन्त पुरुषोत्तम सिंह शास्त्री हैं।

तीसरा स्थान सन्तपुरा माडल टाउन दिल्ली में है। यह महाराज जी का मुख्य स्थान है। सन्तपुरा की इमारत विशाल एवं भव्य है। ऊपर नीचे दो विशाल हाल हैं। ऊपर के हाल में श्री गुरुग्रन्थसाहिब जी का प्रकाश होता है। सन्तों तथा यात्रियों के विश्राम के लिए कमरे तथा सुन्दर लंगर बना हुआ है। केन्द्रीय स्थान होने से चारों

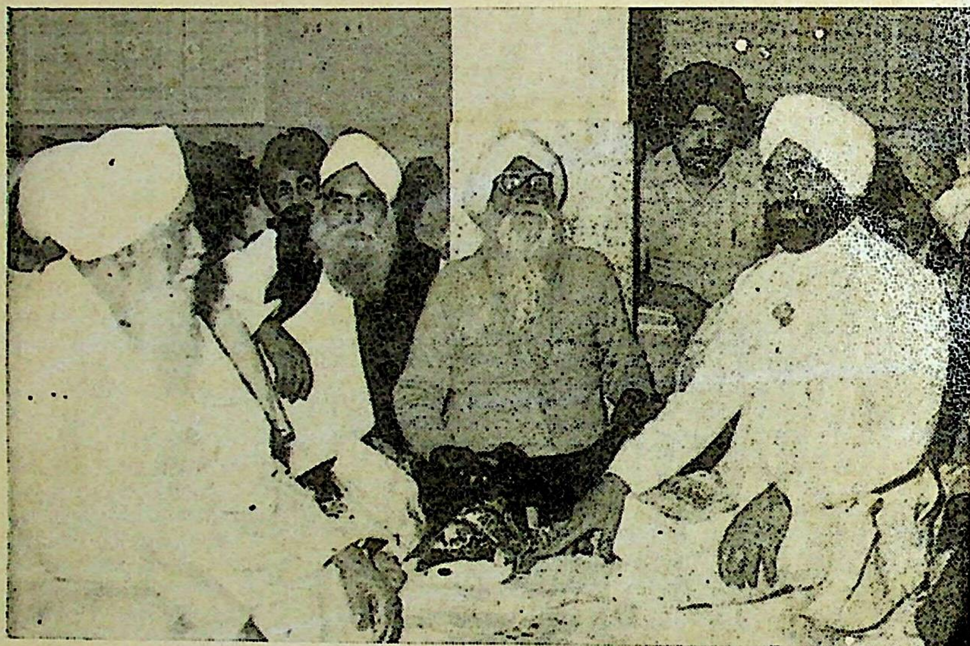
दिशाओं से महापुरुष यहाँ सदैव दर्शन देते रहते हैं। पूज्य महाराज जी के गृहस्थ शिष्य-वर्ग का सम्पर्क भी इसी स्थान से अधिक है।

यहाँ पर पूज्य स्वामी भगत सिंह जी महाराज की याद में नये सम्वत् वाले दिन भारी मेला लगता है। महाराज जी स्वयं भी एक महीना पूर्व ही हरिद्वार से यहां पधार जाते थे। तभी से दूर-दूर की संगत भारी संख्या में आनी शुरू हो जाती थी। अखण्ड पाठों का प्रवाह चल पड़ता। दूर-दूर से महन्त, सन्त, गुणी, ज्ञानी, कथा-वाचक रागी सब पहुँच जाते , अन्तिम तीन दिन तो इतनी संगत रहती कि तिल भर भी जगह नहीं बाकी रहती। यहाँ पर समूह निर्मल साधु, सिक्ख पन्थ के विद्वान् तथा श्री महाराज जी के सिक्ख सेवक बम्बई, अहमदनगर, रामपुर, रायपुर, पूना, कानपुर, टाटानगर, गाजियाबाद, मोदीनगर, मेरठ, अम्बाला, हरिद्वार, पटियाला, अमृतसर तथा भटिंडा आदि स्थानों से पहुँच जाते हैं। तीन दिन तक प्रातः सायं नाम वाणी की गङ्गा बहती है।

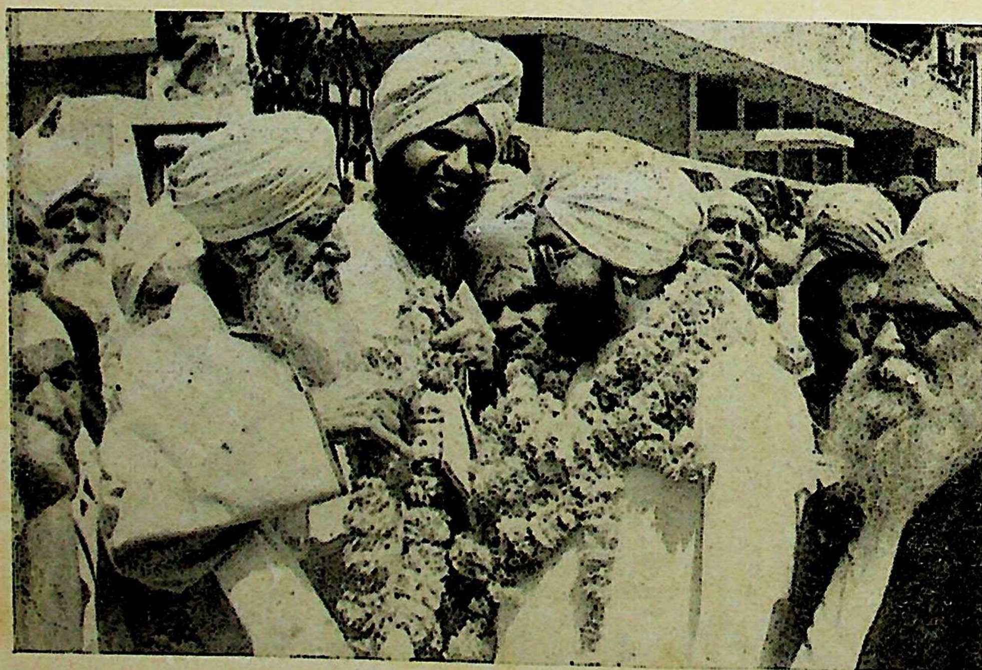
यह स्थान महाराज जी ने सन्तपुरा पिण्डीघेब के नाम पर ही स्थापित किया था। दिल्ली केन्द्र होने से तथा यातायात की सुविधा से ही सन्तपुरा के लिए यह स्थान चुना गया था।

पूज्य गुरुदेव जी महाराज ने अत्यन्त दयालुतापूर्वक यहाँ की सेवा दास को सौंपी है।





ज्ञानी जी सन्तपुरा में



ज्ञानी जी का सन्तपुरा आने पर स्वागत

मेला नया सम्वत्

सन्तपुरा माडल टाउन दिल्ली

सन् १६८२ का नये सम्वत् का मेला महाराज जी की अध्यक्षता में बड़ी धूम-धाम से मनाया गया। हर वर्ष की भाँति इस बार भी निर्मले साधु विद्वान्, सिक्ख-सेवक पंजाब, हरियाणा, महाराष्ट्र, जम्मू-कश्मीर, उत्तर प्रदेश इत्यादि विभिन्न प्रदेशों से भारी संख्या में आए हुए थे। पण्डित बलवीर सिंह जी शास्त्री पटना वाले, महन्त गुरुदीप सिंह जी दर्शनकेशरी काशी, पं० नारायण सिंह जी वेदान्तवागीश, स्वर्गीय जत्थेदार प्रताप सिंह जी ज्ञानी, भूतपूर्व जत्थेदार अकाल तख्त अमृतसर, स्वामी कमल हरि जी इत्यादि विद्वान् प्रातः सायं कथा व्याख्यान से संगतों को नाम वाणी का उपदेश देने लगे। इस समागम के मुख्य दिन सुबह ११ बजे भारत के तत्कालीन गृहमंत्री ज्ञानी जैल सिंह जी भी इस समागम में पधारे। बाहर मुख्य गेट पर लेखक सहित श्री तीर्थराम जी सेठी, बाबू जसवंत सिंह जी फुंकेला, स० प्रहलाद सिंह जी, बाबू विशनदास जी अहमदनगर, बाबू सोहनलाल तथा चुन्नीलाल जी गुलाटी बंबई, सन्त मेहर सिंह जी अकाली बटोत (जम्मू-कश्मीर), महन्त मंजीत सिंह जी अमृतसर इत्यादि ने श्री ज्ञानी जी का स्वागत किया।

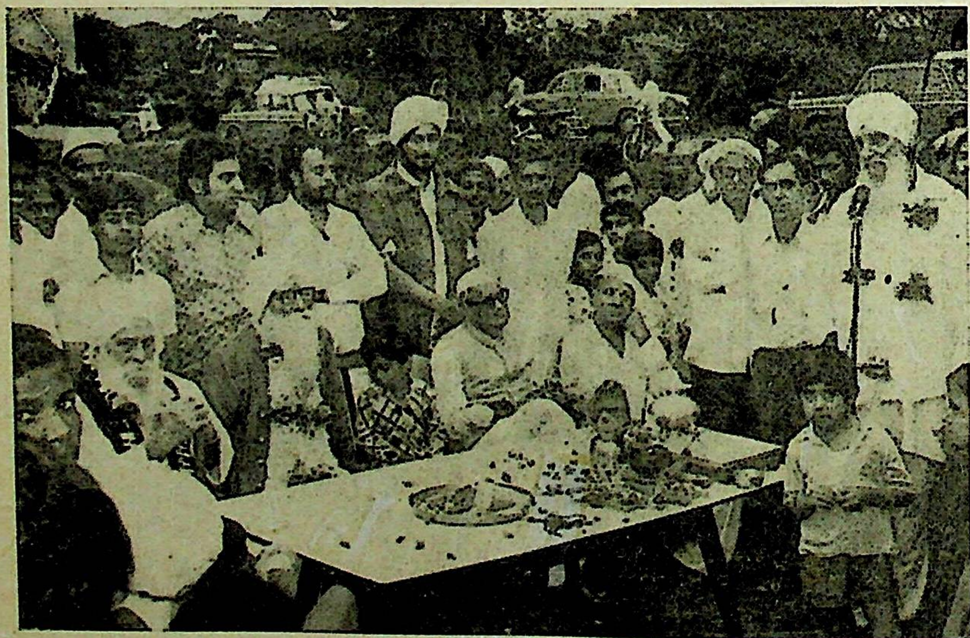
इसके पश्चात् गुरु दरबार में पहुँचने पर संगत की ओर से बोले सो निहाल सत् श्री अकाल की जय जयकार से स्वागत हुआ। ज्ञानी जी ने श्री गुरुग्रन्थसाहिब जी को प्रणाम करने के पश्चात् महाराज जी को नमस्कार कर आशीर्वाद प्राप्त किया तथा हाथ बाँधकर प्रार्थना की कि "चढ़दी कला" करो। महाराज जी ने कहा सति गुरुनानकदेव जी सदा चढ़दी कला करेंगे। तत्पश्चात् लेखक ने सन्तपुरा तथा संगत की ओर से ज्ञानी जी को "सिरोपा" भेंट किया गया। इसके बाद श्री केसरी जी ने ज्ञानी जी को मंच पर से व्याख्यान का समय दिया। ज्ञानी जी ने महाराज जी सहित सन्त मण्डली को धन्यवाद करते हुए कहा कि निर्मल सम्प्रदाय ने सिक्खी के प्रचार-प्रसार में अद्वितीय योगदान किया है। गुरु घर में बहुत से सम्प्रदाय हैं किन्तु निर्मल सम्प्रदाय की अपनी ही एक विशेषता है। यह सम्प्रदाय स्वाभाविक नहीं बनी थी। सतिगुरु दशमेश जी ने पाउँटा साहिब में पांच धीर गंभीर विवेकी गुरु सिक्खों का चुनाव करके ही इस सम्प्रदाय का निर्माण किया तथा भारतीय दर्शन एवं संस्कृति के उच्च अध्ययन के लिए काशी भेजा। दशमेश जी का शुभ आशीर्वाद प्राप्त होने के बाद विद्या के क्षेत्र में यह सम्प्रदाय

सबसे आगे रही है। गुरु घर का प्रचार विद्याध्ययन इसी सम्प्रदाय का कार्य है। पीछे के तोन सौ वर्षों में जो प्रचार इस सम्प्रदाय ने किया है वह कभी भुलाया नहीं जा सकता। आगे ज्ञानी जी ने कहा कि गुरु घर के दार्शनिक एवं ऐतिहासिक ग्रन्थ इसी पन्थ ने लिखे हैं। गुरुवाणी के टोके, कोश, सभो इन्हीं महापुरुषों ने तैयार किये हैं। साहित्य सेवा में पं० तारासिंह जी नरोतम, पं० गुलाब सिंह जी, पं० ज्ञानी ज्ञानसिंह जी, ज्ञानी वदन सिंह जी इत्यादि विद्वान् महापुरुषों का योगदान अत्यन्त स्मरणीय है। जिस प्रकार राजकीय सिक्के होते हैं, उसी प्रकार यह निर्मले साधु गुरु घर के सिक्के हैं। सति गुरुनानकदेव जी ने ही शब्द की सच्ची टकसाल में ढालकर "मारिआ सिक्का जगत विच नानक निर्मल पन्थ चलाया" निर्मल शब्द संस्कृत का है। जिसका अर्थ है शुद्ध मल विक्षेप रहित। इसी ज्ञानवान सम्प्रदाय को सतिगुरु जी ने खालसा कहा। खालसा शब्द का अर्थ भी शुद्ध निर्मल होता है। गुरुदेव जी के "खालसा ताहि निखालस जानै" इस वाक्य से स्पष्ट है।

सम्पूर्ण भारत को इस सम्प्रदाय का ऋणी होना चाहिए क्योंकि जब देश में राजकीय भाषा अरबी-फारसी थी तब राजकीय कार्य उर्दू में ही होता था। उस समय निर्मले साधुओं ने अपने परिश्रम एवं तपस्या से संस्कृत को जीवित रखा यह उपकार कभी भी भुलाया नहीं जा सकता। अन्त में मैं वियोगी जी का धन्यवाद करता हूँ जिन्होंने महाराज श्री महन्त जी सहित साधु-समाज एवं संगत के दर्शन करने का सौभाग्य मुझे प्रदान किया। मैं पूज्य श्री महन्त जी महाराज को प्रणाम करता हूँ जिन्होंने निर्मल सम्प्रदाय ही में नहीं अपितु पूरे देश में नामवाणी का सुमिरन एवं प्रचार किया है। मैं आशा करता हूँ कि निर्मल सम्प्रदाय मुझे सदैव इसी भाँति स्मरण रखकर आशीर्वाद देता रहेगा। इन्हीं शब्दों के साथ ही श्री ज्ञानी जी ने अपना वक्तव्य समाप्त किया। मंच पर से श्री केसरी जी ने सन्त पुरा में आने पर धन्यवाद किया। तत्पश्चात् ज्ञानी जी श्री महाराज को तथा सन्तसमाज को प्रणाम कर वापस चले गये।



आप भक्तों में (अहमदनगर)



आप भक्तों में (अहमदनगर)

नाम वाणी का प्रचार

आपके भक्त प्रेमी जन आपको श्री गुरुनानकदेव जी का ही रूप मानते रहे हैं। आप कब उनके गृह में सन्त मण्डली सहित पहुँचे ? कब संगत उनके गृह में बैठ कर सन्तों के वचनामृत को पान करेगी ? कब वह अपनी इन अभिलाषाओं को पूरा करेंगे ? ऐसा वह सदैव चिन्तन करते रहते।

प्रेमियों के प्रेम से बंधा प्रभु अवतार लेता है। उनकी हर अभिलाषा पूरी करता है। ऐसे ही आप ब्रह्मज्ञानी थे जो प्रेम से बंधे पहुँच जाते थे भक्तों के गृह में। जब आप भक्तों के गृह में जाते थे तो जो उमंग उस परिवार तथा मुहल्ले में होती थी उसका वर्णन लिख अथवा बोलकर करना सर्वथा मुश्किल है। बस कबीर साहिब के इन वचनों से ही कहना पड़ता है।

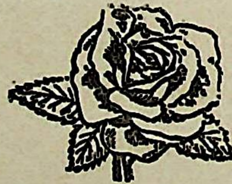
कहु कबीर गूंगै गुड़ खाया
पूछे ते क्या कहीऐ।

आप जब भी कहीं जाते साथ में सेवादार के अतिरिक्त कोई भी विद्वान् साधु अवश्य रहता था। जब संगत इकट्ठी होती तो आप साथ वाले साधुओं से कथा सुनते। कीर्तन मण्डलियाँ कीर्तन-भजन करतीं। कभी-कभी आप उत्तम जिज्ञासुओं को अपने श्री मुख से भी उपदेश देते थे। परन्तु अधिकतर कथा-कीर्तन करवाते एवं श्रवण करते थे। शास्त्र तथा गुरुवाणी एवं इतिहास आदि इतने कण्ठस्थ होते थे कि जब कभी विद्वान् पास बैठे होते तथा आपके श्री मुख से वाणी को श्रवण करते तो आश्चर्य चकित रह जाते कि महाराज जी को तो इतना याद है कि हम इतना कभी नहीं कर सकते।

आप प्रेम से बंधे जहाँ भी जाते वहीं नाम-दान की वर्षा करते थे। जहाँ-जहाँ आपने नाम का प्रचार किया उन सबका अलग-अलग विवरण करना मुश्किल है। परन्तु फिर भी उन स्थानों का नाम देना आवश्यक है। दिल्ली में आप सन्तपुरा में निवास करते थे। जब भी आते प्रेमी भँवरे आ जाते। सब नामरस पीकर मग्न हो जाते, कभी-कभी प्रेमियों के यहाँ भी जाते थे।

मोदीनगर में तथा धूँदे में भी आप नियम से स्वामी भगत सिंह जी महाराज की याद मनाने प्रति वर्ष जाते थे। इसके अतिरिक्त बंबई, पूना, अहमदनगर, हरदोई, मुरादाबाद, गाजियाबाद, लुधियाना, अमृतसर आदि शहरों में भी प्रेमीजनों को दर्शन देने जाते थे।

बहुत से निर्मल डेरों में भी पहुँचकर आपने नाम वाणी का प्रचार किया। जैसे भगता भाई का गाँव में जब महन्त लाल सिंह जी ने अपने शिष्य महन्त श्याम सिंह जी समेत मिलकर अखण्ड पाठों की लड़ी प्रारम्भ की थी तो आपने वहाँ बहुत से संतों के साथ पहुँचकर प्रचार किया था। इसी तरह डेरा पञ्जगराई एवं मालवा, माझा, दोआबा आदि सम्पूर्ण पंजाब तथा भारत के विभिन्न स्थानों पर आपने नाम दान किया। लाखों प्राणियों को दर्शन देकर कृतार्थ किया।



शारीरिक रोग

संस्कृत की कहावत है। "शरीरं व्याधि मन्दिरम्"। इस नश्वर शरीर में बहुत से रोग उत्पन्न होते रहते हैं। आपको यद्यपि आधुनिक बीमारियाँ जैसे मधुमेह, रक्तचाप अथवा हृदय आदि की बीमारी कभी नहीं रही। सीमित तथा व्यवस्थित खान-पान एवं रहन सहन से आप छोटी बीमारियों से भी बचे रहे। परन्तु एक भयंकर बीमारी को नहीं भुलाया जा सकता।

एक बार कनखल में आपको रोग हुआ था। यह बात हिन्दोस्तान विभाजन के बाद की है। आपको ऐसा रोग लगा था कि जो कुछ भी खाते-पीते थे वह उसी समय बाहर निकल जाता था। एक तरह से यह आपकी बचपन की बिमारी का पुनरागमन था। महीनों बीत गए। शरीर सूख गया। वैद्य-हकीम ताकत लगा चुके। परन्तु कुछ सुधार न हुआ। निर्मल सम्प्रदाय तथा भक्तजन चिन्तित थे। जब कोई इलाज शेष न रहा तो श्री गुरुग्रन्थसाहिब जी के १०१ श्री अखण्ड पाठ प्रारम्भ किये गये।

कुछ अखण्ड पाठों के भोग पड़ने के बाद वैद्य की दी हुई दवाई अंदर रुकने लगी। धीरे-धीरे दवाई के असर से शरीर निरोग होता गया। सन्तों-भक्तों में खुशी की लहर दौड़ गई। शारीरिक तन्दुरुस्ती पा लेने की खुशी में प्रेमी जनों ने विराट सन्त-समागम तथा भंडारा का आयोजन किया था।

एक दुर्घटना :—

सन् १९५९ में आपके अनन्य भक्त गुलाटी परिवार ने आप को बंबई में श्रद्धा-पूर्वक आमन्त्रिण किया। स्व० सेठ गुरदास मल, बाबू सोहन लाल जी, बाबू चूनी लाल जी, सेठ मनोहर लाल जी, बाबू मदन लाल जी गुलाटी आपके अनन्य भक्त हैं। भक्त सन्त राम जी गुलाटो तो आपकी चरण धूलि से सन्त रूप हो गए हैं।

उस समय बाबू मदन लाल जी की शादी थी। उसी समय आपके दर्शनों की इच्छा भक्तों को थी। आपके साथ मैं भी था। श्रीमान् महन्त गुरुदीप सिंह जी केसरी तथा महन्त निर्वैर सिंह जी भी आ गये थे।

बड़ी धूम-धाम से शादी सम्पन्न हुई। आप ने युगल-जोड़ी को आशीर्वाद दिया। विवाह के दूसरे दिन बाबू मंगल सैन जो पूने वालों की फैक्ट्री का उद्घाटन था। बाबू मंगल सैन जी की इच्छा थी कि फैक्ट्री का उद्घाटन महाराज जी के कर-कमलों से हो।

पूना जाने हेतु स० अन्तर सिंह जी ने अपनी कार "प्लाई माउथ" भेज दी। बंबई से पूने जाते समय रास्ते में एक अत्यन्त ही खतरनाक चढ़ाई है। इस चढ़ाई को पार करके जब उतर रहे थे तो सामने लकड़ी की गेलियों से लदे ट्रक से हमारी कार सीधे टकरा गई।

बड़े जोर से धमाका हुआ। कार एक दम पिचक सी गई। कार का ड्राइवर उसी स्थान पर दम तोड़ गया। आपकी एक टांग टूट गई। केसरी जी का हाथ टूट गया। मेरी टांग तथा बाँह टूट गए। निर्वैर सिंह जी को मामूली चोटें आई।

हम लोगों को बेहोशी की हालत में ही पास से गुजर रहे सेना के जवान उठा कर पूने अस्पताल में ले गए। जब इस दुर्घटना का समाचार पूने तथा बंबई में प्रेमीयों को मिला तो प्रेमी आ गए। दस दिन तक पूने अस्पताल में इलाज होता रहा। फिर बंबई ले आये। वहाँ आपको बंबई अस्पताल में तथा मेरे को नानावती अस्पताल में रखा गया। आपको जब होश आई तो आपने मेरे बारे में पूछा। प्रेमीयों ने बताया कि वह दूसरे अस्पताल में है। परन्तु गुरुदेव जी को सन्देह रहा। वह मेरे बारे में बार-बार पूछते रहे।

कुछ दिन अस्पताल में रहकर महाराज जी गुलाटी परिवार में आ गए। तब पलस्तर लगा हुआ था। एक दिन अस्पताल से मेरे को डा. निर्वैर सिंह भंवरा के घर ले जाते समय रास्ते में महाराज जी के दर्शन कराये गये। आपके दर्शन करके मेरा मन भर आया।

इस दुःखदाई समाचार को सुनकर निर्मल सम्प्रदाय को बहुत कष्ट हुआ। हरिद्वार, अमृतसर आदि स्थानों से महन्त, सन्त आने लगे। महन्त त्रिलोक सिंह जी, ज्ञानी निरञ्जन सिंह जी, महन्त जोरा सिंह जी, ज्ञानी करनैल सिंह आदि बहुत से महन्त-सन्त सेवा हेतु पहुँच गये थे।

उस समय बाबू मंगल सैन, सभी गुलाटी भाईयों, स० अंतर सिंह जी तथा बंबई एवं पूने की संगत ने तन मन धन से सेवा की।



आपके सन्त शिष्य

आपसे नाम लेकर "आप जपहु अवरा नाम जपावहु" के अनुसार जो आपके साथ हो आप द्वारा दिए हुए कार्य करने में लग गए, वह सन्त शिष्य निम्न प्रकार से हैं।

(१) श्रीमान् सन्त प्रताप सिंह जी राणा
(२) दास, लेखक,
(३) स्वर्गीय महन्त कृपाल सिंह जी धूंदा थेह साहिब
(४) स्वर्गीय सन्त हाकम सिंह जी भल्ला अमृतसर
(५) स्वर्गीय सन्त त्रिलोक हरि जी विरक्त
(६) स्वर्गीय सन्त पं० गुरुबख्श सिंह जी संगत लाहौरी टोला काशी
(७) श्रीमान् महन्त पुरुषोत्तम सिंह जी शास्त्री मोदीनगर
(८) श्रीमान् पं० स्वामी राम पाल सिंह जी "प्रज्ञा चक्षु" दिल्ली
(९) श्रीमान् संत जोगेन्द्र सिंह जी दिल्ली
(१०) श्रीमान् ज्ञानी करनैल सिंह जी अमर
(११) श्रीमान् संत मलकीत सिंह जी दुआवा

आपके पौत्र शिष्य :—

(१) सन्त हरि सिंह जी
(२) सन्त हरिप्रीत सिंह जी
(३) महन्त त्रिलोचन सिंह जी
} शिष्य स्वर्गीय महन्त कृपाल सिंह जी

(४) सन्त ज्ञान सिंह शास्त्री
(५) सन्त ओंकार सिंह शास्त्री
} मेरे शिष्य

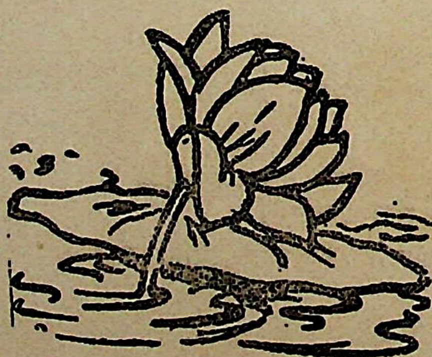
(६) सन्त ओंम हरिजी शिष्य सन्त पुरुषोत्तम सिंह जी

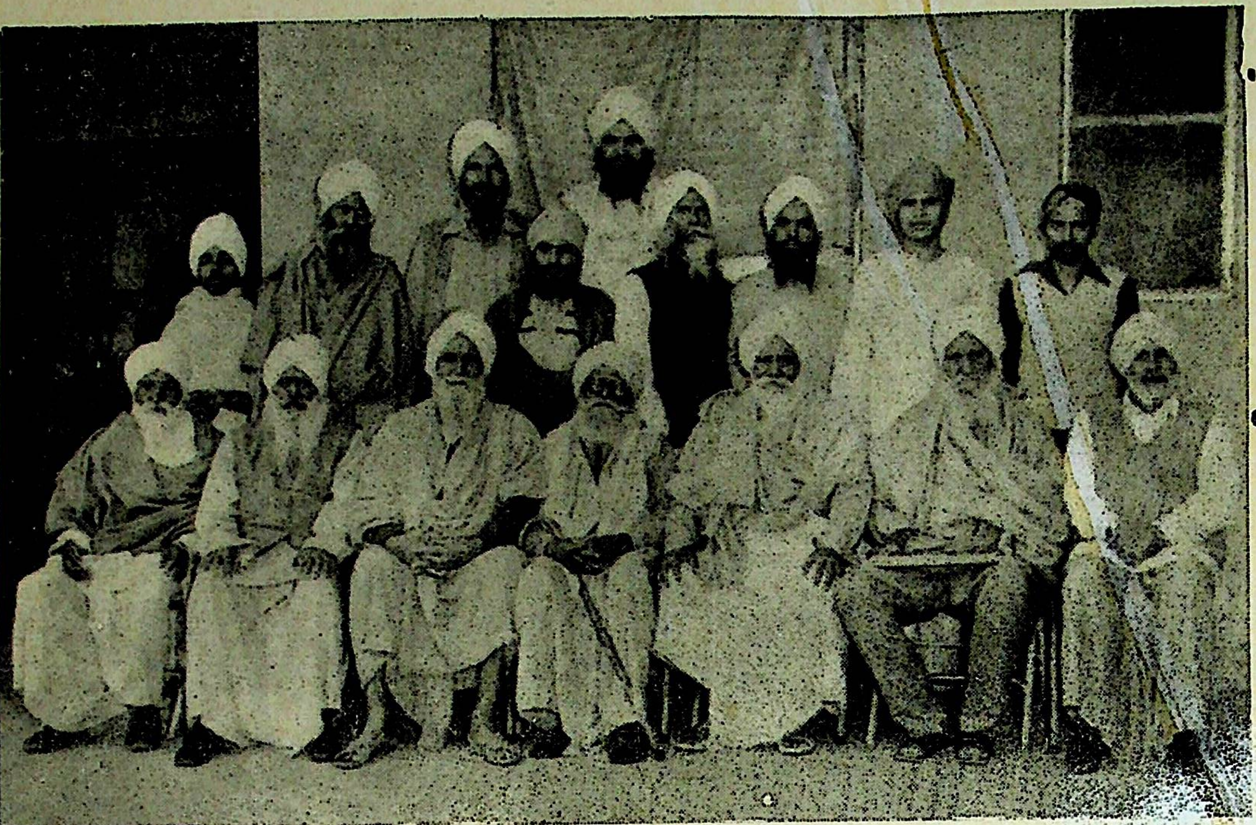
आपके गृहस्थ शिष्य :—

जो प्रेमी आपसे नाम-दान लेकर अपने जीवन को गृहस्थ मार्ग में रहकर ही सफल करने लगे उनमें से कुछ निम्न प्रकार से हैं।

भगत मोहरामल जी, भगत लक्ष्मीचन्द जी, भक्त नारायण दास जी लांबा, भक्त हरि राम जी, स० नानक सिंह जी लांबा, रघुवीर सिंह, हरि भजन सिंह, स० हरनाम सिंह जी लाम्बा जमशेदपुर, माता सतभिराई जी बंबई। बाबू सोहन लाल जी, स्व० बाबू गुरदास मल जी, बाबू चूनी लाल जी, बाबू मनोहर लाल जी, बाबू मदन लाल जी, सन्त-रूप भक्त सन्त राम जी गुलाटी बंबई। स्व० लाला लोड़ींदा मल, स० प्रेम सिंह, तीर्थ राम जी सेठी दिल्ली। स० अमृत सिंह जी सब्बरवाल, स० जसवीर सिंह सब्बरवाल, मुकुन्द लाल जी सेठी, श्री मालक राम सेठी, उनका परिवार श्री इंदर लाल सेठ़ी दिल्ली, श्री श्रीराम सेठी अम्बाला, पुरषोतम सिंह आनन्द अम्बाला, स० जसवंत सिंह फुकेला, बाबू ईश्वर दास जी मेहता, स० गुरुबखश सिंह, स० हरमोहन सिंह, दिल्ली। स० राम सिंह, हरनाम सिंह। स० जोगिंदर सिंह लाम्बा लुधियाना। स्व० हरनाम सिंह बलिदाह, स्व० स० अवतार सिंह दिल्ली। बाबू बिशन दास जी, गुलशन कुमार अहमदनगर। स्व० स० सोहन सिंह सेठी, महिन्द्र सिंह बिन्द्रा, स० त्रिलोक सिंह फुल, हरबन्स सिंह मेहता, हरबंस सिंह भुगरा, बीबो निर्मला तथा इन्द्रा दिल्ली।

सारे भारतवर्ष के विभिन्न शहरों में आपके प्रेमी रहते हैं। सबका नाम देना यहाँ असंभव है।





आप के सहयोगी महन्त सन्त

अखाड़े में आपके सहयोगी महन्त सन्त एवं कर्मचारी

अखाड़े के विविध कार्यों में आपकी आज्ञा को शिरोधार्य करके जो महात्मा सदा आपका सहयोग करते रहे उनमें से कुछ के नाम वर्णनीय हैं।

पं० गुरुदीप सिंह जी केसरी वाराणसी, वर्तमान श्री महन्त साहिब पं० बलबीर सिंह जी शास्त्री, महन्त गुरुबचन सिंह जी बरनाला, सेक्रेटरी महन्त उत्तम सिंह जी, महन्त गुरुबचन सिंह जी अमृतसर, स्व० सन्त केहर सिंह जी खारा ग्राम, सन्त दिलीप सिंह जी अमृतसर, ज्ञानी हजारा सिंह जी, महन्त माहणा सिंह जी, महन्त दर्शन सिंह जी पञ्ज गरुई, महन्त बलदेव सिंह जी, महन्त त्रिलोक सिंह जी, पं० करतार सिंह जी, ज्ञानी निरञ्जन सिंह जी, म० लाल सिंह जी, सन्त निर्मल सिंह दर्गन, सन्त प्रताप सिंह जी राणा, महन्त रत्न सिंह जी, महन्त पृथिपाल सिंह जी, स्व० महन्त दीदार सिंह जी ज्ञानी, महन्त कर्म सिंह जी कर्मवीर, पं० सतपाल सिंह जी, पं० सतदेव सिंह शास्त्री इत्यादि महन्त, सन्त, पण्डित, ज्ञानी सेवा हेतु सदा तत्पर रहते रहे हैं, आपके प्रति श्रद्धा-प्रेम रखते रहे हैं।

इसके अतिरिक्त सन्त जोगेन्द्र सिंह जी, सन्त हरि सिंह जी धूंदा, सन्त प्रताप सिंह जी राणा, सन्त निर्मल सिंह जी दर्गन, सन्त ज्ञान सिंह शास्त्री आदि सन्त आपकी सेवा में सदा तत्पर रहे। सन्त हरिप्रीत सिंह जी की सेवा तो आपके साथ अन्त तक रही।

अपने कर्मचारियों, सेवादारों, मुकामी महन्तों-सन्तों के प्रति आपका दृष्टिकोण सदा हमदर्दी वाला रहा। अखाड़े की विभिन्न शाखाओं में आपकी छत्र-छाया में बहुत से महन्तों सन्तों ने सेवा की है। उनसे आप सदा प्यार भरा बर्ताव करते थे। गुणों को अधिक देखते थे। अगर किसी की कोई निन्दा करता तो आप कह देते—क्या किया जाय जीवों का स्वभाव ही है।

इस तरह से महन्तों-सन्तों ने आपके साथ रहकर अखाड़े की सेवा की तथा आपके प्रेम को प्राप्त किया।



आपके जीवन के कुछ नियम

यद्यपि आपका जीवन एक ब्रह्मज्ञानी का जीवन था, कोई सांसारिक नियम आपको बाँध नहीं सकता था। परन्तु कहा गया है कि ब्रह्मज्ञानी भी दूसरों को उपदेश देने हेतु अपने को भी संसार में लगाये रखता है।

मानव जीवन इतना जटिल है कि उसमें अनेकों ही उतार-चढ़ाव पल-पल पर आते हैं। परन्तु आपका जीवन एक आदर्शमय जीवन था। इतना लंवा अर्थात् पूरे १०० वर्ष का जीवन, वह भी एक रस, बिना उतार-चढ़ाव-बिखराव के पार हो गया क्योंकि आप सच्चे हीरे थे। कबीर साहिब जी ने ठीक ही कहा है —

कबीर जैसी उपजी पेड़ ते,
जउ तैसी निबहै ओड़।
हीरा किसका बापरा,
पुजै न रत्न करोड़॥

आपके जीवन की कुछ बातें हम लोगों को सदा स्मरण करने योग्य हैं।

आप अधिकतर एकान्त में रहते थे। जब भी प्रेमी जन, सन्त-महात्मा आते तो उनको अधिक देर तक पास नहीं बैठाते थे।

जब भी आपके पास बैठकर कोई निन्दा-स्तुति की बातें करता तो आप कोई अन्य प्रसङ्ग चलाकर उसे इस कार्य से विरत कर देते। आप यह दोहा कहा करते थे।

अपने गुण, अवगुण त्यो पर के,
इनमें दो कहे, दो कभी न कहे॥

गुण अवगुण अर्थात् निन्दा स्तुति दोनों को त्याग देवे।

दूसरों से मांगना यह भी आप अच्छा नहीं समझते थे। आप कहा करते थे—

मांगना-मांगन नीका हरि जस गुर ते मांगना।

अथवा

माँगों दान ठाकुर नाम।

सांसारिक पदार्थ माँगने वाले के प्रति कहते थे।

लोक धिकार कहें मंगत जन,
माँगत माँग न पाया॥

आप एक कहावत कहा करते थे कि जिस फकीर के पास दो कौड़ी है, वह दो कौड़ी का नहीं। जिस गृहस्थ के पास दो कौड़ी नहीं वह भी दो कौड़ी का नहीं।

आप सदा धार्मिक ग्रन्थों का पठन-पाठन करते रहते थे। खाली बैठना अयोग्य समझते थे तथा संस्कृत का यह श्लोक पढ़ा करते थे।

काव्य शास्त्र विनोदेन कालो गच्छति धीमताम्।
व्यसनेन दुर्जनानां निद्रया कलहेन वा॥

नियम से सायं सैर करने जाते थे। अंतिम समय जब आप कनखल में रहने लग गये तो नियम से नील-धारा से गंगा जल का आचमन लेने जाते थे।

गंगा स्नान करने के पश्चात् शरीर को सूखे वस्त्र से नहीं पोंछते थे।

नित्य नेम के पक्के थे। सुबह-सायं दोनों समय गुरुवाणी अवश्य सुनते थे। सुबह को सुबह की वाणियाँ तथा संध्या समय संध्या की वाणियों का पाठ अवश्य ही श्रवण करते थे। यह नियम यात्रा, शारीरिक व्याधि आदि में भी नहीं टूटता था।

खान-पान तथा निद्रा पर पूरा नियन्त्रण था। सादा भोजन लेते थे। हल्की नींद लेते थे।

ऐसे आपके अनेकों गुण थे। जिनका उपयोग हम लोग अपने जीवन में करके उसे भी सफल कर सकते हैं।



शरीर नाशवान है

इस संसार में जो भी वस्तु उत्पन्न होती है वह सदा विनष्ट होती है। कहा गया है "जातस्य हि ध्रुवो मृत्युर्ध्रुवं जन्म मृत्यस्य च"। गुरु वाक्य भी है कि "जो उपज्यो सो बिनस है परो आज के काल" अर्थात जो उत्पन्न हुआ है वह काल का ग्रास अवश्य बनेगा। आत्मा तो

न जायते मृयंते वा कदाचित्-
नायं भूत्वा भविता वा न भूयः।
अजो नित्यः शाश्वतोऽयं पुराणो
न हन्यते हन्यमाने शरीरे।

गुरु वाक्य भी है कि—

"मरणहार इहो जीअड़ा नाहीं" अर्थात् आत्मा सदा नित्य है अविनाशी है। इस बात को गुरुवाणी तथा शास्त्रों ने विधिपूर्वक समझाया है।

एक दिन वह घड़ी भी आ गई। जब आपने इस नश्वर शरीर को त्याग अपने स्वरूप में लीन होने की तैयारी कर ली।

२८ दिसम्बर १६८५ को सायंकाल कनखल में यह समाचार बड़े दुःख के साथ बिजली की तरह फैल गया कि हमारे महाराज जी का शरीर पूरा हो गया है। सब जगह शोक छा गया। कनखल का बाजार शोक में बंद कर दिया गया।

दिल्ली, बंबई, अमृतसर, मोदीनगर आदि सब स्थानों पर यह खबर टेलीफोन तथा वायरलैस द्वारा पहुँच गई। सम्पूर्ण निर्मल समाज तथा भक्तों में शोक छा गया। आपके अंतिम दर्शनों के लिए लोगों की भीड़ लग गई। बंबई से महन्त गुरुदीप सिंह जी केसरी, बाबू सोहन लाल जी, बाबू चूनी लाल जी, अहमदनगर से बाबू बिशन दास जी, पटना से महन्त पं० बलवीर सिंह जी शास्त्री, अमृतसर से महन्त मञ्जीत सिंह जी, ज्ञानी निरञ्जन सिंह जी आदि महात्मा पहुँच गये। अम्बाला से ज्ञानी त [illegible]सिंह जी भी आ गये।

यह समय बड़ा ही शोकमय था। आपके प्रेमी जन दूर दूर से आ रहे थे। आपके चरणों पर अश्रुपूरित श्रद्धाञ्जलियाँ भेंट कर रहे थे। सारा कनखल शोक-सागर में डूबा हुआ था। लोग आपके उपकारों को याद कर रहे थे।

२६ ता० को आपका अंतिम संस्कार करना था। एक सुन्दर विमान सजाया गया। अंतिम यात्रा में सम्मिलित होने के लिए हरिद्वार का षड्-दर्शन साधु समाज आया हुआ था। सम्पूर्ण निर्मल भेष तथा आपके भक्त आये हुए थे। कनखल की जनता जगह-जगह चादर-दुशाले तथा फूल मालाएँ लेकर खड़ी थी।

सायं ३ बजे शव-यात्रा प्रारम्भ हुई। आगे हरिद्वार कनखल के सन्त–विद्यार्थी चाँदी की छड़े नीचे किये चल रहे थे। बैंड बाजा शोकमय धुन बजाता चल रहा था। रास्ते के दोनों ओर नर-नारी, बाल-वृद्ध सभी अश्रुपूरित नेत्रों से हाथ जोड़ कर खड़े थे।

लोग चादर-दुशाले चढ़ा रहे थे। फूल तथा रुपयों की वर्षा कर रहे थे। रुँधे कंठ से एक दूसरे को कह रहे थे। भइया! पिता जी चले गए। अब क्या होगा? हमारे दुःख दर्द कौन सुनेगा? किसको हम कहेंगे? हमारे महाराज जी।

बहुत ही हृदय विदारक यह दृश्य था। इस तरह २-३ घंटे में आपकी पावन देह को मात-गंगा जी की गोद में अर्पण करने हेतु सारी जनता नील-धारा गंगा किनारे पहुँच गई। वहाँ महन्त जगत सिंह जी ने अंतिम अरदास की।

ज्यों ही आपके शरीर को चंदन की पेटिका में डाल कर जल समाधि दी गई बाल-वृद्ध, नर-नारी, साधु-महात्मा सभी की आंखों से जल धारा बह उठी। कितनी ही देर तक सभी लोग जड़वत खड़े रहे। बस आँसू बह रहे थे। तब धीरे-धीरे एक दूसरे को सान्त्वना देते हुए जनता वापस कनखल पहुँच गई।

३० दिसम्बर को सुबह निर्मल महामण्डल की शोक सभा हुई। जिसमें १३ जनवरी को आपकी सतारहवीं मनाने का निश्चय हुआ। १०१ श्री अखण्ड पाठों की लड़ी शुरू की गई।

अंत में १३ जनवरी को एक विराट सभा आपकी सतारहवीं पर हुई। सर्व-प्रथम निर्मल भेष की ओर से तथा प्रेमी जनों की ओर से रखे गए श्री अखण्ड पाठों का भोग पड़ा। उपरान्त स्त्री सत्संग मण्डल कनखल की महिलाओं ने गुरु-वाणी कीर्तन किया।

तब खुले पण्डाल में एक विशेष दीवान हुआ। आपको श्रद्धाञ्जलियाँ भेंट करने हेतु बहुत दूर-दूर से महात्मा तथा सद्गृहस्थ पहुँचे हुए थे। महन्त गुरुदीप सिंह जी ने स्टेज सैकेट्री की सेवा संभाली।

सर्व प्रथम महन्त ज्ञानी जगत सिंह जी ने श्रद्धांजलि अर्पित की। उन्होंने कहा वह साधु समाज के कोहनूर थे। श्री गरीब दासी आश्रम के अध्यक्ष डॉ० स्वामी श्याम सुन्दर दास जी ने कहा कि महाराज जी केवल निर्मल पन्थ अथवा षड्-दर्शन साधु समाज के नहीं अपितु भारत के ज्ञान-सूर्य थे।

गुरु मण्डलाश्रम के अध्यक्ष स्वामी राम स्वरूप जी ने कहा वह हमारे हृदय सम्राट थे। मैं ५५ वर्षों से आपके दर्शन करता आ रहा था। वह हीरे थे। मेरी श्रद्धा आपके चरणों में रही। उदासीन पंचायती बड़ा अखाड़ा के महन्त गोपाल दास जी ने कहा कि महाराज जी युग प्रधान थे। उनका नाम लेने से ही पाप निवृत्त हो जाते हैं। श्रीमान् महन्त पं० निहाल सिंह जी ने कहा कि पूज्य श्री महन्त जी महाराज नम्रता के पुञ्ज थे।

इसी तरह नामधारी दरबार की ओर से सन्त-कवि प्रीतम सिंह जी तथा अमर भारती जी ने श्रद्धा-सुमन अर्पित किये। श्री अकाल तख्त साहिब की ओर से ज्ञानी हरबन्स सिंह जी ने श्रद्धाञ्जलि अर्पित की। शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबन्धक कमेटी की ओर से स० गुरुदेव सिंह जी तथा सहारनपुर जिला भारतीय जनता पार्टी की ओर से श्री राममूर्ति जी ने श्रद्धञ्जलि अर्पित की।

श्रद्धा-सुमन अर्पित करने वाले अन्य महानुभाव थे पं० करतार सिंह जी अमृतसर, पं० रामपाल सिंह जी शास्त्री दिल्ली, महन्त सुरजीत सिंह जी खडूर साहिब, पं० ज्ञान सिंह शास्त्री काशी, पं० रघुवीर सिंह जी शास्त्री काशी, महन्त हरि सिंह जी एडीटर निर्मल उद्देश्य अमृतसर, श्रीमान् महन्त स्वामी सुरेन्द्र मुनि जी कनखल, महन्त इकबाल सिंह जी अमृतसर, महन्त दर्शन सिंह जी पञ्जगराई, महन्त तेजा सिंह जी एम० ए० खुड्डा तथा पं० सतदेव सिंह जी शास्त्री।

इस समय षड्-दर्शन साधु समाज, अखाड़े तथा सम्प्रदायों के प्रतिनिधि पहुँचे हुए थे। श्री अकाल तख्त, श्री दरबार साहिब अमृतसर, शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबन्धक कमेटी, मास्टर अकाली दल दिल्ली, भारतीय जनता पार्टी सहारनपुर, सहारनपुर

कांग्रेस पार्टी (इं), सम्प्रदाय भिडरां, नामधारी दरबार, सेवापंथी, निहंग सिंहों के जत्थे, निर्मल महामण्डल, उदासीन पंचायती वड़ा अखाड़ा, पंचायती अखाड़ा उदासीन नया, श्री निरञ्जनी पंचायती अखाड़ा, निर्वाणी अखाड़ा, जूना अखाड़ा, गरीब दासी मण्डल, दादू पन्थी, वैष्णव अखाड़े आदि सभी धार्मिक राजनैतिक सम्प्रदायों के प्रतिनीधि पहुँचे हुए थे।

इसके अतिरिक्त बंबई, अहमदनगर, दिल्ली, पटना, मोदीनगर, मेरठ, सहारनपुर, मुरादाबाद, कानपुर, चंडीगढ़, लुधियाना, अम्बाला, पटियाला आदि स्थानों से महाराज जी के सेवक एकत्रित हुए। अखाड़े की चारों छतों पर तथा बाहर सड़क पर श्रद्धालु जन श्रद्धा-सुमन अर्पित करने हेतु खड़े थे। श्रद्धाञ्जलि कार्यक्रम के उपरान्त आपके निमित्त एक विशाल भंडारे का आयोजन किया गया।



आप निमित्त विभिन्न स्थानों पर अखण्ड पाठ तथा भंडारे

आपकी पावन याद मनाते हुए प्रेमी जनों की ओर से अपने-अपने स्थानों पर आपके निमित्त अखण्ड पाठों का आयोजन किया गया।

आपके गृह नगर भिंडर कलां में सभी गांव वालों तथा आपके बड़े भ्राता स्व० ईश्वर सिंह जी तूर के पुत्र स० काका सिंह, गुलजार सिंह, स्वर्ण सिंह तथा स्व० हरनाम सिंह के पुत्र प्रीतम सिंह, हरचन्द सिंह आदि ने मिलकर पाठ तथा भंडारा किया।

५ फरवरी १९८६ को डेरा सन्तपुरा थेह धूंदा पर अखण्ड पाठ तथा भंडारा हुआ। एक विशाल दीवान में आपको श्रद्धा-सुमन अर्पित किये गये।

इससे पहले १५ जनवरी को सन्त आश्रम गोबिन्दपुरी, मोदीनगर में भंडारा तथा पाठ हुआ। नगर के सर्व प्रेमिओं ने आपके चरणों में श्रद्धाञ्जली अर्पित की।

२९-१-८६ को श्री निर्मल पंचायती अखाड़ा हड़हासराय वाराणसी में आप को असीम कृपा से निर्मित "निर्मल मार्केट" का उद्घाटन वर्तमान श्री महन्त साहिब जी के कर-कमलों से हुआ। इस अवसर पर महन्त गुरुदीप सिंह जी, ज्ञानी जगत सिंह जी, महन्त उत्तम सिंह जी सैक्रेट्री आदि बहुत साधु-सन्त इकट्ठे हुए तथा आपके उपकारों को याद किया।

३०-१-८६ को श्री चेतन मठ विश्वेश्वर गंज में मठ के महन्त इन्द्रजीत सिंह जी ने अखण्ड पाठ का आयोजन किया। वर्तमान श्री महन्त पं० बलवीर सिंह जी शास्त्री की अध्यक्षता में सन्त समागम हुआ। आपको श्रद्धाञ्जलियां अर्पित की गईं।

२८-२-८६ को आपके निज स्थान सन्तपुरा माडल टाउन में आपके प्रेमियों की ओर से अखण्ड पाठ तथा भंडारे का आयोजन हुआ। बाबू ईश्वर दास जी मेहता तथा श्री भारत भूषण जी की तरफ से अखण्ड पाठ हुए। श्री महन्त साहिब पं० बलवीर सिंह जी की अध्यक्षता में सन्त समागम हुआ। महन्त उत्तम सिंह जी, महन्त त्रिलोक सिंह जी, महन्त सरमुख सिंह जी, गुरुबचन सिंह जी बरनाला, महन्त गुरुदीप सिंह जी केसरी, महन्त नाजर सिंह जी, महन्त लाल सिंह जी, ज्ञानी बलवंत सिंह जी आदि महापुरुषों ने श्रद्धा-सुमन अर्पित किये।

इसी तरह निर्मल दुआबा मण्डल की ओर से भंडारा तथा पाठ हुए। आपके प्रेमीओं ने बंबई, अहमदनगर आदि स्थानों पर आपकी याद मनाई।

अब १० अप्रैल नये सम्वत् के दिन आपके निमित्त रखे १०१ श्री अखण्ड पाठों का भोग भी निर्मल पंचायती अखाड़ा निर्मल छावनी हरिद्वार में पड़ रहा है जहाँ विराट सन्त समागम का आयोजन किया जा रहा हैं।

श्रद्धा सुमन आपके भक्तों की ओर से

(आपके भक्तों से हमें बहुत से पत्र प्राप्त हुए हैं। इन पत्रों में आप द्वारा हुए उपकारों का वर्णन है। सम्पूर्ण पत्रों का देना यहाँ संभव नहीं है, तथापि कुछ पत्रों के विशेष अंशों को यहाँ उसी तरह दे रहे हैं। यह पत्र सन् १६८४ में मिले थे।)

जो आशीर्वाद आपने आज तक हमारे खानदान को दिए हैं उनका विवरण मैं कर नहीं सकता। अल्पायु में ही मेरे पिताजी का देहान्त हो गया था। परन्तु आपके रहते मुझे आज तक पिताजी की मृत्यु का अहसास नहीं था। आपके बिछोह से अपने को अकेला तथा बे-सहारा महसूस कर रहा हूँ।

महाराज जी की दी हुई पहचान पर अपने घर का पालन करने वाला शिष्य

—सुनील चौधरी (कनखल)

हमारा यह दृढ़ निश्चय रहा है कि जो कुछ भी महाराज जी अपने श्री मुख से कहते रहे हैं वह सदा पूरा होता रहा है। यह हम बचपन से देखते आए हैं। हमारे पूरे परिवार पर आपकी कृपा दृष्टि सदा रही है। बातें बहुत हैं अगर एक-एक को लिखेंगे तो पूरी पुस्तक ही बन जायगी। बस महाराज जी के बारे में इतना ही कहना है —

"तेरे कवन कवन गुण कह कह गावां
तूँ साहिब गुणी निधाना" ॥

— सोहन लाल गुलाटी (बंबई)

महाराज जी पूर्ण सन्त थे। हमारे ऊपर आपकी बड़ी कृपा रही है। एकबार मेरे को लगा कि महाराज फूल माला मंगवा रहे हैं। जब मैं फूल लेकर पहुँचा तो महाराज जी ने पूछा कि आवाज सुन ली थी। फिर हँस पड़े (यह बात पिंडी घेब की है) इस तरह अनेक ही चमत्कार मैंने आखों से देखें हैं।

भाई राम सरन दास जग्गी (मोती बाग दिल्लो)

एक बार हमारे बड़ों पर कर्ज हो गया। एक दिन बाढ़ के समय जब वह शील नदी पार कर आ रहे थे तो लोगों ने कहा ! महाराज जी मुल्कराज लांबा डूब रहा

है। महाराज जी ने कहा ! डूब नहीं रहा ! रंग लग रहा है। कुछ दिनों बाद कर्ज उतर गया। व्यापार पुनः बढ़िया हो गया। आज जो कुछ भी हम लोग हैं वह सब आपकी ही कृपा का फल है।

— जोगेन्द्र सिंह लाम्बा (लुधियाना)

सन् १९८० में मैं बहुत बीमार पड़ा। छः महीने लगातार पड़ा रहा। एक दिन रात को मैंने महाराज जी की फोटो का ध्यान करके कहा महाराज जी ! मुझ दास को दर्शन देवें। सुबह मेरा लड़का जसवन्त राय जब दूध लेने निकला तो सामने महाराज जी की कार खड़ी थी। जब आपके आने का मुझे पता लगा तो मैं न जाने किस शक्ति से उठ कर बाहर आ गया। आपके दर्शन मात्र से ही मेरी सारी बीमारी दूर हो गई। ऐसे अनेकों उपकार आपने हम लोगों पर किये हैं।

— हकीम ज्ञान चन्द कंकर खेड़ा (मेरठ)

एक बार मेरे मामा जी को गंठिया की बीमारी हो गई। पिंडी घेब के पास ही एक पीर का तकिया था। किसी ने कहा वहाँ जाओ ठीक हो जाओगे। मामा जी घोड़ी पर बैठकर चल दिए। सन्तपुरा के पास घोड़ी ने मामा को गिरा दिया। घोड़ी सन्तपुरा में चली गई। जब मामा अंदर गये तो महाराज जी ने कहा "जाओ घर जाओ। ठीक हो जाओगे"। कुछ दिनों में वह ठीक हो गये। अब भी जब कोई घर में बीमार होता है तो हम महाराज जी का ध्यान करते हैं।

—पुरषोत्तम लाल सहगल (कानपुर)

मेरे ऊपर गुरुदेव जी की सदा कृपा रही है। यहाँ तक कि मेरी चिट्ठी लेकर मेरे पड़ोसी भी महाराज जी की कृपा प्राप्त करते रहे हैं। आपकी कृपा से मुझे अच्छाई का जो रास्ता मिला, वह मेरे जीवन का आधार है।

— अविनाशी राम ओबराए (सहारनपुर)

मेरी बड़ी बहन के घर औलाद आपकी कृपा से ही हुई। दूसरी म० प्र० वाली बहन के लड़के ने बिमारी से छुटकारा आपकी ही कृपा से प्राप्त किया। हमारे खानदान पर आपकी सदा कृपा दृष्टि रही। आप पूर्ण साधु तथा लोकहितकारी महात्मा थे।

— कुलवंत सिंह थापर (अम्बाला)

पिंडी घेब से बसाल जाते समय रास्ते में पानी नहीं था। जो कुए थे वह खारे पानी के थे। भक्तों के आग्रह पर निगड़ियाल तथा मोयाँवाला के मध्य में आपने अपने कर कमलों से कूआँ बनवाया। वह कूआँ वहाँ आज भी है। केवल उसीका जल मीठा है बाकी सब खारे हैं। इस तरह अनेकों लोकहित के कार्य आपने किए।

—श्री गुरुचरण लाल जग्गी, आया राम सबलोक

—(हाथरस जि० अलीगढ़)

एक वार सील नदी के किनारे लंगर शुरू होने वाला था कि पश्चिम दिशा से बड़ा भारी तूफान उठ खड़ा हुआ। प्रेमी जन घबरा गए। आपने कहा सब लोग लंगर खाओ तूफान इधर नहीं आएगा। देखते-देखते तूफान वापस मुड़ गया। सब आपकी महिमा गाने लगे। यह मेरी आँखों देखी बात है।

—फकीर चन्द कुरड़ा (बंबई)

मेरे तीन बच्चे गुजर गए थे। १६६५ में जब मेरा बच्चा मञ्जीत भी मेरे से बिछुड़ गया तो मेरा दिमाग खराब हो गया। रो-रोकर मेरी आँखें खराब हो गईं। तब आपने ही कृपा दृष्टि करके मुझे तन्दुरुस्ती दी। अब मैंने अपने बच्चे तथा बच्ची को आपसे गुरु मन्त्र दिलाया है। आपकी कृपा से मेरा घर पुनः बस गया।

—बीबी निर्मल कौर अलघ (रामेश नगर दिल्ली)

महाराज जी के गुण कहने बहुत कठिन हैं। मेरे पिता (स० तेजा सिंह जी) ने मुझे बताया था कि अपने घर औलाद आपकी कृपा से ही हुई थी। बस जिसने अपना सिदक आप पर रखा उसके भंडारे भर गए।

—हरनाम कौर, हुकम सिंह (मस्जिद मोठ नई दिल्ली)

मेरे पुत्र नहीं होता था। आपकी कृपा से पुत्र रत्न प्राप्त हुआ। बचपन में वह बिमार पड़ गया। तब भी आपके आशीर्वाद से ठीक हुआ। मेरे को एकबार आवाजें आने लगीं। मैं जब भी कहीं जाती कोई मेरा नाम ले-ले मुझे पुकारता। मैं बहुत परेशान हो गई। मैंने महाराज जी के पास प्रार्थना करी। महाराज जी की कृपा दृष्टि से सब ठीक हो गया। आपका दामन जिसने पकड़ा वह दुःख-सागर से छूट गया।

—लाजवन्ती सेठी (खन्ना जि० लुधियाना)

पिंडी घेब में एक सज्जन चूनी लाल सेठी थे। ट्रांसपोर्ट का काम था। विचारों से आर्य-समाजी थे। एकबार उसकी जवान बहन एक पेड़ के पास से गुजरते हुए बेहोश हो गई। कई डाक्टर-वैद्य बुलाये। परन्तु वह ठीक न हुई। तीन दिन तक उसी तरह पड़ी रही। अंत में श्री महाराज जी के पास प्रार्थना करी। आपने जाकर जल का छींटा दिया। वह लड़की तुरन्त उठकर बैठ गई। महराज जी आशीर्वाद देकर वापस डेरे चले गये। तब वह आर्य-समाज छोड़ आपके चरणों में लग गया।

मार्च १९४७ में हमारे गाँव जंबीशाह दिलावर पर मुसलमान गुण्ड़ों ने हमला कर दिया। हम लोग बाल-बच्चे लेकर दौड़ गये शाम को फौज आई तो हम लोग अपने घरों को वापस आये। परन्तु यह देखकर हैरान रह गये कि हमारा पूरा मुहल्ला बिलकुल सेफ था। थोड़ी देर में एक फौजी ने पूछा कि यह घर किसका है ? मैने कहा कि मेरा है। तो उसने कहा अभी-अभी जो महात्मा यहाँ थे वह कहाँ गये ? जब पूरी बात पूछी तो उसने बताया कि हमारे आने से पहले एक महात्मा इस मुहल्ले में खड़े थे। हम लोग आये तो महात्मा जी ने कहा कि अच्छा अब तुम लोग अपनी ड्यूटी संभालो हम सन्तपुरे वापस जा रहे हैं। यह सारी बात सुन कर हमलोग हैरान रह गये। हमारे पूरे मुहल्ले का विश्वास था कि वह महात्मा कोई और नहीं महाराज जी ही थे।

नारायण सिंह पुत्र भक्त जैराम सिंह (पूना)

सन् १९६५ ई० में आपने सन्तपुरा माडल टाउन का शिलान्यास किया था। कुछ ही दिनों की संगत के पश्चात् आपकी सर्वोच्च साधु वृत्ति का मेरे तथा अन्य साथियों पर अत्यधिक प्रभाव पड़ा। आप में ऐसे गुण थे जिनका कहना, सुनना सदा गुणकारी रहेगा। आप स्वयं बड़े पण्डित थे। सैकड़ों को पण्डित बनाया। कई ग्रन्थों को प्रकाशित कर मुफ्त बांटा।

धंनु धंनु धंनु जनु आया।
जिसु प्रसाद सभु जगतु तराया॥
जन आवन का इहै सुआउ।
जन कै संगि चित आवै नाउ॥
आपमु कतु मुकतु करै संसार।
नानक तिस जन कउ सदा नमस्कार॥

स० त्रिलोक सिंह "फूल" माडल टाउन दिल्ली

नोटः—आपके भक्तों की ओर से आपके उपकारों को याद करते हुए बहुत से पत्र आये हुए हैं। परन्तु अधिक न दे सका। एतदर्थ क्षमा प्रार्थी हूँ।

"सम्पादक"

श्रद्धा-सुमन

कमल अमल जैसे उज्जवल दीदार मुख,
माया वाली मैल उन मन से उतारी थी।
सादा ही खाना और सादा ही बाना पहन,
सादगी के साथ सारी उमर गुजारी थी॥
भेष भगवान् सभी पूजते थे चरण,
निर्मल पन्थ के वह मुखी अधिकारी थे।
शांति के पुन्ज़ औ दया के समुद्र थे,
सदा निरमान औ महा उपकारी थे॥
साधुओं की महिमा तो वेद भी न जाने,
तुच्छ मेरी बुद्धि कहो कौन यह विचारी है ?
स्वामी सुच्चा सिंह श्री महन्त जी को,
कहे "परवाना" नित वन्दना हमारी है॥

भाई दयाल सिंह जी "परवाना" पञ्ज गराई कलां।

निर्मल पंचैती बड़ा, अहै अखाड़ा जान।
पण्डित सुच्चा सिंह, रहे श्री महन्त महान॥
संस्कृत व्याकरण के, रहे विद्वान महान।
बड़ पण्डित अर वक्ता भी, दयावान र सुजान॥
सह पाठी मम पिता के रहे मम पर कृपाल।
जैसे विशाल आप थे, तैसे हृदय विशाल॥
जीवत सुब्रह्मलीन थे मुए न, ब्रह्मलीन।
सुजस ऐसे महान के, हरीराम कहि दीन॥
शोक है, परम शोक है, संतन को इहलोक।
हरीराम आनन्द है, संतन मनहि परलोक॥

भाई हरि राम सिंह जी, पाउंटा साहिब

❀ ❀ ❀

श्रद्धाञ्जली

तन मन औ धन से सर्वदा,
परहित में जो आबद्ध थे।
दीन दुखियों निर्बलों की,
सेवा में सदा सन्नद्ध थे॥

तारों की शोभा चन्द्र से,
औ वन की शोभा सिंह से।
सन्तों को शोभा थी सुशोभित,
श्रीमान सुच्चा सिंह से॥

निर्मल था इनका नाम औ,
निर्मल सदा से काम थे।
विद्या के प्रेमी श्रान्त जन,
पाते यहां विश्राम थे॥

विद्या के संग संग हो रही,
थी प्रेम की वर्षा जहां।
आ जाते थे जो लोग भी,
सम्मान होता था वहां॥

माता पिता औ, बन्धु भ्राता,
स्वामी भगत सिंह जी ही थे।
वे गुरु रहे इनके, और ये,
उनके सदा सर्वस्व थे॥

गुरु की कृपा से हो सुशोभित,
बने उच्च कोटि के सन्त थे।
उन्नीस सौ चौंतीस में ही,
बन गये श्री महन्त थे॥

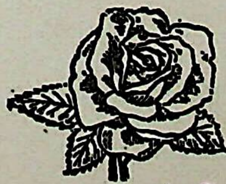
अभिमान तज कर सर्वदा,
परहित में ही आसक्त थे।
गुण से प्रभावित होकर ही,
इनके अनेकों भक्त थे॥

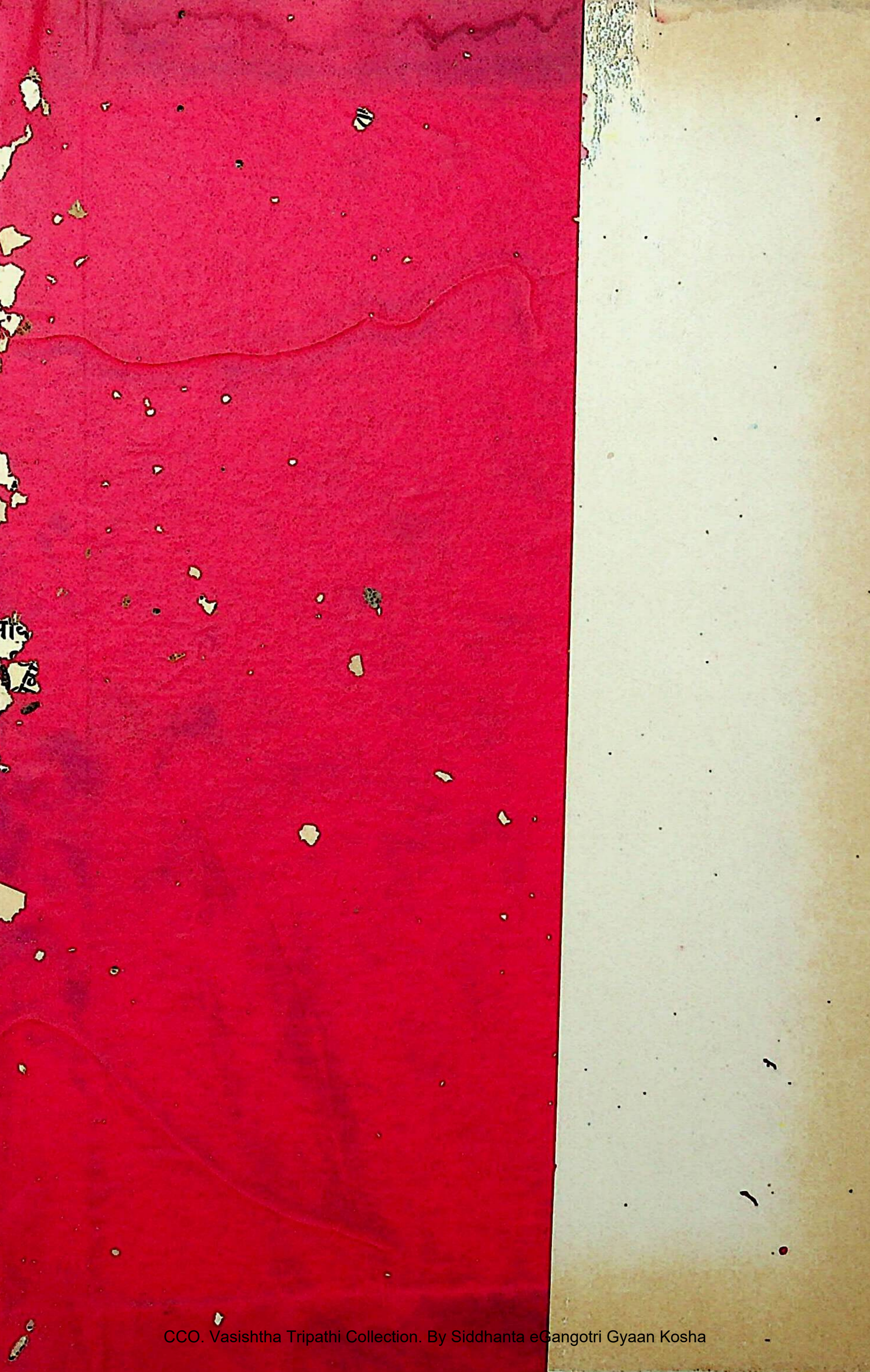
दिल्ली हो, या मोदीनगर,
वाराणसी, कनखल यहाँ।
आश्रम व मठ स्थापित किये,
जब भी गये थे ये जहाँ॥

तज स्वार्थ ब्रह्म की खोज में,
थे हो गये तल्लीन ये।
अट्ठाइस दिसम्बर सन्-
पचासी में हुए ब्रह्मलीन ये॥

"योग्य गुरु के योग्य शिष्य"
थी यह उपाधि मिली इन्हे।
कर रहा है मिश्रनिज,
श्रद्धा सुमन अर्पित इन्हे॥

परमहंस मिश्र
एम० ए० आचार्य
वाराणसी,





मानव जीवन इतना जटिल है कि उसमें अनेक उतार चढ़ाव पल पल पर आते हैं। परन्तु आपका जीवन एक आदर्शमय जीवन था। इतना लंबा अर्थात् पूरे १०० वर्ष का जीवन, वह भी एकरस, विना उतार चढ़ाव-बिखराव के पार हो गया। क्योंकि आप सच्चे हीरे थे। कबीर साहिब जी ने ठीक ही कहा है : –

कबीर जैसी उपजी पेड़ ते
जउ तैसी निबहै ओड़ ।
हीरा किसका बापरा,
पुजै न रत्न करोड़ ॥

मुद्रक : जीवन शिक्षा मुद्रणालय (प्रा०) लिमिटेड, गोलघर, वाराणसी।